नई दिल्ली, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, झारखंड, उड़ीसा, बिहार से प्रसारित

सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number : F.2 (P-2)
Press/2023

परिवहन विशेष

www.newsparivahan.com

वर्ष 03, अंक 304, नई दिल्ली, शनिवार 03 जनवरी 2026, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

जीवन में वही व्यक्ति दुखी है जो ख़ाली है काम मैं व्यस्त रहो और मस्त रहो।

03 प्रतिशोध की ज्वाला: मां सीता के पूर्वजन्म देवी वेदवती और रावण का अंत

06 कृत्रिम रोशनी की चकाचौंध के खतरे

08 दो सप्ताह का डेयरी प्रशिक्षण कोर्स, काउंसलिंग 5 जनवरी से शुरू – डिप्टी डायरेक्टर

प्रदूषण घटा, फिर भी टैक्सी–ट्रैवलर पर पाबंदी क्यों?
ट्रांसपोर्टर्स ने CAQM से की GRAP - 3 हटाने की मांग

लेखक:- संजय कुमार बाठला
परिवहन नीति और सार्वजनिक हित मामलों पर विशेषज्ञ पत्रकार। पिछले एक दशक से सड़क सुरक्षा, स्वच्छ परिवहन और तकनीकी नवाचार से जुड़ी नीतियों पर गहन विश्लेषण और रिपोर्टिंग करते हैं।

स्पष्टीकरण:- GRAP क्या है?

पूरा नाम: Graded Response Action Plan (GRAP)

लागू क्षेत्र: दिल्ली व एनसीआर

क्या है: GRAP एक चरणबद्ध (graded) कार्य योजना है जो वायु गुणवत्ता सूचकांक के स्तर के अनुसार लागू की जाती है। इसे सुप्रीम कोर्ट के निर्देशों पर 2017 में लागू किया गया था।

मुख्य उद्देश्य:

* प्रदूषण बढ़ने पर त्वरित नियंत्रण उपाय लागू करना।
* निर्माण, परिवहन और औद्योगिक गतिविधियों में तात्कालिक सुधार।
* वायु गुणवत्ता सुधरने पर चरणबद्ध रूप से पाबंदियाँ हटाना।

स्टेज-3 (Severe):

जब AQI 401 से ऊपर चला जाए तो Stage-3 लागू होती है, जिसके तहत गैर - बीएस6 डीजल वाहनों, डीजल जेनरेटरों और निर्माण गतिविधियों पर अस्थायी रोक लगाई जाती है।

GRAP-3 और दिल्ली की वायु गुणवत्ता

GRAP-3 के प्रमुख प्रावधान*

* लागू तब होता है जब AQI 'Severe' स्तर (401+) पर पहुँच जाए।
* डीजल LMV (BS-6 से नीचे) वाहनों के संचालन पर रोक।
* निर्माण गतिविधियाँ, मिट्टी ढुलाई, और डीजल जेनरेटर पर प्रतिबंध।
* केवल स्वीकृत ईंधन (PNG/बिजली) का उपयोग अनिवार्य।
* नगर निगम व ट्रैफिक पुलिस को धूल नियंत्रण के लिए विशेष निर्देश।

वर्तमान वायु गुणवत्ता – दिल्ली–एनसीआर*

(जनवरी 2026, सप्ताह 1)

तिथि	औसत AQI	श्रेणी	प्रमुख प्रदूषक
30 दिसंबर	355	Very Poor	PM2.5
31 दिसंबर	290	Poor	PM2.5
1 जनवरी	215	Moderate–Poor	PM2.5
2 जनवरी	198	Moderate	PM2.5

संक्षेप: AQI में लगातार सुधार के बावजूद GRAP-3 अभी लागू है। विशेषज्ञों का मत है कि नीति की समीक्षा वास्तविक समय के AQI के अनुसार होनी चाहिए ताकि व्यवसाय और पर्यावरण का संतुलन बना रहे।

दिल्ली टैक्सी टूरिस्ट ट्रांसपोर्टर्स एसोसिएशन ने आज वायु गुणवत्ता में सुधार के बाद दिल्ली – एनसीआर में लागू ग्रेडेड रिस्पांस एक्शन प्लान (GRAP) स्टेज-3 को तत्काल हटाने की मांग की है।

इस सिलसिले में एसोसिएशन ने वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोग (CAQM) के सदस्य सचिव श्री तरुण कुमार पिथौड़े को पत्र लिखकर कहा है कि दिल्ली में प्रदूषण का स्तर अब काबू में है, इसलिए पर्यटक टैक्सियों और टेम्पो ट्रैवलरों पर लगी रोक अन्यायपूर्ण है।एसोसिएशन का कहना है कि दिल्ली सरकार, परिवहन विभाग और CAQM द्वारा प्रदूषण के नाम पर मुख्य रूप से टूरिस्ट टैक्सी (LMV) और टेम्पो ट्रैवलर मालिकों को निशाना बनाया जा रहा है। उनका आरोप है कि डीजल BS-3 और BS-4 मॉडल की ऑल इंडिया टूरिस्ट परमिट गाड़ियों को जान बूझकर दिल्ली – एनसीआर में रोका जा रहा है और उन पर 20 हजार रुपये तक के चालान किए जा रहे हैं।

संस्था का कहना है कि दिल्ली – एनसीआर में इस समय औसत AQI लगभग 200 के आसपास है, जो पिछले कुछ सप्ताहों की तुलना में काफी कम है। प्रदूषण के असली कारण — पराली जलाना, निर्माण स्थलों की धूल और पटाखों से फैलने वाला धुआँ — अब भी अनियंत्रित हैं। इसके बावजूद टूरिस्ट वाहनों पर पाबंदी जारी रखकर सरकार और संस्थाएं अपनी नाकामी को छिपाने का प्रयास कर रही हैं।

एसोसिएशन ने मांग की है कि BS-3 और BS-4 डीजल टैक्सी–टेम्पो ट्रैवलर को GRAP के दायरे से स्थायी रूप से बाहर रखा जाए, क्योंकि ये गाड़ियाँ ऑल इंडिया टूरिस्ट परमिट के अंतर्गत अक्सर दिल्ली से बाहर राज्यों में संचालित होती हैं।

एसोसिएशन का कहना है कि इन वाहनों की वैध आयु अवधि तक उन्हें चलने की अनुमति मिलनी चाहिए, क्योंकि यह परिवहन क्षेत्र से जुड़े लाखों ड्राइवरों और मालिकों की आजीविका का प्रश्न है।

संगठन ने केंद्र और राज्य सरकार से अपेक्षा की है कि वे वास्तविक प्रदूषण स्रोतों पर अंकुश लगाने के लिए ठोस कदम उठाएँ, पर टूरिस्ट ट्रैवलर्स और छोटे टैक्सी मालिकों की रोज़ी-रोटी पर गाज न गिराएँ।

जय जगन्नाथ जी

जगन्नाथ पुरी धाम दर्शन यात्रा

(दिल्ली से फ्लाइट द्वारा यात्रा)

यात्रा तिथि: 19 जनवरी से 21 जनवरी

यात्रा कार्यक्रम:

DAY 1 – दिल्ली भुवनेश्वर (फ्लाइट द्वारा)
होटल में चेक-इन
खंडगिरी एवं उदयगिरी गुफाएं
एलिफेंटा / लायन / क्वीन केव्स
लिंगराज मंदिर
जैन मंदिर
मुक्तेश्वर मंदिर
बिंदुसागर
रात्रि विश्राम – भुवनेश्वर

DAY 2
नाश्ता
बुद्ध स्तूप
कोणार्क सूर्य मंदिर
चंद्रभागा बीच
रामचंडी मंदिर
पुरी होटल में ठहराव
श्री जगन्नाथ मंदिर दर्शन
विमला शक्तिपीठ
रात्रि विश्राम – पुरी

DAY 3
नाश्ता
चिल्का झील (डॉल्फिन सैंक्चुरी)
दिल्ली वापसी

पैकेज में शामिल:
हवाई यात्रा
होटल ठहराव
केवल नाश्ता

पैकेज मूल्य: 25,000 /- प्रति व्यक्ति

बुकिंग अंतिम तिथि: 15 दिसंबर

संपर्क करें:
9716338127,
9811732094
9212632095

प्रदूषण नियंत्रण के बहाने जनता को सज़ा, वाहन निर्माताओं को इनाम

ओंकारेश्वर पांडेय

साल 2025 विदा हो रहा है लेकिन दिल्ली-एनसीआर समेत कई राज्यों के करोड़ों मध्यमवर्गीय परिवारों के लिए नया साल उम्मीद नहीं बल्कि वित्तीय बोझ, अनिश्चितता और नई चुनौतियाँ लेकर आ रहा है। दिल्ली समेत पूरे भारत में प्रदूषण नियंत्रण को वाजिब और कारगर तरीकों से रोकने में नाकाम सरकार अब जनता की कारों पर ठीकरा फोड़ रही है। दिल्ली सरकार ने प्रदूषण नियंत्रण के नाम पर जो कठोर नीतियां लागू की हैं—चाहे वह बिना वैध PUCC के ईंधन न मिलना हो या बाहरी वाहनों के लिए केवल BS-VI का अनिवार्य प्रवेश—ये नीतियां सतही तौर पर पर्यावरण हितैषी लगती हैं लेकिन वास्तव में यह लाखों आम नागरिकों पर अन्यायपूर्ण दंड और वाहन निर्माता कंपनियों को दिया जा रहा अप्रत्यक्ष इनाम है।

ये नीतियाँ वैज्ञानिक समाधान कम और आम जनता की जेब पर 'सरकारी डकैती' अधिक जान पड़ती हैं। दिल्ली की हवा आज भी 'गंभीर' (Severe) श्रेणी में है लेकिन सरकार का पूरा जोर धूल और पराली की बजाय उन कारों को सड़कों से हटाने पर है, जो मध्यम वर्ग की जीवन भर की जमापूंजी से खरीदी गई हैं।

आँकड़ों का सच और मध्यम वर्ग पर मार

इन नीतियों का सीधा असर दिल्ली-एनसीआर के करोड़ों लोगों पर पड़ रहा है। उत्तर प्रदेश, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान और मध्यप्रदेश समेत अनेक राज्यों के वे मध्यमवर्गीय परिवार, जिन्होंने कर्ज लेकर अपनी पहली कार का सपना संजोया था, उन्हें आज अपराधी की तरह देखा जा रहा है। 5 लाख से अधिक कारें अब तक स्क्रैप की जा चुकी हैं।

12 लाख बाहरी वाहनों का दिल्ली में प्रवेश वर्जित है क्योंकि वे BS-VI मानक के नहीं हैं।

30 लाख वाहन मालिक अगले कुछ महीनों में अपनी वैध - फिट गाड़ियों को खोने के कगार पर हो सकते हैं

एक कार पर औसतन 5 सदस्यों की निर्भरता के गणित से सीधे तौर पर डेढ़ करोड़ लोग पीड़ा में

'No PUCC, No Fuel' जैसे कठोर नियम और ANPR कैमरों के जरिए निगरानी ने सड़कों को जेल बना दिया

तकनीक का 'शॉर्टकट' या नियोजित साजिश?

दशकों पहले एक कार की औसत आयु 20-25 साल होती थी। आज तकनीक के विकास के साथ इसे लंबा होना चाहिए था लेकिन इसे घटाकर 10-15 साल कर दिया गया है। इसे तकनीकी जगत में 'Planned Obsolescence' (नियोजित अप्रचलन) कहा जाता है। यह कंपनियों के लिए मुनाफा बढ़ाने का तरीका है।

सबसे बड़ा विरोधाभास

आम जनता को जिन BS-IV और BS-V कारों को सरकार ने खुद ₹पर्यावरण-अनुकूलर बताकर बेचा था, आज उन्हें ही ₹प्रतिबंधितर क्यों किया जा रहा है? अगर ये कारें प्रदूषण फैला रही हैं,अगर तकनीक खराब थी, तो दोषी निर्माता कंपनियां होनी चाहिए थीं, न कि ग्राहक। तो क्या किसी कंपनी पर 'दोषपूर्ण तकनीक' के लिए कार्रवाई हुई? जवाब है—बिल्कुल नहीं। गलती ग्राहक की बताई जा रही है, कंपनी की नहीं लेकिन जुर्माना और जब्ती केवल ग्राहक की किस्मत में है।

वैश्विक उदाहरण: फिटनेस बनाम उम्र

दुनिया क्या कर रही है? हम कहाँ खड़े हैं? भारत दुनिया का अकेला ऐसा देश है जहाँ केवल

'आयु' (Age) के आधार पर फिटनेस तय होती है। दुनिया भर के विकसित देश निजी संपत्ति और नागरिक अधिकारों का सम्मान करते हैं:

अमेरिका और यूरोप: यहाँ 20-30 साल पुरानी कारें भी सड़कों पर दौड़ती हैं, बशर्ते वे वार्षिक 'एमिशन टेस्ट' पास करें। वहाँ नियम 'फिटनेस' पर है, 'उम्र' पर नहीं।

सिंगापुर और जर्मनी: यहाँ पुरानी कारों को सहेजने के लिए विशेष 'विंटेज' या 'क्लासिक' श्रेणी दी जाती है, न कि उन्हें हाइड्रोलिक प्रेस में डालकर कुचला जाता है।

भारत अकेला ऐसा देश है जहाँ केवल 'जन्म प्रमाण पत्र' के आधार पर फिट गाड़ी को कबाड़ घोषित किया जाता है।

यह अनुच्छेद 14 (समानता का अधिकार) और निजी संपत्ति के अधिकार का खुला उल्लंघन है।

भारत में सरकार 'फिटनेस टेस्ट' को पारदर्शी बनाने में विफल रही, इसलिए उसने सबसे आसान रास्ता चुना—गाड़ियों को ही खत्म कर देना।

झूठे निशाने: असली अपराधी कौन?

दिसंबर 2025 की ताज़ा रिपोर्ट्स और IIT कानपुर के अध्ययन (2015) से लेकर हालिया डेटा तक, सच यह है कि पेट्रोल कारों का प्रदूषण में योगदान मात्र 2% से 5% है। दिल्ली की हवा में असली ज़हर उद्योगों का धुआँ, सड़कों की उड़ती धूल (35-60%) और थर्मल पावर प्लांट की सल्फर डाइऑक्साइड (SO2) है। सरकार ने जुलाई 2025 में 78% कोयला संयंत्रों को प्रदूषण नियंत्रण उपकरण लगाने से छूट दे दी लेकिन एक मध्यमवर्गीय व्यक्ति की 10 साल पुरानी डीजल कार उसे 'मौत का सौदागर' नजर आती है।

स्क्रैपिंग नीति: आपदा में अवसर?

ईंधन स्टेशनों पर तेल देने से मना करना और बिना फिटनेस जाँच के गाड़ियाँ जब्त करना मौलिक अधिकारों का हनन है। सरकार कहती है ₹इलेक्ट्रिक वाहन (EV) अपनाओर लेकिन सब्सिडी कम कर दी गई है। पुरानी कार की कीमत 'कौड़ियों' में है और नई EV की कीमत 'आसमान' पर। क्या सरकार 'पुरानी कार लो, नई ईवी दो' जैसी कोई मुफ्त विनिमय नीति लाएगी? जवाब है—नहीं।

वैज्ञानिक शोध का अकाल और 'आउटडेटेड' नीतियां

सवाल यह है कि ये नीतियां किस आधार पर बनाई जा रही हैं? भारत में आज भी वाहन नीतियां 2015 के आईआईटी कानपुर के पुराने आंकड़ों या पुराने पड़ चुके 'सोर्स अपोर्शन्मेंट' अध्ययनों पर टिकी हैं। विकसित देशों (अमेरिका, जर्मनी, ब्रिटेन) में हर 24 से 36 महीनों में स्वतंत्र वैज्ञानिक संस्थाएं प्रदूषण के स्रोतों का गहन ऑडिट करती हैं। हमारे यहाँ संबंधित मंत्रालय (MoEFCC और MoRTH) केवल 'डेस्क रिसर्च' और कंपनियों के डेटा पर भरोसा करते हैं। नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल (NGT) को भी अक्सर वास्तविक डेटा के अंधेरे में रखा जाता है। सड़क निर्माण की धूल और औद्योगिक उत्सर्जन पर कार्रवाई करने के बजाय कारों को आसान निशाना बनाया जाता है क्योंकि वे सड़क पर दिखती हैं और मध्यम वर्ग चुपचाप चालान भरता है।

बजट का सच और 'मिशन LiFE' की विफलता

सरकारी विज्ञापनों में 'मिशन LiFE' और प्रदूषण नियंत्रण के लिए बड़े-बड़े दावे किए जाते हैं लेकिन हकीकत यह है कि इन विभागों को आवंटित बजट का 25-30% हिस्सा हर साल बिना खर्च किए (Unspent) वापस चला जाता है। पर्यावरण शोध, जागरूकता (Advocacy) और पुरानी कारों को ईवी (EV) में बदलने के लिए कोई 'मुफ्त विनिमय नीति' या ठोस बजट प्रावधान नहीं है। सारा जोर केवल 'दंड' पर है।

जनता पर प्रहार बंद हो

दिल्ली का 50% प्रदूषण धूल भरी सड़कों, अवैध खनन और पराली से आता है, लेकिन वहां सरकारी तंत्र पंगु हो जाता है। मध्यम वर्ग वोट बैंक मात्र नहीं है; वह देश की आर्थिक रीढ़ है। सरकार को चाहिए कि वह उम्र के बजाय 'फिटनेस' आधारित नीति लाए और 'ईवी' अपनाने के लिए पुरानी कारों का पूरा मूल्य सब्सिडी के रूप में दे। जनता को सज़ा देकर नहीं बल्कि वैज्ञानिक समाधानों और ईमानदार रोड इंजीनियरिंग के माध्यम से ही दिल्ली की हवा साफ हो सकती है।

नीतिगत क्रूरता का अंत अनिवार्य

दिल्ली-एनसीआर की जनता अब इसे केवल पर्यावरण नीति नहीं, बल्कि 'वाहन माफिया' और 'सरकार' का गठजोड़ मान रही है। जब तक सड़कों से धूल नहीं हटेगी, जब तक सार्वजनिक परिवहन (मेट्रो और बसों) का जाल हर गली तक नहीं पहुँचेगा, तब तक निजी कारों पर प्रतिबंध केवल 'छलावा' है। मध्यम वर्ग वोट बैंक मात्र नहीं है. वह देश की रीढ़ है। अगर इस रीढ़ को बार-बार लोन और नई कारों के बोझ से तोड़ा गया तो 2026 का सूरज सरकार के लिए राजनीतिक रूप से अंधकारमय हो सकता है।

टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट पंजीकृत

https://tolwa.com/about.html | tolwaindia@gmail.com
tolwadelhi@gmail.com

आज का साइबर सुरक्षा विचार हरियाणा–मध्यप्रदेश साइबर क्राइम कॉरिडोर: एक चिंताजनक गठजोड़

पिंकी कुंडू

1. धोखाधड़ी का पैमाना

* अनुमानित धोखाधड़ी: ₹3,000 करोड़, हाल के वर्षों में उजागर हुई सबसे बड़ी घटनाओं में से एक।

1. • गुरुग्राम (हरियाणा) के अवैध कॉल सेंटरों से संचालन, जो पूरे भारत में साइबर घोटालों के लिए कंट्रोल रूम की तरह काम कर रहे थे।

* अपराधी: शुरुआती बीसवें दशक के स्कूल छोड़ चुके युवक, जिन्होंने डिजिटल उपकरणों का आश्चर्यजनक दक्षता से उपयोग किया।

हरियाणा का नूंह जिला – उभरता हुआ हॉटस्पॉट

* **सामाजिक-आर्थिक कमजोरियाँ:**
  - o उच्च बेरोजगारी
  - o कमजोर पुलिसिंग संरचना
  - o लंबे समय से चली आ रही वंचना
* **परिवर्तन:** हाशिए पर रहे जिले से भारत का सबसे खतरनाक साइबर क्राइम हब, जिसने पैमाने और परिष्कार में जमताड़ा को पीछे छोड़ दिया।
* **संचालन मॉडल:**
  - o गुरुग्राम के कॉल सेंटर कमांड हब के रूप में कार्यरत।
  - o नूंह मानव संसाधन और लॉजिस्टिक सपोर्ट प्रदान करता है।

2. मध्यप्रदेश – सप्लाई बेस

* **म्यूल अकाउंट्स:** विंध्य और महाकौशल क्षेत्रों में 1,000 से अधिक खाते खोले गए।

* **पीड़ित:** गरीब ग्रामीणों को यह विश्वास दिलाया गया कि वे सरकारी योजनाओं के लाभार्थी हैं।

* खाते करोड़ों की मनी लॉन्ड्रिंग के लिए माध्यम बन गए, जिससे मध्यप्रदेश की वित्तीय व्यवस्था खोखली हो रही है।

* अंदरूनी मिलीभगत: कुछ बैंक कर्मचारियों ने खाते खोलने में मदद की, जिससे धोखाधड़ी को वैधता मिली।

मध्यप्रदेश म्यूल अकाउंट्स और वित्तीय चैनल उपलब्ध कराता है।

* **कार्यप्रणाली (Modus Operandi)**
* **डिजिटल साम्राज्य:** अपराधियों ने छोटे फ्लैटों से अत्यधिक संगठित संचालन चलाया, जो कॉर्पोरेट दक्षता की नकल करता था।
* **तकनीक-सक्षम धोखाधड़ी:** फर्जी ऋण ऑफर, निवेश योजनाएँ और प्रतिरूपण (इम्पर्सोनेशन) घोटाले।
* **मनी लॉन्ड्रिंग:** धन को कई परतों वाले म्यूल अकाउंट्स के माध्यम से घुमाया गया ताकि ट्रेल छिप सके।
* **धोखे की रणनीति:** ग्रामीणों को सरकारी लाभ का वादा किया गया; उनके खातों का उपयोग मनी लॉन्ड्रिंग के लिए किया गया।

3. धोखाधड़ी से परे जोखिम - आतंक वित्तपोषण: लेन-देन के पैमाने और गुमनामी से धन के चरमपंथी नेटवर्कों तक पहुँचने की आशंका।

* **राष्ट्रीय सुरक्षा खतरा:** हरियाणा और मध्यप्रदेश को जोड़ने वाला अपराध कॉरिडोर वित्तीय अखंडता और जनविश्वास को कमजोर करता है।
* **सीमापार प्रभाव:** अंतरराष्ट्रीय साइबर धोखाधड़ी सिंडिकेट्स से संभावित संबंध।

4. कानून प्रवर्तन की प्रतिक्रिया

* गुरुग्राम में कॉल सेंटरों पर कार्रवाई।
* म्यूल अकाउंट बनाने में शामिल बैंक कर्मचारियों के खिलाफ कार्रवाई।
* 1,000 से अधिक धोखाधड़ी वाले खातों की पहचान, फ्रीजिंग और जांच के लिए।
* रणनीतिक चुनौती: विकेंद्रीकृत, युवाओं द्वारा संचालित साइबर क्राइम इकोसिस्टम से निपटना, जो तेजी से अनुकूलित होता है।

5. मुख्य निष्कर्ष

* हरियाणा–मध्यप्रदेश कॉरिडोर साइबर अपराध का नया मोर्चा है, जो सामाजिक-आर्थिक कमजोरियों को डिजिटल परिष्कार से जोड़ता है।
* नूंह जिला जमताड़ा का उत्तराधिकारी बनकर उभरा है, लेकिन अधिक पहुँच और जोखिम के साथ।
* मध्यप्रदेश के ग्रामीण गरीब अनजाने में मनी लॉन्ड्रिंग नेटवर्क के प्रतिभागी बन रहे हैं।
* यह गठजोड़ आतंक वित्तपोषण के गंभीर जोखिम पैदा करता है, जिसके लिए त्वरित और समन्वित हस्तक्षेप आवश्यक है।
* **वित्तीय सतर्कता:** KYC मानकों को मजबूत करें, ग्रामीण बैंकिंग प्रथाओं का ऑडिट करें और म्यूल अकाउंट पैटर्न की निगरानी जरुरी है।
* **सामुदायिक जागरूकता:** ग्रामीणों को उन धोखाधड़ी योजनाओं के बारे में शिक्षित करना जो सरकारी लाभ के रूप में छिपी होती हैं।
* **कानून प्रवर्तन सहयोग:** हरियाणा और मध्यप्रदेश पुलिस के बीच संयुक्त टास्क फोर्स, साइबर क्राइम यूनिट्स के साथ जरुरी है।
* **क्षमता निर्माण:** अधिकारियों को डिजिटल फॉरेंसिक और वित्तीय इंटेलिजेंस में प्रशिक्षित करना जरुरी है।
* **सामाजिक-आर्थिक हस्तक्षेप:** नूंह और मध्यप्रदेश के संवेदनशील क्षेत्रों में रोजगार सृजन और डिजिटल साक्षरता कार्यक्रम चलाया जाना जरुरी है।

यह कॉरिडोर केवल धोखाधड़ी का अड्डा नहीं है—यह अपराध, शोषण और संभावित आतंक वित्तपोषण का सिस्टमिक खतरा है। इसे राष्ट्रीय सुरक्षा प्राथमिकता के रूप में लेना अत्यावश्यक है।

स्वास्थ्य विशेष

स्वास्थ्य आपका कोशिश हमारी

काली गाजर गुण

पिंकी कुंडू

काली गाजर आंखों की रोशनी को बेहतर कर डाइजेशन को ठीक करती और मोटापे को दूर करती है। काली गाजर गुणों से भरपूर होने के साथ ही सेहत के लिए बेहद लाभकारी होती है।

सर्दियों आते ही गाजर की बहार आ जाती हैं, कटे टमाटर मूली के साथ इसका संगम स्वास्थ्य के लिए हितकारी है अगर चाहे तो पूरी गाजर में जरा लगाकर उसमें चाट मसाला और नींबू छिड़क कर खाने का मजा ही और है,

काली गाजर गुणों में भी शानदार है।

* अल्जाइमर (भूलने की बीमारी) को दूर रखती है और

*शरीर का पाचन सिस्टम भी फिट बनाए रखती है

* इस काली गाजर की विशेषता यह है इसे शुगर रोगी भी बेहिचक खा सकते हैं।

* काली गाजर आंखों की रोशनी को बेहतर कर डाइजेशन को ठीक करती और मोटापे को दूर करती है।

काली गाजर गुणों से भरपूर होने के साथ ही सेहत के लिए बेहद लाभकारी होती है। काली गाजर आंखों की रोशनी को बेहतर कर डाइजेशन को ठीक करती और मोटापे को दूर करती है।

काली गाजर गुणों से भरपूर होने के साथ ही सेहत के लिए बेहद लाभकारी होती है। इसका स्वाद लाल गजर से अलग हल्का सा कसेलापन भी लिए होता है, इसमें गजब रंग छूटता है काट कर खाएंगे तो यह हाथ पर तो रंग छोड़ ही देगी जुबान को भी काला कर देगी।

काली गाजर को काटकर उसे मर्तबान में पानी भरकर साथ में पीसी राई, नमक, लाल मिर्च, डालकर इसे कुछ दिन धूप में छोड़ दिया जाता है, उसके बाद जो काले रंग की कांजी बनती है। वह स्वाद में तो बेजोड़ है ही साथ ही पेट के लिए लाभकारी भी है, यह कांजी पेट का पाचन सिस्टम सुधार देती है, और कब्ज से राहत दिलाती है,

कई सामान्य बीमारियों से भी बचाव करती है पोषक तत्वों की बात करें तो आधा कप काली गाजर में कैलोरी 40 कुल फैट 0.2 सोडियम 69 मिलीग्राम आयरन 0.30 मिलीग्राम चीनी 4.7 ग्राम कैल्शियम 33 मिलीग्राम कार्बोहाइड्रेट 9.6 ग्राम फाइबर 2.8 ग्राम पोटैशियम 320 मिलीग्राम प्रोटीन 0.9 ग्राम के अलावा कॉपर विटामिन ए विटामिन सी बेटा कैरोटीन प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं

इसलिए यह आंखों के लिए वरदान है, काली गाजर से तैयार एक योग जो आंखों के लिए अमृत तुल्य है।

(1) काली गाजर के स्वरस का घनसत्व

(2)सफेदमिर्च

दोनों की समान मात्रा को पीसकर 500 मिलीग्राम के टैबलेट या कैप्सूल तैयार करके एक से दो सुबह और एक शाम प्रयोग करने से आंखों की समस्त समस्याएं और विकार दूर होते हैं

नोट-(केवल पके हुए मोतियाबिंद में यह औषधि कार्य नहीं करती है) बाकी समस्त नेत्र विकारों में यह अमृत तुल्य है।

लौंग – बार-बार होने वाले सिर दर्द में असरदार घरेलू नुस्खा

आयुर्वेद में भृंगराज को 'केशराज' (बालों का राजा) कहा जाता है, लेकिन इसके लाभ केवल बालों तक सीमित नहीं हैं। यह एक शक्तिशाली 'रसायन' (Rejuvenating herb) है जो शरीर के कई अंगों के लिए वरदान साबित होती है।

भृंगराज के प्रमुख आयुर्वेदिक लाभ निम्नलिखित हैं:

1. बालों के लिए वरदान भृंगराज अपने नाम के अनुरूप बालों की लगभग हर समस्या का समाधान है:

बालों का झड़नाः यह स्कैल्प में रक्त संचार बढ़ाता है और बालों की जड़ों को मजबूत करता है।

समय से पहले सफेदीः इसमें मौजूद प्राकृतिक रंजक (pigments) बालों को काला बनाए रखने में मदद करते हैं।

डैंड्रफ और इन्फेक्शनः इसके एंटी - माइक्रोबियल गुण सिर की खुजली और रूसी को खत्म करते हैं।

2. लिवर (यकृत) के लिए सुरक्षा कवच

आयुर्वेद में भृंगराज को यकृत-उत्तेजक माना गया है।

* यह लिवर को डिटॉक्सिफाई करता है और

*पीलिया (Jaundice),

*फैटी लिवर

* जैसी समस्याओं में भीसुधार करता है।

* यह पित्त के बहाव को संतुलित कर पाचन तंत्र को सुचारू बनाता है।

3. त्वचा संबंधी लाभ भृंगराज में एंटी-इंफ्लेमेटरी और एंटी-बैक्टीरियल गुण होते हैं।

इसके पेस्ट का उपयोग

*घावों को जल्दी भरने,

*त्वचा की एलर्जी और

* सूजन को कम करने के लिए किया जाता है।

* यह त्वचा की रंगत सुधारने में भी सहायक है।

4. मानसिक शांति और बेहतर नींद

भृंगराज का तेल माथे पर लगाने या इसके अर्क का सही मात्रा में सेवन करने से मस्तिष्क शांत होता है।

* यह तनाव (Stress) और चिंता को कम करता है, जिससे अनिद्रा (Insomnia) की समस्या दूर होती है और गहरी नींद आती है।

5. पाचन और भूख में सुधार इसे 'दीपन' और 'पाचन' औषधि माना जाता है।

* यह जठराग्नि (Digestive fire) को तीव्र करता है, जिससे भूख बढ़ती है और कब्ज या गैस जैसी पेट की परेशानियों में राहत मिलती है।

उपयोग करने के तरीके:

* भृंगराज तेलः बालों की मालिश के लिए सबसे प्रभावी।

* चूर्ण/पाउडरः आधा चम्मच शहद या पानी के साथ (डॉक्टर की सलाह पर)।

*ताजा रसः लिवर और पाचन संबंधी समस्याओं के लिए।

सावधानी:

* भृंगराज की तासीर गर्म (Hot potency) होती है, इसलिए बहुत अधिक मात्रा में इसके सेवन से बचें।

* गर्भवती महिलाओं और निम्न रक्तचाप (Low BP) वाले लोगों को इसका उपयोग करने से पहले आयुर्वेदिक विशेषज्ञ से सलाह लेनी चाहिए।

आयुर्वेद में भृंगराज

पिंकी कुंडू

आयुर्वेद में भृंगराज को 'केशराज' (बालों का राजा) कहा जाता है, लेकिन इसके लाभ केवल बालों तक सीमित नहीं हैं। यह एक शक्तिशाली 'रसायन' (Rejuvenating herb) है जो शरीर के कई अंगों के लिए वरदान साबित होती है।

भृंगराज के प्रमुख आयुर्वेदिक लाभ निम्नलिखित हैं:

1. बालों के लिए वरदान भृंगराज अपने नाम के अनुरूप बालों की लगभग हर समस्या का समाधान है:

बालों का झड़नाः यह स्कैल्प में रक्त संचार बढ़ाता है और बालों की जड़ों को मजबूत करता है।

समय से पहले सफेदीः इसमें मौजूद प्राकृतिक रंजक (pigments) बालों को काला बनाए रखने में मदद करते हैं।

डैंड्रफ और इन्फेक्शनः इसके एंटी - माइक्रोबियल गुण सिर की खुजली और रूसी को खत्म करते हैं।

2. लिवर (यकृत) के लिए सुरक्षा कवच

आयुर्वेद में भृंगराज को यकृत-उत्तेजक माना गया है।

* यह लिवर को डिटॉक्सिफाई करता है और

* पीलिया (Jaundice),

* फैटी लिवर

* जैसी समस्याओं में भीसुधार करता है।

* यह पित्त के बहाव को संतुलित कर पाचन तंत्र को सुचारू बनाता है।

3. त्वचा संबंधी लाभ भृंगराज में एंटी-इंफ्लेमेटरी और एंटी-बैक्टीरियल गुण होते हैं।

इसके पेस्ट का उपयोग

* घावों को जल्दी भरने,

* त्वचा की एलर्जी और

* सूजन को कम करने के लिए किया जाता है।

* यह त्वचा की रंगत सुधारने में भी सहायक है।

4. मानसिक शांति और बेहतर नींद भृंगराज का तेल माथे पर लगाने या इसके अर्क का सही मात्रा में सेवन करने से मस्तिष्क शांत होता है।

* यह तनाव (Stress) और चिंता को कम करता है, जिससे अनिद्रा (Insomnia) की समस्या दूर होती है और गहरी नींद आती है।

5. पाचन और भूख में सुधार इसे 'दीपन' और 'पाचन' औषधि माना जाता है।

* यह जठराग्नि (Digestive fire) को तीव्र करता है, जिससे भूख बढ़ती है और कब्ज या गैस जैसी पेट की परेशानियों में राहत मिलती है।

उपयोग करने के तरीके:

* भृंगराज तेलः बालों की मालिश के लिए सबसे प्रभावी।

* चूर्ण/पाउडरः आधा चम्मच शहद या पानी के साथ (डॉक्टर की सलाह पर)।

*ताजा रसः लिवर और पाचन संबंधी समस्याओं के लिए।

सावधानी:

* भृंगराज की तासीर गर्म (Hot potency) होती है, इसलिए बहुत अधिक मात्रा में इसके सेवन से बचें।

* गर्भवती महिलाओं और निम्न रक्तचाप (Low BP) वाले लोगों को इसका उपयोग करने से पहले आयुर्वेदिक विशेषज्ञ से सलाह लेनी चाहिए।

नीम की छाल जब काम पर आती है, तो स्किन की दिक्कतें लाइन में खड़ी हो जाती हैं

पिंकी कुंडू

वैज्ञानिक कारण:

नीम की छाल में antibacterial, antifungal और anti-inflammatory compounds पाए जाते हैं।

ये स्किन पर मौजूद हानिकारक बैक्टीरिया को कंट्रोल करने में मदद कर सकते हैं, जिससे मुंहासे, खुजली और जलन में राहत मिलती है।

अंदरूनी रूप से (काढ़ा आदि) नीम digestion और blood sugar regulation में support दे सकता है, लेकिन असर धीरे-धीरे होता है।

आयुर्वेदिक कारण:

आयुर्वेद में नीम की छाल को रक्तशोधक और त्वचा शुद्धिकरण के लिए श्रेष्ठ माना गया है।

यह पित्त और कफ को संतुलित कर त्वचा और पेट दोनों पर असर दिखाती है।

फायदे:

* मुंहासे और त्वचा की जलन में राहत

*एक्जिमा/खुजली में सहारा

*पेट की गड़बड़ी में मदद

*शुगर संतुलन को support

* खून की अशुद्धि कम करने में सहायक

सावधानी:

*ज्यादा मात्रा से कमजोरी

*गर्भवती महिलाएं न लें

*बीपी लो वालों को सावधानी

* लंबे समय तक रोज़ सेवन ठीक नहीं

*दवा का विकल्प नहीं है

पीपल का पत्ता यूँ ही घर का छोटा डॉक्टर नहीं कहलाता

पिंकी कुंडू

वैज्ञानिक कारणः पीपल के पत्तों में anti-inflammatory और antimicrobial गुण पाए जाते हैं।

* ये पेट की जलन और acidity को शांत करने में मदद कर सकते हैं।

*Respiratory system पर इसका हल्का soothing असर देखा जाता है, जिससे खांसी-बलगम में आराम मिल सकता है।

आयुर्वेदिक कारण:

* आयुर्वेद में पीपल को कफ-पित्त संतुलक माना गया है।

*यह रक्तशोधन में सहायक और मूत्र प्रणाली को साफ रखने वाला माना जाता है।

फायदे:

*पेट की जलन में राहत

*खांसी-बलगम में सहारा

*पेशाब साफ होने में मदद

*खून की अशुद्धि कम हो सकती है

*शरीर को अंदर से संतुलन

सावधानी:

*बहुत ज्यादा सेवन नुकसानदेह

*गर्भावस्था में न लें

*बीपी लो वालों को सावधानी

*रोज़ सेवन की आदत न बनाएं

*डॉक्टर की सलाह बेहतर

अगस्त्य, जिसे अगस्ति या गाछ मूंगा के नाम से भी जाना जाता है के गुण

पिंकी कुंडू

आयुर्वेद में कई ऐसे पेड़-पौधे हैं, जिनका इस्तेमाल बीमारियों के इलाज और शरीर की सेहत के लिए किया जाता है। इनमें से एक है अगस्त्य का पेड़, जिसे अगस्ति या गाछ मूंगा भी कहा जाता है। यह पेड़ तेज़ी से उगता है और प्राचीन समय से ही आयुर्वेद में इसका उपयोग किया जाता रहा है। इसे संजीवनी बूटी के समान शक्तिशाली माना जाता है।

अगस्त्य के पौधे के औषधीय गुण - अगस्त्य के पेड़ के फूल, पत्ते, जड़, छाल और फल पोषक तत्वों से भरपूर होते हैं। इनमें आयरन पाया जाता है, जो खून की कमी दूर करने में मदद करता है। इसमें मौजूद विटामिन शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाते हैं। प्रोटीन शरीर को ताकत और ऊर्जा देता है, जबकि कैल्शियम हड्डियों को मजबूत बनाता है। इसके अलावा कार्बोहाइड्रेट शरीर को आवश्यक ऊर्जा प्रदान करता है। इन्हीं गुणों के कारण अगस्त्य के पेड़ को आयुर्वेद में एक संपूर्ण औषधीय पौधा माना गया है।

अगस्त्य के पौधे के स्वास्थ्य लाभ –

1 सिरदर्द और जुकाम में राहत :- इसके फूलों का अर्क सिरदर्द को कम करता है। जुकाम या नाक बंद होने की समस्या में भी यह लाभकारी है।

2 पेट और पाचन संबंधी फायदे :- फूलों का अर्क गैस, पेट दर्द और सूजन कम करता है। इसके एंटी अल्सर गुण पेट के अल्सर में मददगार साबित होते हैं।

3 त्वचा के लिए लाभकारी :- इसमें मौजूद एंटीऑक्सीडेंट और एंटीबैक्टीरियल गुण स्किन इंफेक्शन और खुजली को दूर करने में मदद करते हैं।

4 डायबिटीज नियंत्रण :- इसका अर्क टाइप-2 डायबिटीज में ब्लड शुगर कंट्रोल करने में सहायक है। काढ़ा पीने से भी ब्लड शुगर संतुलित रहता है।

5 जोड़ों और आर्थराइटिस में मददगार :- फूलों में एंटी इंफ्लेमेटरी और एंटी आर्थराइटिस गुण पाए जाते हैं। आर्थराइटिस के दौरान होने वाली सूजन और दर्द को कम करता है।

इस्तेमाल करने का तरीका –

अगस्त्य के फूलों का अर्क या पाउडर सुबह खाली पेट लेने से सिरदर्द, जुकाम, गैस और पेट दर्द में लाभ मिलता है।

सूखे फूलों का आधा चम्मच पाउडर पानी या दूध के साथ लिया जा सकता है।

पत्तों को उबालकर सब्ज़ी के रूप में या उनका रस निकालकर थोड़ी मात्रा में सेवन किया जाता है, जिससे शरीर की सफाई होती है और ताकत मिलती है।

जड़ और छाल का काढ़ा या चूर्ण पाचन सुधारने, ब्लड शुगर नियंत्रित करने और जोड़ों के दर्द में सहायक होता है।

सेवन हमेशा सीमित मात्रा में करें और किसी भी रोग में उपयोग से पहले आयुर्वेदिक विशेषज्ञ की सलाह जरूर लें।

रात को भीगे हुए अखरोट – दिमाग, नसों और ताकत के लिए आयुर्वेदिक नुस्खा

पिंकी कुंडू

कमजोरी, याददाश्त की कमी, नसों में खिंचाव या जल्दी थकान महसूस होना आजकल आम समस्या है। आयुर्वेद में भीगे हुए अखरोट को दिमाग और नसों के लिए बहुत लाभकारी माना गया है।

अखरोट क्यों है खास? अखरोट में ओमेगा-3 फैटी एसिड, प्रोटीन और मिनरल्स भरपूर मात्रा में होते हैं, जो दिमाग को पोषण देते हैं और शरीर को ऊर्जा प्रदान करते हैं।

मुख्य फायदे

* याददाश्त और एकाग्रता में सुधार

*नसों को मजबूती

* मानसिक तनाव कम करने में मदद

*शरीर की कमजोरी दूर करता है

* नींद की गुणवत्ता बेहतर बनाता है

कैसे सेवन करें?

* रात को 2 अखरोट पानी में भिगो दें

* सुबह खाली पेट छीलकर खाएं

*ऊपर से थोड़ा सा पानी पी लें

कितने दिन करें?

* रोज़ाना नियमित रूप से

* कम से कम 20–30 दिन

सावधानियां

*ज्यादा मात्रा में न खाएं

* एलर्जी होने पर सेवन न करें

* पाचन कमजोर हो तो 1 अखरोट से शुरुआत करें

यह छोटा सा उपाय दिमाग और शरीर दोनों को मजबूत बनाता है। प्राकृतिक पोषण अपनाएं, स्वस्थ रहें।

पिंकी कुंडू

प्रतिशोध की ज्वाला: मां सीता के पूर्वजन्म देवी वेदवती और रावण का अंत

हम सभी जानते हैं कि त्रेतायुग में भगवान श्री राम ने रावण का वध किया था, और इसका मुख्य कारण माता सीता का हरण था। किंतु, वाल्मीकि रामायण और पुराणों के पन्नों में एक ऐसा रहस्य छिपा है जो बताता है कि रावण की मृत्यु की पटकथा तो सीता जी के जन्म से पहले ही लिख दी गई थी।

यह कहानी है माता सीता के पूर्वजन्म की, जब वे 'वेदवती' के नाम से जानी जाती थीं।

सतयुग में, ब्रह्मर्षि कुशध्वज और उनकी पत्नी मालावती के घर एक कन्या का जन्म हुआ। वह साधारण बालिका नहीं थीं; उनका जन्म साक्षात् देवी लक्ष्मी के अंश से हुआ था। जन्म लेते ही उस कन्या के मुख से वेदों का उच्चारण होने लगा, जिसके कारण उनका नाम 'वेदवती' पड़ा।

वेदवती न केवल सौंदर्य की प्रतिमूर्ति थीं, बल्कि बचपन से ही अत्यंत तेजस्वी और धर्मपरायण थीं। उनके मन में केवल एक ही इच्छा थी— साक्षात भगवान श्री हरि विष्णु को पति रूप में प्राप्त करना।

अपने संकल्प को पूरा करने के लिए, वेदवती ने राजमहल के सुखों का त्याग कर दिया। वे पवित्र गंधमादन पर्वत के घने वनों में जाकर भगवान विष्णु की कठोर तपस्या करने लगीं। सर्दी, गर्मी और वर्षा की परवाह किए बिना, वे वर्षों तक ध्यान में लीन रहीं।

उनकी तपस्या की अग्नि इतनी प्रबल थी कि एक दिन आकाशवाणी हुईः

>"हे देवी! तुम्हारी तपस्या व्यर्थ नहीं जाएगी। इस जन्म में नहीं, किंतु अगले जन्म में तुम भगवान विष्णु की अर्धांगिनी बनोगी।"

> भगवान के वचनों पर विश्वास कर वेदवती ने अपनी तपस्या जारी रखी।

एक दिन, लंकापति रावण अपने पुष्पक विमान से गंधमादन पर्वत के ऊपर से गुजर रहा था। अचानक, उसकी दृष्टि वन में तपस्या कर रही एक तेजस्वी नारी पर पड़ी। वेदवती का सौंदर्य इतना अलौकिक था कि रावण अपनी सुध-बुध खो बैठा।

कामांध होकर रावण अपना विमान नीचे उतार लाया। उसने वेदवती के निकट जाकर अपनी शक्ति और वैभव का बखान किया और उनके समक्ष विवाह का प्रस्ताव रखा।

वेदवती ने शांत भाव से उत्तर दियाः

>"हे लंकापति! मेरा जीवन और मेरा हृदय केवल जगत के पालनहार श्री विष्णु को समर्पित है। मैं किसी अन्य पुरुष के बारे में सोच भी नहीं सकती।"

>रावण को 'ना' सुनने की आदत नहीं थी। वेदवती के ठुकराने पर उसका अभिमान चूर-चूर हो गया। काम और क्रोध में अंधे होकर उसने मर्यादा की सारी सीमाएं लांघ दीं। उसने बलपूर्वक वेदवती के केश (बाल) पकड़ लिए और उन्हें अपने साथ ले जाने का प्रयास करने लगा।

यही वह क्षण था जब रावण ने अपने मृत्यु के दस्तावेज पर हस्ताक्षर कर दिए थे।

वेदवती का क्रोध जाग उठा। उन्होंने अपने तपोबल से रावण को वहीं जड़ (स्थिर) कर दिया। रावण हिल भी नहीं पा रहा था। वेदवती ने अपने हाथ के इशारे से अपने वे केश काट दिए जिन्हें रावण ने स्पर्श किया था।

अग्नि की भांति धधकते हुए वेदवती ने रावण को श्राप दियाः

>"पापी रावण! तूने वन में तपस्या करती हुई एक स्त्री का अपमान किया है। तूने मेरे केश पकड़े हैं, इसलिए अब मैं इसी क्षण अपने प्राण त्याग दूंगी। लेकिन याद रखना, मैं फिर जन्म लूंगी। मेरा अगला जन्म केवल और केवल तेरे विनाश के लिए होगा। मैं ही तेरे कुल के नाश का कारण बनूंगी।

> इतना कहकर देवी वेदवती ने अपनी योगशक्ति से अग्नि प्रकट की और रावण के सामने ही अग्नि-समाधि ले ली।

कालांतर में, मिथिला नरेश जनक को धरती जोतते समय एक कन्या प्राप्त हुई, जिसका नाम 'सीता' रखा गया। यही सीता, वेदवती का पुनर्जन्म थीं। जैसा कि वरदान था, उनका विवाह भगवान विष्णु के अवतार श्री राम से हुआ।

धार्मिक ग्रंथों (विशेषकर कूर्म पुराण और ब्रह्मवैवर्त पुराण) में एक बहुत गहरा प्रसंग मिलता है। जब रावण सीता हरण के लिए आया, तो अग्नि देव और श्री राम को यह ज्ञात था।

* असली माता सीता को अग्नि देव ने अपनी सुरक्षा में ले लिया था।

* रावण ने जिसका हरण किया, वह 'माया सीता' (छाया सीता) थीं।

* यह 'माया सीता' वास्तव में वेदवती की आत्मा ही थीं।

चूंकि वेदवती ने रावण को श्राप दिया था कि वह उसके विनाश का कारण बनेंगी, इसलिए रावण के साथ लंका जाने का कष्ट और अशोक वाटिका का दुख वेदवती (माया सीता) ने ही सहा।

अंततः, युद्ध भूमि में राम ने रावण का वध किया और वेदवती का श्राप पूर्ण हुआ। युद्ध के बाद जब 'अग्नि परीक्षा' हुई, तो वह केवल दुनिया को दिखाने के लिए नहीं थी, बल्कि उसके माध्यम से माया सीता (वेदवती) अग्नि में समा गईं और असली माता सीता पुनः बाहर आ गईं।

यह कथा हमें सिखाती है कि स्त्री का अपमान ही सबसे बड़े विनाश का कारण बनता है। रावण महाज्ञानी और शक्तिशाली था, लेकिन एक नारी के अपमान ने उसके सोने की लंका और उसके प्राणों को भस्म कर दिया।

जय सिया राम! जय हनुमान!

मां भगवती का धरती को अकाल और खाद्य संकट से बचाने का देवी रूप मां शाकंभरी

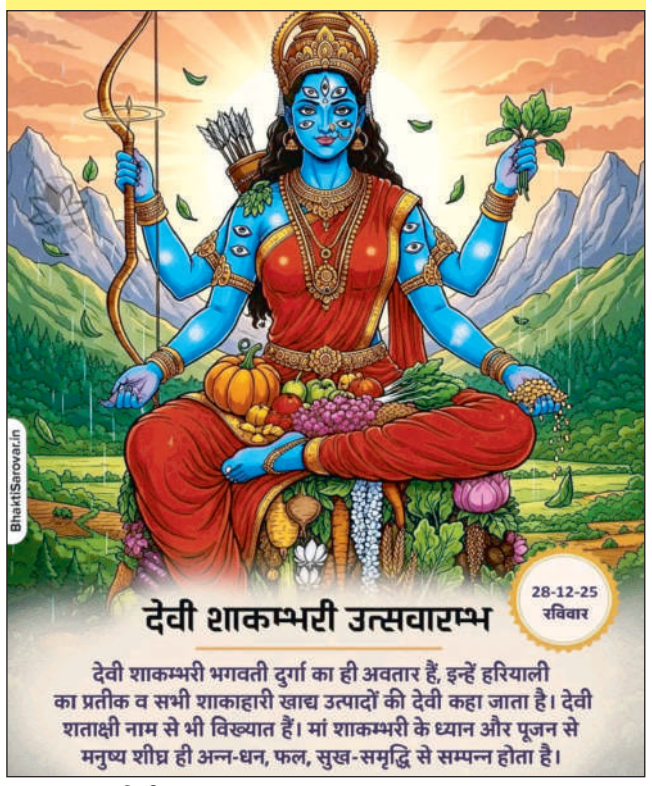

पिंकी कुंडू

शाकैः पालितविष्टपा शतदृशा
शाकोल्लसद्विग्रहा
शङ्कर्यष्टफलप्रदा भगवती
शाकम्भरी पातु माम्

शाकम्भरी देवी माँ आदिशक्ति देवी दुर्गा का एक सौम्य अवतार हैं। माँ शाकम्भरी ही रक्तदंतिका, छिन्नमस्तिका, भीमादेवी, भ्रामरी और श्री कनकदुर्गा है।

पौराणिक कथाओं के अनुसार, मां भगवती धरती को अकाल और खाद्य संकट से बचाने के लिए देवी शाकंभरी के रूप में अवतरित हुईं थीं। देवी शाकम्भरी वनस्पतियों, फलों और सब्जियों की देवी माना जाता है।

शाकंभरी नवरात्र का यह पर्व मुख्य रूप से राजस्थान, कर्नाटक, महाराष्ट्र, तमिलनाडु और उत्तर प्रदेश में मनाया जाता है।

शाकंभरी नवरात्रि पौष माह के शुक्ल पक्ष की अष्टमी तिथि के दिन शुरू होती है और पूर्णिमा के दिन इसका समापन होता है।

इस वर्ष शाकंभरी नवरात्र 28 दिसंबर 2025 से शुरू होगी जिसका समापन 03 जनवरी 2026 को होगा।

मांगलिक दोष ने बढ़ा दिए हैं संकट ?

शिवलिंग पर अभिषेक करते हुए इन 3 स्थानों को करें स्पर्श, दिक्कतें होंगी दूर!

पिंकी कुंडू

महादेव की आराधना उपासना करने से जीवन के संकटों का नाश होता है. कुंडली में बड़े से बड़े दोष का निवारण शिव जी की कृपा से हो सकती है. शिवपुराण के अनुसार, शिवलिंग केवल भोलेनाथ का प्रतीक नहीं है बल्कि पूरा शिवलिंग शिव परिवार को दर्शाता है.

शिवलिंग में भगवान शिव तो हैं ही इसके साथ ही मां पार्वती से लेकर भगवान के पुत्र और पुत्री भी विराजमान है. मां पार्वती, गणेश जी, कार्तिकेय जी और पुत्री अशोक सुंदरी शिवलिंग में विराजते हैं. ऐसे में शिवलिंग के अलग अलग अस्थानों को स्पर्श कर कई समस्याओं से निजात पाया जा सकता है. विशेष शिवलिंग पर अभिषेक करते हुए अगर तीन स्थानों को स्पर्ष करें तो मांगलिक दोष का प्रभाव कम हो सकता है. आइए जानें ये तीन जगहें कौन सी हैं और इनके स्पर्श से क्या लाभ होता है.

शिवलिंग को स्पर्श करने का पहला स्थान कौन सा है?

शिवलिंग को स्पर्श करने का पहला स्थान जलाधारी में आगे की ओर होता जो पैरों की तरह दिखाई पड़ते हैं. यहां पर भोलेनाथ के पुत्र भगवान कार्तिकेय और भगवान गणेश जी विराजमान होते हैं. ऐसे में अभिषेक करने के बाद इस स्थान को आदर पूर्व स्पर्श करें और 5 से 7 बार दबाएं. इसके बाद हाथों को सीधे अपने पेट को लगाएं और 'श्री शिवायः नमस्तुभ्यं' या ॐ नमः शिवायः मंत्र का जाप करते रहें. इस उपाय को करने से संतान सुख की प्राप्ति से लेकर गर्भावस्था में संतान की सुरक्षा का आशीर्वाद प्राप्त होता है. इससे संतान के निरोग होने का आशीर्वाद मिलता है.

शिवलिंग को स्पर्श करने का दूसरा स्थान कौन सा है?

शिवपुराण के अनुसार शिवलिंग को स्पर्श करने का दूसरा स्थान वह है जहां से जल प्रवाहित होता है. शिवलिंग पर अभिषेक करते हुए जलाधारी के बीच के स्थान में शिव जी की पुत्री अशोक सुंदरी का स्थान होता है. इस जगह को बेलपत्र से स्पर्श करें और शिवलिंग पर अर्पित कर दें.

ऐसे करते हुए शिव मंत्र का जाप करें. वैवाहिक जीवन में या विवाह होने में आ रही दिकक्तें दूर होती हैं और मांगलिक दोष दूर होता है.

शिवलिंग को स्पर्श करने का तीसरा स्थान कौन सा है?

शिवलिंग को स्पर्श करने का तीसरा स्थान जलाधारी के पीछे का गोल है जो मां पार्वती का हस्त कमल है. अपने हाथों से इस स्थान को स्पर्श करें तो स्वास्थ्य लाभ का आशीर्वाद मिलता है. जलाभिषेक करते हुए शिव मंत्र का जाप करें और इस स्थान को दबाएं. गंभीर बीमारियों को दूर करने का रास्ता निकल पाएगा.

श्रीशनिमंडल वासिनि लक्ष्मी के मंत्र

पिंकी कुंडू

ध्यान- नीलवर्णां दृढां धीरां कर्मबन्धविनाशिनीम्।
स्थिरां गम्भीरसद्भावां कर्म-धैर्य-मृत्युञ्जयाम्।।
श्र म - शां ति - न्या य - पू र्णां अन्नपूर्णां नमाम्यहम्।

अर्थ-

मैं उस नीलवर्णा, धैर्य और दृढ़ता से युक्त देवी को नमन करता हूँ जो कर्मबन्धनों का नाश करने वाली, स्थिर और गम्भीर सद्भाव से परिपूर्ण हैं; जो कर्म, धैर्य और मृत्यु-भय पर विजय दिलाने वाली हैं तथा श्रम, शान्ति, न्याय और अन्नपूर्णता से जीवन को पूर्ण करने वाली हैं।

ॐ शं राजराजेश्वर्यै शनैश्चरात्मिकायै
कालात्मिकायै नारायण्यै कर्मसाक्षिण्यै शनि- लक्ष्म्यै नमः।
ॐ शं राजराजेश्वर्यै शनैश्चरात्मिकायै नमः।
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं शनिरूपायै नारायणसमन्वितायै।
नीलकमलवासिन्यै श्रमलक्ष्म्यै न्यायलक्ष्म्यै।
कर्मफलप्रदायै शनि-मण्डलवासिन्यै महालक्ष्म्यै नमः।।
शनिमंडलेश्वर्यै लक्ष्मी माला मंत्र
ॐ नमो शनि- मण्डलेश्वर्यै।
कर्मलक्ष्म्यै धैर्यलक्ष्म्यै उद्यमलक्ष्म्यै।
श्रमलक्ष्म्यै न्यायलक्ष्म्यै धर्मलक्ष्म्यै।
शान्तिलक्ष्म्यै सौम्यलक्ष्म्यै।
अन्नपूर्णालक्ष्म्यै आयुलक्ष्म्यै आरोग्यलक्ष्म्यै।
मृत्युञ्जयलक्ष्म्यै स्थैर्यलक्ष्म्यै वैराग्यलक्ष्म्यै च।
दुः ख प्र श म न क र्त्र्यै सर्वकर्मदोषनिवारिण्यै।
स र्व व्या धि वि ना शि न्यै कालधर्मनारायणसमन्वितायै।
शान्तिं कुरु कुरु।
न्यायं कुरु कुरु।
धर्मं कुरु कुरु।
आयुः कुरु कुरु।
सुखं कुरु कुरु।
स्थैर्यं कुरु कुरु मे सदा।
ॐ शं श्रीं ह्रीं क्लीं शनि- लक्ष्म्यै नमः।।
ॐ शं श्रीं ह्रीं क्लीं शनि-नारायण- समन्विते
राजलक्ष्मि मम शिरः पातु।
ॐ शं श्रीं ह्रीं क्लीं कर्मबन्धनच्छेदिनि हृदयं पातु सदा मम।
ॐ शं श्रीं ह्रीं क्लीं न्याय- धर्म-स्थैर्यदायिनि सर्वतो मां पातु पातु स्वाहा।।
ॐ शनि मण्डल वासिन्यै महालक्ष्म्यै नमः

कुल कुमारी पूजन शाक्ततंत्र का गूढ रहस्य

पिंकी कुंडू

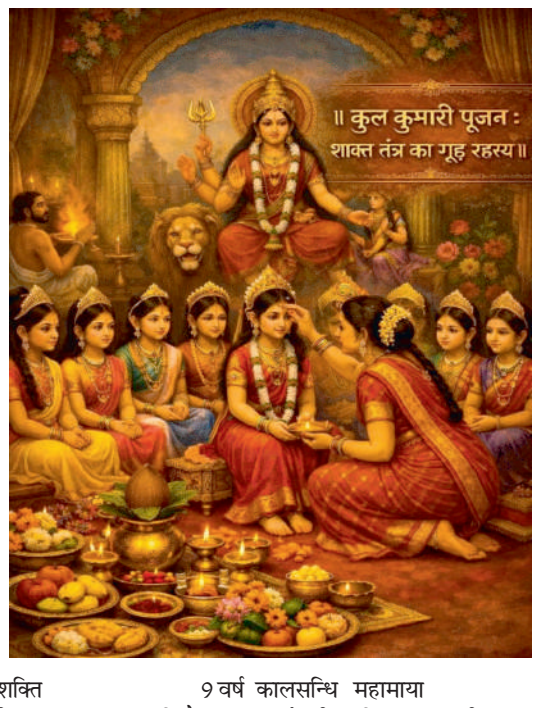

कुल कुमारी पूजन शाक्त – तांत्रिक परम्परा का अत्यन्त गोपनीय और गूढ़ अंग है। यह केवल "बालिका पूजन" नहीं, बल्कि जीवित शक्ति-तत्त्व (Living Shakti Principle) की साक्षात उपासना है।

1. कुमारी कौन है? (शास्त्रीय दृष्टि) -- शास्त्रों में कुमारी उस कन्या को कहा गया है — जो रजोदर्शन से पूर्व हो जिसमें विकार, वासना और अहं का प्रवेश न हुआ हो। जो अविभाजित शक्ति (अखंड शुद्ध चेतना) की प्रतीक हो।

* देवीभागवत और तंत्रचूड़ामणि में कहा गया है — "या कन्या सा देवी साक्षात्शक्तिरूपा न संशयः।" अर्थात् कन्या स्वयं देवी का प्रत्यक्ष रूप है, प्रतीक नहीं।

2. कुल शब्द का रहस्य -- यहाँ कुल का अर्थ केवल वंश नहीं है अपितु कुल का तात्पर्य शक्ति-परम्परा है। तांत्रिक वंश है। मूल प्रकृति अर्थात् मूलाधार से सहस्रार तक की शक्ति-श्रृंखला है। इसलिए कुल कुमारी पूजन ही अपनी कुल-शक्ति (Root Shakti) को जीवित रूप में प्रणाम है। समर्पण है।

3. कुल कुमारी पूजन का आध्यात्मिक उद्देश्य --

* कुमारी साक्षात शक्ति का अवतरण है। मूर्ति में शक्ति आह्वान से आती है, लेकिन कुमारी में शक्ति पहले से प्रतिष्ठित होती है। इसलिए शास्त्र कहते हैं — "कुमारीपूजनात्शक्तिः शीघ्रं सन्निधिं गच्छति।"

* कुमारी पूजन को गुरु-कृपा का द्वार तंत्र में माना गया है — गुरु की कृपा, देवी की कृपा और कुमारी की तृप्ति। ये तीनों एक ही सूत्र से जुड़ी हैं। यदि कुमारी अप्रसन्न तो साधना निष्फल। यदि कुमारी प्रसन्न तो साधना सिद्ध समझो।

* कर्म-ग्रन्थि का क्षय-- कुल कुमारी पूजन से— वंशानुगत दोष, पितृ-ऋण, स्त्री-अपमानजन्य दोषयुक्त कर्मों का क्षय होता है। कुलार्णव तंत्र कहता है— "कुमारीतोषणेनैव कुलदोषः प्रणश्यति।"

4. नौ कुमारी और शक्तितत्त्व शास्त्रों में आयु के अनुसार कुमारी को विभिन्न देवियों से जोड़ा गया है —

आयु	नाम	शक्ति-तत्त्व
1 वर्ष	सन्ध्या	आद्य शक्ति
2 वर्ष	सरस्वती	वाणी
3 वर्ष	त्रिधामूर्ति	क्रिया-शक्ति
4 वर्ष	कालिका	संहार
5 वर्ष	सुभगा	सौभाग्य
6 वर्ष	उमा	तप
7 वर्ष	मालिनी	आकर्षण
8 वर्ष	कुब्जिका	कुण्डलिनी
9 वर्ष	कालसन्धि	महामाया

विशेषतः 8 वर्ष की कुब्जिका कुमारी कुण्डलिनी शक्ति की जीवित अभिव्यक्ति मानी गई है।

5. तंत्र में कुमारी पूजन क्यों अनिवार्य? -- क्योंकि तंत्र देह-विरोधी नहीं, तंत्र स्त्री-विरोधी नहीं अपितु तंत्र जीवित चेतना का विज्ञान है। जहाँ स्त्री का सम्मान नहीं, वहाँ तंत्र सिद्ध नहीं होता है। इसी कारण श्रीविद्या में कहा गया— "स्त्री-निन्दा महापातकः।"

6. कुल कुमारी पूजन का फल (शास्त्रीय) -- साधना में शीघ्र प्रगति होती है। मंत्र-जागरण होता है। गुरु-तत्त्व की कृपा बढ़ती है। वंश में शान्ति बनी रहती है। पुत्र-पुत्री दोष का नाश होता है। शक्ति-मार्ग में स्थिरता बढ़ती है। कुल संबंधी दोष का नाश होता है। स्त्री-दोष शमन होता है। काम-विकार का शोधन होता है। कुण्डलिनी की सुरक्षित जागृति होती है। गुरु-कृपा का प्रवेश और तंत्र-मार्ग में स्थिरता बढ़ती है।

7. गूढ़ रहस्य (बहुत महत्त्वपूर्ण) -- कुमारी पूजन वास्तव में बाह्य नहीं, आन्तरिक साधना भी है। कुमारी पूजन तुम्हारी निर्मल चेतना की जागृति है। तुम्हारे अहं-रहित चित्त की चैतन्यता है। तुम्हारी अविकृत शक्ति का अंतर्निहित जागरण है। जब साधक अपने भीतर की "कुमारी-चेतना" का सम्मान करता है, तभी सच्ची सिद्धि घटित होती है।

निष्कर्षतः-- कुल कुमारी पूजन

कोई लोकाचार नहीं, बल्कि शक्ति-विज्ञान की मूल कुंजी है। जहाँ कुमारी पूजित है, वहीं देवी सजीव हैं। कामाख्या कुल कुमारी पूजन कोई सामाजिक कर्म नहीं, यह सृष्टि-तंत्र का प्रवेश-द्वार है। जहाँ कुमारी पूजित है, वहां कोई कर्म बन्धन नहीं बल्कि वही ब्रह्म का मार्ग बन जाता है।

राम रक्षा स्तोत्र पाठ से पाएं श्रीराम की कृपा, हर विपत्ति से सुरक्षा

रामरक्षास्तोत्र का पाठ करने से व्यक्ति को हर मुश्किल में सफलता मिलती है। यह एक ऐसा कवच है, जिसका रोजाना पाठ करने से अत्यधिक लाभ मिलने के साथ ही जल्द ही फल भी मिलता है।

रामरक्षास्तोत्र का पाठ करने से जातक भयरहित हो जाता है।

हिंदू धर्म में रामरक्षास्तोत्र का विशेष महत्व माना जाता है। वहीं इसका पाठ करके भगवान श्रीराम की कृपा प्राप्त की जा सकती है। वैसे तो इसका पाठ कभी भी शुरू किया जा सकता है। रामरक्षास्त्रोत का पाठ करने से व्यक्ति को हर मुश्किल में सफलता मिलती है। यह एक ऐसा कवच है, जिसका रोजाना पाठ करने से अत्यधिक लाभ मिलने के साथ ही जल्द ही फल भी मिलता है। रामरक्षास्त्रोत का पाठ करने से जातक भयरहित हो जाता है। वहीं रोजाना इसका पाठ करने से दुख-कष्ट दूर होते हैं।

जो भी जातक रोजाना रामरक्षास्त्रोत का पाठ करते हैं, वह सुखी, विजयी, दीर्घायु, संततिवान और विनयसंपन्न होते हैं। इसके शुभ प्रभाव से जातक के चारों ओर एक सुरक्षा कवच बनता है, जिससे व्यक्ति की हर तरह की विपत्ति से रक्षा होती है। माना जाता है कि रामरक्षास्त्रोत का पाठ करने से भगवान श्रीराम के साथ हनुमानजी भी प्रसन्न होते हैं। वहीं इस पाठ को हर दिन करना होता है। ऐसे में आज इस आर्टिकल के जरिए हम आपको रामरक्षास्त्रोत पाठ के बारे में बताने जा रहे हैं।

अस्य श्रीरामरक्षास्तोत्रमन्त्रस्य।
बुधकौशिक ऋषिः।
श्रीसीतारामचंद्रोदेवता।
अनुष्टुप्छन्दः।सीता शक्तिः।
श्रीमद्हनुमान् कीलकम्।
श्रीसीतारामचंद्रप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः॥
॥अथ ध्यानम्॥
ध्यायेदाजानुबाहुं धृतशरधनुषं बद्धपद्मासनस्थं।
पीतं वासोवसानं नवकमलदलस्पर्धिनेत्रं प्रसन्नम्॥
वामाङ्कारूढसीता मुखकमलमिलल्लोचनं नीरदाभं।
नानालङ्कारदीप्तं दधतमुरुजटामण्डनं रामचंद्रम्॥
जिह्वां विद्यानिधिः पातु कण्ठं भरतवंदितः।
स्कन्धौ दिव्यायुधः पातु भुजौ भग्नेशकार्मुकः॥
करौ सीतापतिः पातु हृदयं जामदग्न्यजित्।
मध्यं पातु खरध्वंसी नाभिं जाम्बवदाश्रयः॥
सुग्रीवेशः कटी पातु सक्थिनी हनुमत्प्रभुः।
ऊरू रघूतमः पातु रक्षःकुलविनाशकृत्॥
जानुनी सेतुकृत्पातु जङ्घे दशमुखान्तकः।
पादौ बिभीषणश्रीदः पातु रामोऽखिलं वपुः॥
एतां रामबलोपेतां रक्षां यः सुकृती पठेत्।
स चिरायुः सुखी पुत्री विजयी विनयी भवेत्॥
पातालभूतलव्योम चारिणश्छद्मचारिणः।
न द्रष्टुमपि शक्तास्ते रक्षितं रामनामभिः॥
रामेति रामभद्रेति रामचंद्रेति वा स्मरन्।
नरो न लिप्यते पापै भुक्तिं मुक्तिं च विन्दति॥
जगज्जैत्रैकमन्त्रेण रामनाम्नाभिरक्षितम्।
यः कण्ठे धारयेत्तस्य करस्थाः सर्वसिद्धयः॥
वज्रपंजरनामेदं यो रामकवचं स्मरेत्।
अव्याहताज्ञः सर्वत्र लभते जयमंगलम्॥
आदिष्टवान्यथा स्वप्ने रामरक्षामिमां हरः।
तथा लिखितवान्प्रातः प्रबुद्धो बुधकौशिकः॥
आरामः कल्पवृक्षाणां विरामः सकलापदाम्।
अभिरामस्त्रिलोकानां रामः श्रीमान् स नः प्रभुः॥
तरुणौ रूपसंपन्नौ सुकुमारौ महाबलौ।
पुण्डरीकविशालाक्षौ चीरकृष्णाजिनाम्बरौ॥
फलमूलाशिनौ दान्तौ तापसौ ब्रह्मचारिणौ।
पुत्रौ दशरथस्यैतौ भ्रातरौ रामलक्ष्मणौ॥
शरण्यौ सर्वसत्वानां श्रेष्ठौ सर्वधनुष्मताम्।
रक्षः कुलनिहन्तारौ त्रायेतां नो रघूत्तमौ॥
आत्तसज्जधनुषा विषुस्पृशा वक्षया शुगनिषङ्ग सङ्गिनौ।
रक्षणाय मम रामलक्ष्मणा वग्रतः पथि सदैव गच्छताम्॥
संनद्धः कवची खड्गी चापबाणधरो युवा।
गच्छन्मनोरथोऽस्माकं रामः पातु सलक्ष्मणः॥
रामो दाशरथिः शूरो लक्ष्मणानुचरो बली।
काकुत्स्थः पुरुषः पूर्णः कौसल्येयो रघुत्तमः॥
वेदान्तवेद्यो यज्ञेशः पुराणपुरुषोत्तमः।
जानकीवल्लभः श्रीमानप्रमेय पराक्रमः॥
इत्येतानि जपेन्नित्यं मद्भक्तः श्रद्धयान्वितः।
अश्वमेधाधिकं पुण्यं संप्राप्नोति न संशयः॥
रामं दूर्वादलश्यामं पद्माक्षं पीतवाससम्।
स्तुवन्ति नामभिर्दिव्यैर्न ते संसारिणो नरः॥
रामं लक्ष्मणपूर्वजं रघुवरं सीतापतिं सुन्दरं।
काकुत्स्थं करुणार्णवं गुणनिधिं विप्रप्रियं
धार्मिकम् राजेन्द्रं सत्यसंधं दशरथनयं श्यामलं
शान्तमूर्तिम्।
वन्दे लोकभिरामं रघुकुलतिलकं राघवं रावणारिम्॥
रामाय रामभद्राय रामचंद्राय वेधसे।
रघुनाथाय नाथाय सीतायाः पतये नमः॥
श्रीराम राम रघुनन्दन राम राम।श्रीराम राम भरताग्रज राम राम।
श्रीराम राम रणकर्कश राम राम।श्रीराम राम शरणं भव राम राम॥
श्रीरामचन्द्रचरणौ मनसा स्मरामि।श्रीरामचन्द्रचरणौ वचसा गृणामि।
श्रीरामचन्द्रचरणौ शिरसा नमामि।श्रीरामचन्द्रचरणौ शरणं प्रपद्ये॥
माता रामो मत्पिता रामचन्द्रः।स्वामी रामो मत्सखा रामचंद्रः।
सर्वस्वं मे रामचन्द्रो दयालु।नान्यं जाने नैव जाने न जाने॥
दक्षिणे लक्ष्मणो यस्य वामे तु जनकात्मजा।पुरतो मारुतिर्यस्य तं वन्दे रघुनंदनम्॥
लोकाभिरामं रणरङ्गधीरं राजीवनेत्रं रघुवंशनाथम्।
कारुण्यरूपं करुणाकरंतं श्रीरामचंद्रं शरणं प्रपद्ये॥

दीदी-माँ साध्वी ऋतम्भरा का जन्मोत्सव 'वात्सल्य दिवस' के रूप में धूमधाम से सम्पन्न

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

वृन्दावन। मथुरा रोड़ स्थित वात्सल्य ग्राम में दीदी मां साध्वी ऋंभरा का त्रिदिवसीय जन्मोत्सव विभिन्न धार्मिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों के मध्य बड़े ही हर्षोल्लास और धूमधाम के साथ सम्पन्न हुआ। जिसके अंतर्गत संविद गुरुकुलम् गल्स सैनिक स्कूल के सभागार में देश भर से पधारे शिष्यगणों एवं परमशक्ति पीठ के सहयोगियों ने अपने श्रद्धा-सुमन उनके श्रीचरणों में समर्पित करते हुए उनके स्वस्थ एवं दीर्घायु जीवन की मंगलकामनाएँ प्रकट कीं। जिसके अन्तर्गत वैशिष्ट्यम एवं बी टी टी ए की छात्राओं ने महाभारत की संक्षिप्त नृत्य नाटिका के माध्यम से द्रौपदी की विवशता, भगवान श्रीकृष्ण द्वारा उनके लाज बचाने एवं फिर दुःशासन वध के बाद स्त्री सशक्तिकरण का संदेश दिया।

कृष्णा ब्रह्मरतन विद्या मन्दिर की छात्राओं ने भगवान शिव पर आधारित नृत्य नाटिका से वातावरण को भावविभोर कर दिया लोगों तालियों से हाल गूँजने लगा। ऑस्ट्रेलिया निवासी साहित्यकार श्रीमती सोमा नायर ने अपनी कविता के माध्यम से दीदी माँ जी का यशोगान करते हुए भारत की स्त्री शक्ति के विभिन्न रूपों को प्रस्तुत किया। पाकिस्तान पीड़ति हिन्दू समाज को भारत में बसाने के लिए महत्वपूर्ण कार्य कर रहे जयपुर के प्रख्यात चिकित्सक डॉ.ओमेन्द्र रत्नू ने माँ के विभिन्न भूमिकाओं के प्रति अपनी अत्यन्त ही मनोहारी श्मेरे मनोभावश् वीडियो प्रस्तुति के माध्यम से पूज्या दीदी माँ जी के चरणों में अपने श्रद्धासुमन समर्पित करते हुए उन्हें जन्मोत्सव की बधाई प्रदान की।

सिरसा से पधारे हुए विश्वविख्यात भजन गायक किशन भैया के भजनों ने वातावरण को राधामय कर दिया।

परमशक्ति पीठ के सहयोगी एवं प्रख्यात शिक्षाविद् राजीव गुप्ता के आगरा में संचालित होने जा रहे शिक्षाकेन्द्र 'संध्या गुरुकुलम्' के ब्रोशर का विमोचन भी पूज्या दीदी माँ जी के कर-कमलों द्वारा सम्पन्न हुआ।

समारोह को संबोधित करते हुए साध्वी ऋम्भरा ने कहा कि हमने देखा कि लोग किसी की काया का वध कर देते हैं। लोग किसी के

प्रति रुष्ट हो जाते हैं तो उसको कहते हैं कि दिल करता है थप्पड़ मार दें, दिल करता है गोली से भून दें। इतना क्षुद्र विचार भी आता है द्वेष की वजह से। एक बैर होता है कि वह शरीर ही खत्म करना चाहता है लेकिन एक और तल पर भी बैर या प्रेम होता है। वो मन के तल पर होता है। हमने शरीर के तल पर तो देखा कि सास पहले बहू को जलाती थी अब बहुए कुछ अलग करामात करती हैं। पहले के समय में वो स्टोव बहू को ही पता नहीं क्यों जलाता था, सास, ननद को कैसे छोड़ देता था। अब वो उसकी दूसरी प्रतिक्रिया हो रही है। तो ये तो हमने बहुत सुना है और यहीं तक नहीं, अगर त्रेता युग या द्वापर युग की बात करें तो वहां भी तो हम देख रहे हैं कि उस दृष्टि से अगर हम आकलन करें तो सुग्रीव को बाली के विरुद्ध या बाली को सुग्रीव के विरुद्ध देखते ही हैं।

मनसा-वाचा-कमणा हम एक नहीं रह पाते। यह थोथा आदर्शवाद है। कोई प्रवचनों से बदल नहीं जाएगा। जब आपकी आंतरिक ऊर्जा का उर्ध्वगमन होगा, अपनी आंतरिक ऊर्जा का सम्मिलन करके आपकी शक्ति शिव से मिलेगी, तभी आप आंतरिक आनंद से भरेंगे। फिर आपके भीतर से जो निकलेगा वो सच्चा होगा, पूर्ण होगा आनंददायी होगा। आडंबर पाखंड हमको बोझिल करते हैं और जिंदगी की सच्चाई हमको हल्का-फुल्का करती है।'

इस अवसर पर श्रीनाभापीठाधीश्वर जगद्गुरु स्वामी सुतीक्ष्णदास देवाचार्य महाराज, संजय भैया, साक्षी चैतन्य सिन्धु, साध्वी शिरोमणि, स्वामी सत्यशील, पूर्व मंत्री रवि कान्त गर्ग, महामंडलेश्वर स्वामी राधाप्रसाद देव जू महाराज, महामंडलेश्वर स्वामी आदित्यानंद महाराज, सन्त प्रवर रामदास महाराज, प्रख्यात साहित्यकार श्यूपी रत्नश डॉ. गोपाल चतुर्वेदी, महंत मोहिनीबिहारी शरण महाराज, महंत देवानंद महाराज, आचार्य बद्रीश महाराज, सौरभ गौड़, आशीष गुप्ता, निवेदिता, आई.सी.अग्रवाल, राजीव गुप्ता, अशोक सरीन, डॉ. जनक आनन्द, ऋषव अवस्थी, आई.जी.एच.के.शर्मा, श्रीमती वन्दना तिवारी एवं श्रीमती सीमा शर्मा, मीनाक्षी अग्रवाल सहित अनेक गणमान्यजन इस आयोजन में सम्मिलित हुए।संचालन डॉ उमाशंकर राही ने किया।

27. 1 . 26 को श्री श्री 1008 श्री महाराजाधीराज हरसु बाबा जन्म उत्सव एवं शोभायात्रा महोत्सव

परिवहन विशेष न्यूज, वरमाला पैलेस भभुआ में हरसू बंसी परिवार की बैठक में मूल रूप से दिनांक 27. 1 . 26 को श्री श्री 1008 श्री महाराजाधीराज हरसु बाबा के जन्म उत्सव एवं शोभायात्रा महोत्सव को लेकर विचार विमर्श हुआ , बैठक में कार्यक्रम की रूपरेखा को लेकर विचार विमर्श कर सहमति बनाई गई की बाबा का जन्मोत्सव विगत कई वर्षों की तरह धूमधाम से मनाया जाएगा और इस बार जन्मों उत्सव कार्यक्रम को धूमधाम से मनाने के लिए कई प्रदेशों के साधु संत महाराज एवं हरसू बंसी परिवार के पूर्वज को विशेष रूप से आमंत्रण देकर बुलाने पर सहमति बनाई गई। इस कार्यक्रम को और भी भव्य कैसे बनाया जाए इस को लेकर दिनांक 11 जनवरी को हरसू महादेव मंदिर के प्रांगण में अगली बैठक सुनिश्चित की गई ,आज के बैठक में मुख्य रूप से अनिल दुबे, देवराज पांडे ,प्रकाश पांडे , गृजेश तिवारी ,शंभू तिवारी ,संजय चौबे , डबलू पांडे ,अजय शंकर पांडे, अंगद तिवारी ,सूर्याँश पांडे मंगल चौबे ,आनंद पांडे ,गुड्डु पांडे ,पुतुल बाबा अरविंद पांडे, मनीष कश्यप ओझा रैना पाण्डेय ,विमलेश तिवारी ,सम्राट राजन तिवारी इत्यादि लोग शामिल हुए।

युवाओं से सतत लेखन का आव्हान

सुनील चिंचोलकर

बिलासपुर, छत्तीसगढ़। सविता स्मृति स्वरोज फाउंडेशन के पांचवें वार्षिक आयोजन एवं स्मृतिशेष सविता प्रथमेश के जन्मदिन के अवसर पर निसर्ग नीड़, बिलासपुर में शहर के नवयुवा कवियों का काव्य पाठ आयोजित किया गया। साहित्यिक वातावरण में सम्पन्न इस आयोजन में बड़ी संख्या में साहित्य प्रेमी एवं श्रोता उपस्थित रहे। इसी अवसर पर फाउंडेशन द्वारा प्रकाशित वार्षिक पत्रिका "स्मृति सविता" (2025–26 संयुक्तांक) तथा जानी-मानी कवयित्री पल्लवी मुखर्जी के प्रथम कविता संग्रह "विलुप्ति होती जाती हैं स्त्रियां" का लोकार्पण भी किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथियों में देश के वरिष्ठ कवि, लेखक एवं साहित्यकार तथा श्रीकांत वर्मा सृजन पीठ के अध्यक्ष रामकुमार तिवारी, ईवनिंग टाइम्स के संस्थापक-संपादक एवं प्रगतिशील लेखक संघ के राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष नथमल शर्मा, भिलाई की चर्चित कवयित्री मीता दास, विचार मंच गोष्ठी के आयोजक व संचालक तथा जाने-माने उपन्यासकार द्वारिका अग्रवाल (प्रसिद्ध कृतियां – तेरी मेरी कहानी, मध्दम मध्दम, मुसाफ़िर जाएगा कहाँ, कहाँ ले चले हो, बता दो मुसाफ़िर) एवं द्वारिका प्रसाद विप्रशिक्षण समिति के उपाध्यक्ष राजकुमार अग्रवाल मंचासीन रहे।

शहर की युवा पीढ़ी की उल्लेखनीय उपस्थिति—कविएवं श्रोता दोनों रूपों में—

हिंदी साहित्य के उज्ज्वल भविष्य का संकेत मानी गई। नवयुवा कवियों अनुराग तिवारी, प्रकाश साहू, मीरा मृदु, निधि तिवारी, वर्षा रानी, राहुल सोनी, शिवी रावत, उपासना, शुभांगी बाजपेयी, युवराज सोनी, अंजू कमलेश, जानकी राजपूत, प्रीति तिवारी, साकेत तिवारी, आदित्य एवं निहाल सोनी ने अपनी-अपनी रचनाओं का पाठ किया। वीर रस, श्रृंगार, प्रेम और समकालीन संवेदनाओं से परिपूर्ण कविताओं को श्रोताओं की भरपूर तालियां और प्रशंसा मिली। मुख्य अतिथि साहित्यकारों ने अपने उद्बोधनों में युवा कवियों का उत्साहवर्धन करते हुए उन्हें सतत लेखन और वैचारिक प्रतिबद्धता के लिए प्रेरित किया। कार्यक्रम के प्रारंभ में फाउंडेशन के निदेशक प्रथमेश सविता ने संस्था की स्थापना के उद्देश्य एवं अब तक किए गए कार्यों की जानकारी दी। कवयित्री पल्लवी मुखर्जी ने अपने कविता संग्रह के विमोचन पर मंच और फाउंडेशन के प्रति आभार व्यक्त करते हुए अपने साहित्यिक परिवार—पिता शितेन्द्रनाथ, माता शुक्ला एवं भाई भास्कर चौधरी—को स्मरण किया तथा संग्रह से चयनित कविताओं का पाठ भी किया। कार्यक्रम का संचालन आकांक्षा बाजपेयी ने किया। अतिथियों का स्वागत पुष्पों के पौधों से किया गया। आभार प्रदर्शन महिमा दुबे द्वारा किया गया। अंत में सभी उपस्थितजनों ने फाउंडेशन की प्रेरणास्रोत स्मृतिशेष सविता प्रथमेश को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

अंतरराष्ट्रीय कवि बृजेंद्र अवस्थी के जन्मदिवस पर साहित्यकारों का समागम

नरेंद्र गरल के गीत संग्रह श्पंखश का बृजेंद्र अवस्थी को समर्पण

बदायूँ। नूतन वर्ष के प्रथम दिन साहित्य स्तंभ कहे जाने वाले अंतरराष्ट्रीय कवि काव्य गुरु डॉ बृजेंद्र अवस्थी के जन्म दिवस पर उनके कवि नगर स्थित आवास मनोरमा पर अनेक काव्य प्रेमियों के समागम के बीच वरिष्ठ कवि नरेंद्र गरल ने अपने द्वारा रचित पुस्तक पंख गीत संग्रह का अपने गुरु डॉ बृजेंद्र अवस्थी को समर्पण किया।

इस मौके पर डॉ बृजेंद्र अवस्थी की पावन स्मृतियों को नमन करते हुए उपस्थित कवि व शायरों ने अपने श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए एक से बढ़कर एक रचनाएं प्रस्तुत की। अध्यक्षता डॉ. राम बहादुर 'व्यथित' ने की।

कार्यक्रम का प्रारंभ डा. सोनरूपा विशाल द्वारा सरस्वती वंदना पढ़कर किया गया। गोष्ठी में डॉ.ब्रजेन्द्र अवस्थी के व्यक्तित्व व कृतित्व पर साहित्य मनीषियों ने अपने-अपने अंदाज में प्रस्तुति दी, साथ ही उपस्थित सभी साहित्यकारों ने 'पंख' गीत संग्रह के लिए नरेंद्र गरल जी को बधाई दी।

वरिष्ठ कवि नरेंद्र गरल ने पढ़ा –

अब हार हो या जीत हो परिणाम कुछ भी हो
कांधे से धनुष बाण उतारे न जाएंगे।

डॉ राम बहादुर व्यथित ने कहा -

हैं अश्रु भरे भारत मां को,
हा ! आज लाडला लाल गया।
सरस्वती करती है क्रंदन,
हा ! वरद पुत्र दिग भाल गया ।।

उस्ताद शायर सुरेन्द्र नाज़ ने कहा -

हिंदी के या उर्दू के अदब दोस्त जो भी हैं
हर एक की पसंद थे बृजेंद्र अवस्थी

वरिष्ठ शायर अहमद अमजदी ने सुनाया -

ज़ाते अवस्थी बड़ी महान
देश का गौरव देश की शान

महेश मित्र ने पढ़ा -

इस नए वर्ष में शुभ सितारे रहे
तुम हमारे रहो हम तुम्हारे रहे।

डॉ सोनरूपा ने सुनाया -

मन के सागर में बहुत सी मछलियां हैं
एक जीवन है कई आसक्तियां हैं

शम्स मुजाहिदी बदायूंनी ने कहा -

उल्फत के गुल दिल में खिलाकर मैं भी देखूं
तू भी देख।
फिर से हिन्दो पाक मिलाकर मैं भी देखूं तू भी देख।।

डॉ निशि अवस्थी ने पढ़ा -

वैसे आपने कुछ कुटुंब ही वैसे शहर की छांव में
किंतु देश का बहुत बड़ा परिवार बसा है गांव में।

कुमार आशीष ने सुनाया -

गुरुवर के बारे में कुछ भी लिख पाना आसान नहीं
भावों से तो हृदय भरा है, पर भाषा का ज्ञान नहीं।

ओजस्वी जौहरी ने पढ़ा -

क्या लगाओगे भला तुम दान लेखन का मेरे
है कलम अनमोल मेरी है ये अद्भुत लेखनी

अभिषेक अनंत ने पढ़ा-

स्वीकारो शब्द- पुत्र का आमंत्रण
हे काव्य मनीषी तुम्हें हृदय से शतवंदन

सुबीन महेश्वरी ने कहा -

भारत का भव्य ध्वज नभ में लहराएगा,
अनुपम अनूठा दिव्य पंख यह महान है।

गायत्री मिश्रा ने पढ़ा -

मधुर हो गुनगुनाहट जब हमें गुरु याद आयेंगे
छुए जब धूप को ठंडक हमें गुरु याद आयेंगे।

आदित्य तोमर वजीरगंजवी ने पढ़ा -

आप तलवार बांटते जाएं
और मैं ढाल भी नहीं बांटू

इनके अतिरिक्त अशोक खुराना, डा. अक्षत अशेष, अर्चना अवस्थी, मीरा अग्रवाल, बृजेन्द्र अवस्थी के पौत्र प्रियम अवस्थी व श्रीयम अवस्थी, डा. अक्षत अशेष ने भी काव्यपाठ किया। कार्यक्रम का संचालन युवा कवि अभिषेक अनंत ने किया।

जीवन में जहां भी आपको द्वंद्व दिखाई पड़े, चुनाव ही मत करना। जो चुनाव करता है, वह गृहस्थ है। जो चुनाव नहीं करता, वह संन्यस्त है।

लेखकः- विद्या भूषण भरद्वाज

इस बात को थोड़ा समझ लें।

दुख है, सुख है, तत्क्षण हमारा मन चुनाव करता है कि सुख चाहिए और दुख नहीं चाहिए। जन्म है और मृत्यु है, तत्क्षण हमारा मन कहता है, जन्म ठीक, मृत्यु ठीक नहीं है।

मित्र हैं, शत्रु हैं, हमारा मन कहता है, मित्र ही मित्र रहें, शत्रु कोई भी न रहे। यह चुनाव है, च्वाइस है और जहां चुनाव है, वहां संसार है क्योंकि आपने दो में से एक को चुन लिया और दो ही अगर आप एक साथ चुन लें, तो कट जाएंगे दोनों।

अगर आप मान लें कि मित्र भी होंगे, शत्रु भी होंगे और आपके मन में कोई रत्तीभर चुनाव न हो कि मित्र ही बचें, शत्रु न बचें।

आपके मन में कोई चुनाव न हो कि जीवन ही रहे, मृत्यु न रहे। आप दोनों के लिए राजी हो जाएं। जो हो उसके लिए आपकी पूरी की पूरी तथाता, एक्सेप्टिबिलिटी हो, स्वीकार हो, तो आप संन्यस्त हैं फिर आप मकान में हैं, दुकान में हैं, बाजार में हैं कि हिमालय पर हैं, कोई फर्क नहीं पड़ता। आपके भीतर चुनाव खड़ा न हो, च्वाइस लेस नेस।

कृष्णमूर्ति निरंतर च्वाइस लेस नेस चुनाव रहितता की बात करते हैं। वह चुनाव रहितता यही है। दो के बीच कोई भी न चुनें।

जैसे ही आप दो के बीच चुनाव बंद करते हैं, दोनों गिर जाते हैं। क्यों? क्योंकि आपके चुनाव से ही वे खड़े होते हैं और जटिलता यह है कि जब आप एक को चुनते हैं, तब अनजाने आपने दूसरे को भी चुन लिया।

जब मैं कहता हूं मुझे सुख ही सुख चाहिए, तभी मैंने दुख को भी निमंत्रण दे दिया। जो सुख की मांग करेगा, वह दुखी होगा। उस मांग में ही दुख है जो सुख की मांग करेगा, वह अगर सुख न पाएगा, तो दुखी होगा। अगर पा लेगा, तो भी दुखी होगा क्योंकि जो सुख पा लिया जाता है, वह व्यर्थ हो जाता है और जो सुख नहीं पाया जाता, उसकी पीड़ा सालती रहती है।

जैसे ही हम चुनते हैं एक को, दूसरा भी आ गया पीछे के द्वार से और हम चाहते हैं कि दूसरा न आए। इसीलिए हम चुनते हैं कि दूसरा न आए। हम चाहते हैं यश तो मिले, अपयश न मिले। प्रशंसा तो मिले, कोई अपमान न करे लेकिन जो प्रशंसा चाह रहा है उसने अपमान को बुलावा दे दिया। अपमान मिलेगा। अपमान तो केवल उसी को नहीं मिलता है, जिसने मान को चुना नहीं। जिसने मान को चुना, उसे अपमान मिलेगा।

जरूरी नहीं है कि आप मान को न चुनें, तो कोई आपको गाली न दे। दे, लेकिन आपके पास गाली गाली की तरह नहीं पहुंच सकती है। यह दूसरे देने वाले पर निर्भर है कि वह फूल फेंके कि पत्थर फेंके। लेकिन आपके पास अब पत्थर भी नहीं पहुंच सकता, फूल भी नहीं पहुंच सकता। वह तो फूल मुझे मिले, इसलिए पत्थर पहुंच जाता था। फूल ही मेरे पास आए, इसलिए पत्थर भी निमंत्रित हो जाता था। जैसे ही आप चुनाव छोड़ देते हैं, आप जगत के बीच भी जगत के बाहर हो जाते हैं।

यह जो चुनाव रहितता है, यह संन्यास की गुह्य साधना है, आंतरिक साधना है। संन्यास है मार्ग, दो के पार जाने का। संसार है द्वार, दो के भीतर जाने का।

तो जितना आप ज्यादा चुनेंगे, उतने आप उलझते चले जाएंगे। जितना आप मांग करेंगे, उतने आप परेशान होते चले जाएंगे। जितना आप कहेंगे, ऐसा हो, और ऐसा न हो, उतनी ही आपकी चित्त — दशा विक्षिप्त होती चली जाएगी। जितना आप चुनाव क्षीण करते जाएंगे और आप कहेंगे, जैसा हो, मैं राजी हूं। जो भी हो, मैं राजी हूं। जैसा भी हो रहा है, उससे विपरीत की मेरी कोई मांग नहीं है। जीवन मिले तो ठीक, और मृत्यु मिल जाए तो ठीक। दोनों के साथ मैं एक—सा ही व्यवहार करूंगा। मैं कोई भेद नहीं करूंगा। जैसे ही आपके भीतर का यह तराजू समतुल होता जाएगा, वैसे ही वैसे द्वंद्व क्षीण होगा और आप अद्वैत में, निर्द्वंद्व में प्रवेश कर जाएंगे।

ओशो

विकसित भारत @2047 और दूषित बुनियादी सुविधाएँः आधुनिक भारत के सामने एक सभ्यतागत चुनौती-एक समग्र अंतरराष्ट्रीय विश्लेषण

विकसित भारत का अर्थ केवल जीडीपी नहीं हैं, उसका असली पैमाना हर नागरिक सुरक्षित बुनियादी सुविधाएं पानी,बिना डर के जीवन,और राज्य पर भरोसा है
यदि 2047 तक भारत को सचमुच विकसित राष्ट्र बनना है, तो उसे बुनियादी सुविधाओं को नीतिगत प्राथमिकता नहीं बल्कि नैतिक दायित्व मानना होगा – **एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र**

वैश्विक स्तरपर विज़न 2047 के तहत भारत स्वयं को एक विकसित राष्ट्र और विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था के रूप में स्थापित करने की दिशा में तेज़ी से आगे बढ़ रहा है।बुनियादी ढांचे,डिजिटल गवर्नेंस, स्मार्ट सिटी, हाईवे, मेट्रो औद्योगिक गलियारों और वैश्विक निवेश के आंकड़े इस प्रगति का दावा करते हैं। किंतु इसी आधुनिक भारत में यदि नागरिक दूषित पेयजल जैसी मूलभूत सुविधा के अभाव में अपनी जान गंवा दें, तो यह केवल प्रशासनिक विफ़लता नहीं, बल्कि राज्य की नैतिक, संवैधानिक और मानवीय विफलता बन जाती है।1 जनवरी 2026 को इंदौर में दूषित पानी से हुई मौतों ने इसी विरोधाभास को उजागर कर दिया है,जहाँ एक ओर वर्ल्ड क्लास इंडिया की आकांक्षा है, वहीं दूसरी ओर नागरिक जीवन की बुनियादी सुरक्षा भी सुनिश्चित नहीं हो पा रही। मैं एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र यह मानता हूं क़ि,स्वच्छ पेयजल का अधिकार भारतीय संविधान के अनुच्छेद 21 के तहत जीवन के अधिकार का अभिन्न हिस्सा है। दूषित पानी से हुई मौतें सीधे-सीधे इस अधिकार का हनन हैं।जब भारत 2047 तक विकसित राष्ट्र बनने की बात करता है, तब ऐसी घटनाएँ यह प्रश्न उठाती हैं कि क्या विकास मानवाधिकारों की रक्षा के बिना संभव है ?हाईकोर्ट और राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग का संज्ञान यह स्पष्ट करता है कि यह मामला केवल प्रशासनिक नहीं, बल्कि संवैधानिक और मानवाधिकार उल्लंघन का है।न्यायपालिका की सक्रियता यह सुनिश्चित करने का प्रयास है कि राज्य अपने कर्तव्यों से पलायन न करे और नागरिकों के जीवन की कीमत राजनीतिक सुविधा के अनुसार न तय की जाए।

साथियों बात अगर हम इंदौर में हुई त्रासदी को समझने की करें तो, जो शहर लगातार कई वर्षों से राष्ट्रीयस्वच्छता सर्वेक्षण में देश का सबसे स्वच्छ शहर घोषित होता रहा है, वहां नववर्ष के पहले ही दिन दूषित पेयजल से मौतों की खबर ने पूरे देश को स्तब्ध कर दिया।यह घटना इसलिए और भी गंभीर हो जाती है क्योंकि इंदौर को अक्सर शहरी प्रबंधन, नगर निकाय दक्षता और जनभागीदारी का आदर्श मॉडल बताया जाता रहा है।यदि ऐसा शहर भी अपने नागरिकों को सुरक्षित पेयजल उपलब्ध कराने में विफल हो जाए,तो यह प्रश्न केवल इंदौर का नहीं, बल्कि पूरे शहरी भारत की जल सुरक्षा रणनीति पर खड़ा होता है।घटना का केंद्र इंदौर का भागीरथपुरा क्षेत्र है, जहाँ पुलिस चौकी के शौचालय के ठीक नीचे से गुजर रही नर्मदा की मुख्य जल आपूर्ति पाइपलाइन में गंभीर रिसाव पाया गया। इस रिसाव के कारण सीवेज का गंदा पानी सीधे पेयजल लाइन में मिल गया और पूरे वार्ड में दूषित पानी की आपूर्ति होती रही।यह केवल एक तकनीकी खराबी नहीं थी, बल्कि प्रणालीगत लापरवाही का परिणाम भी होने की संभावना है।मीडिया में चल रही खबरों के अनुसार, स्थानीय नागरिकों द्वारा सैकड़ों बार पार्षद को शिकायतें की गईं, नगर निगम की 311 ऐप पर भी बार-बार शिकायत दर्ज कराई गई, परंतु हर बार केवल आश्वासन मिला, समाधान नहीं। यह स्थिति बताती है कि डिजिटल शिकायत तंत्र तब तक अर्थहीन है, जब तक उस पर संवेदनशील और समयबद्ध कार्रवाई न हो।मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी ने स्पष्ट रूप से स्वीकार किया कि दूषित पानी पीने से ही लोग बीमार पड़े और उनकी मृत्यु हुई। वहीं कलेक्टर स्तरपर यह कहा गया कि डिटेल्ड रिपोर्ट और कल्चर टेस्ट के बाद ही स्थिति स्पष्ट होगी।यह प्रशासनिक भाषा एक परिचित पैटर्न को दर्शाती है, पहले टालना, फिर जांच, फिर जिम्मेदारी तय करने में विलंब। जबकि वास्तविकता यह है कि जब सैकड़ों लोग अस्पतालों में भर्ती हों, 16 बच्चे प्रभावित हों और मौतों की संख्या बढ़ रही हो, तब प्रशासनिक सतर्कता नहीं बल्कि आपातकालीन जवाबदेही अपेक्षित होती है।

साथियों बात अगर हम मौतों के आंकड़ों पर विवादः सत्य बनाम आधिकारिक संस्करण इसको समझने की करें तो, इस पूरे मामले में सबसे चिंताजनक पहलू मौतों कीसंख्या को लेकर सामने आया विरोधाभास है।हाईकोर्ट में सरकार की ओर से पेश की गई स्टेटस रिपोर्ट में अब तक केवल 4 मौतों की बात कही गई, जबकि मीडिया से ऐसी खबरें आ रही है क़ज़िमीनी रिपोर्ट, मीडिया और अस्पतालों के आंकड़ों के अनुसार 15 लोगों की मृत्यु हो चुकी है।यह अंतर केवल आंकड़ों का नहीं, बल्कि राज्य की पारदर्शिता और नैतिक साहस का प्रश्न है। लोकतंत्र में जब सरकारें मौतों को कम करके दिखाने लगें, तो यह पीड़ितों के प्रति दूसरा अन्याय बन जाता है। न्यायपालिका और मानवाधिकार आयोग की भूमिका इस मामले में हाईकोर्ट द्वारा जनहित याचिका पर संज्ञान लेना और अगली सुनवाई की तिथि तय करना न्यायिक सक्रियता का संकेत है। वहीं राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग द्वारा स्वतः संज्ञान लेकर मुख्य सचिव को नोटिस जारी करना इस बात की पुष्टि करता है कि यह मामला केवल प्रशासनिक चूक नहीं, बल्कि मानवाधिकार उल्लंघन का भी है।

साथियों बात अगर हम इस त्रासदी को संवैधानिक रूप से समझने की करें तो, भारत का संविधान नागरिकों को केवल शासन की संरचना नहीं देता, बल्कि उन्हेंसम्मानपूर्ण सुरक्षित और गरिमामय जीवन का वचन देता है। अनुच्छेद 21 के अंतर्गत जीवन और व्यक्तिगत स्वतंत्रता का अधिकार केवल सांस लेने तक सीमित नहीं है, बल्कि उसमें स्वच्छ जल, स्वच्छ पर्यावरण और स्वास्थ्य का अधिकार भी निहित है। इंदौर में दूषित पेयजल से हुई मौतें इस संवैधानिक वचन के टूटने का प्रतीक हैं। यह घटना केवल एक नगर निगम या राज्य सरकार की विफलता नहीं, बल्कि राज्य की संवैधानिक जिम्मेदारी के उल्लंघन का गंभीर मामला है।स्वच्छ पेयजलः मूल अधिकार का अविभाज्य हिस्सा भारतीय न्यायपालिका ने समय-समय पर स्पष्ट किया है कि स्वच्छ जल का अधिकार, अनुच्छेद 21 के अंतर्गत जीवन के अधिकार का अनिवार्य अंग है। सुप्रीम कोर्ट के विभिन्न निर्णयों में यह स्थापित किया गया है कि यदि राज्य नागरिकों को सुरक्षित पेयजल उपलब्ध कराने में असफल रहता है, तो वह संवैधानिक कर्तव्यहीनता का दोषी है।इंदौर की घटना में, जहाँ सीवेज का पानी पेयजल आपूर्ति में मिला और प्रशासन शिकायतों के बावजूद निष्क्रिय रहा, वहाँ यह तर्क और भी सशक्त हो जाता है कि राज्य ने अपने संवैधानिक दायित्व का पालन नहीं किया।अनुच्छेद 14 और 21 का उल्लंघनः समानता और जीवन पर भी आघात क़ी ओर इशारा करता है

साथियों बात अगर हम राजनीतिक प्रतिक्रियाएँः संवेदना, आरोप और नैतिक परीक्षा इसको समझने की करें तो पूर्व मुख्यमंत्री द्वारा इसे मुख्यमंत्री के लिए परीक्षा की घड़ी बताना और घोर प्रायश्चित की बात कहना इस घटना की नैतिक गंभीरता को रेखांकित करता है।वहीं लोकसभा में विपक्षी नेता द्वारा यह कहना कि साफ पानी अहसान नहीं, जीवन का अधिकार है, लोकतांत्रिक विमर्श को संवैधानिक धरातल पर लाता है।हालांकि, राजनीतिक आरोप-प्रत्यारोप से परे यह प्रश्न अधिक गहरा है, क्या शासन व्यवस्था नागरिक जीवन को सर्वोच्च प्राथमिकता मान रही है, या केवल राजनीतिक प्रबंधन तक सीमित है?

साथियों बात अगर हम दूषित पानी और घातक बैक्टीरिया एक वैज्ञानिक चेतावनी को समझने की करें तो, विशेषज्ञों के अनुसार, सीवेज मिला पानी केवल गंदा नहीं बल्कि अत्यंत विषैला होता है। इसमें हैजा जैसे घातक बैक्टीरिया, मल-मूत्र से उत्पन्न रोगाणु, साबुन, डिटर्जेंट, केमिकल और कभी-कभी औद्योगिक अपशिष्ट भी शामिल होता है।जब यह मिश्रण पेयजल आपूर्ति में प्रवेश करता है, तो यह एक मौन जैविक हथियार बन जाता है, जिसका प्रभाव बच्चों, बुजुर्गों और कमजोर प्रतिरोधक क्षमता वाले लोगों पर सबसे अधिक पड़ता है।

साथियों बात अगर हम वॉटर विज़न 2047ः नीति और ज़मीनी हकीकत का अंतर को समझने की करें तो, हाल ही में भोपाल में आयोजित वॉटर विज़न 2047 सम्मेलन में प्रधानमंत्री के 5 पी मॉडल, राजनीतिक इच्छाशक्ति, लोक वित्त, साझेदारी, जन भागीदारी और सतत प्रेरणा पर विस्तृत चर्चा हुई थीं।जल सुरक्षा के लिए रोडमैप तैयार करने की बातें हुईं थीं, परंतु इंदौर जैसी घटना यह दर्शाती है कि नीतिगत विमर्श और ज़मीनी क्रियान्वयन के बीच अभी भी गहरी खाई है। जब तक पाइपलाइन स्तर पर निगरानी, जवाबदेही और त्वरित सुधार तंत्र विकसित नहीं होंगे, तब तक वॉटर विज़न केवल दस्तावेज़ों में सिमटा रहेगा।

साथियों बात कर हमअंतरराष्ट्रीय परिप्रेक्ष्यः विकसित देशों से भारत क्या सीख सकता है इसको समझने की करें तो, यूरोप, जापान और सिंगापुर जैसे देशों में पेयजल आपूर्ति को क्रिटिकल नेशनल इंफ्रास्ट्रक्चर माना जाता है। वहां जल आपूर्ति लाइनों की नियमित ऑडिट, सेंसर आधारित निगरानी, और किसी भी रिसाव पर त्वरित अलर्ट सिस्टम लागू हैं।भारत यदि 2047 तक वैश्विक नेतृत्व की आकांक्षा रखता है, तो उसे यह समझना होगा कि आर्थिक शक्ति का मूल्य तभी है जब नागरिक सुरक्षित स्वस्थ और सम्मानजनक जीवन जी सकें।

साथियों बात अगर हम मीडिया, अभिव्यक्ति और सत्ता का व्यवहार इसको समझने की करें तो, इस प्रकरण में एक इंटरविनर द्वारा मीडिया पब्लिकेशन पर रोक की मांग और एक वरिष्ठ मंत्री द्वारा इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के सवालों पर असभ्य भाषा का प्रयोग करना लोकतांत्रिक संस्कृति के लिए चिंताजनक संकेत हैं।सत्ता की परिपक्वता इस बात से मापी जाती है कि वह संकट के समय सवालों से डरती है या उनसे सीखती है। मीडिया पर अंकुश लगाने की सोच समस्या के समाधान के बजाय उसे दबाने की प्रवृत्ति को दर्शाती है।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन करें इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे क़ि विकसित भारत का अर्थ केवल जीडीपी नहीं हैं, इंदौर की जल त्रासदी हमें यह याद दिलाती है कि विकसित भारत का सपना केवल आर्थिक आंकड़ों, रैंकिंग और घोषणाओं से पूरा नहीं होता। उसका असली पैमाना यह है कि क्या हर नागरिक सुरक्षित पानी पी सकता है, बिना डर के जी सकता है, और राज्य पर भरोसा कर सकता है।यदि 2047 तक भारत को सचमुच विकसित राष्ट्र बनना है, तो उसे बुनियादी सुविधाओं को नीतिगत प्राथमिकता नहीं बल्कि नैतिक दायित्व मानना होगा। अन्यथा, ऐसी घटनाएँ न केवल जानें लेंगी, बल्कि राष्ट्र की आत्मा को भी घायल करती रहेंगी।

एआई को कानूनी अधिकार: तकनीकी प्रगति या नई चुनौती ?

जब मशीनें सोचने लगी हैं, तो क्या उन्हें इंसानों जैसे अधिकार देने चाहिए — या यह मानव सभ्यता की दिशा बदलने वाला कदम साबित होगा?

संगिनी घोष
विशेष संवाददाता
परिवहन विशेष

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) अब किसी परिकल्पना का हिस्सा नहीं रही। यह हमारे जीवन, उद्योग और नीति निर्माण तक व्यापक रूप से पहुँच चुकी है। कुछ वर्षों में एआई सिस्टम इतने उन्नत हो गए हैं कि वे मानव-समान निर्णय और विश्लेषण करने में सक्षम दिखने लगे हैं। ऐसे में यह प्रश्न उठना स्वाभाविक है — क्या एआई को भी कानूनी अधिकार दिए जाने चाहिए?

"कानूनी विमर्श": एआई से जुड़े 5 प्रमुख कानूनी सवाल

1. क्या एआई को "कानूनी व्यक्ति" (Legal Person) का दर्जा दिया जा सकता है, और अगर हाँ, तो उसकी सीमाएँ क्या होंगी?

2. एआई से होने वाले नुकसान (जैसे गलत निर्णय, भेदभाव, दुर्घटना) की कानूनी जिम्मेदारी किस पर तय होगी — डेवलपर, उपयोगकर्ता, कंपनी या एआई सिस्टम?

3. क्या एआई सिस्टम पर लागू होने वाले कानून इंसानों और कंपनियों पर लागू कानूनों से अलग होने चाहिए, या उन्हें मौजूदा ढांचे में ही समेटा जा सकता है?

4. डेटा गोपनीयता, प्रोफाइलिंग और निगरानी में एआई के इस्तेमाल पर नागरिकों के मूल अधिकार (Privacy, Freedom of Expression आदि) की रक्षा कैसे होगी?

5. हाई-रिस्क क्षेत्रों (जैसे न्यायिक निर्णय, स्वास्थ्य, राष्ट्रीय सुरक्षा, परिवहन) में एआई के इस्तेमाल पर किस स्तर की पूर्व अनुमति, ऑडिट और पारदर्शिता कानूनी रूप से अनिवार्य होनी चाहिए?

यह विचार आकर्षक अवश्य है, लेकिन इसके परिणाम चिंताजनक हो सकते हैं। "एआई के गॉडफादर" कहे जाने वाले वैज्ञानिक योशुआ बेंगियो चेतावनी देते हैं कि एआई को इंसान जैसा दर्जा देना नियंत्रण और जवाबदेही — दोनों को धूमिल कर सकता है। यदि भविष्य में कोई स्वचालित वाहन घातक दुर्घटना का कारण बनता है, तो दोषी कौन होगा? इंजीनियर, निर्माता या वह एआई सिस्टम जिसे 'कानूनी पहचान' मिल चुकी होगी?

यही वह बिंदु है जहाँ तकनीकी प्रगति और नैतिक जिम्मेदारी के बीच संघर्ष दिखता है। एआई में न भावनाएँ हैं, न नैतिक चेतना। यह केवल मानव निर्मित डेटा और निर्देशों पर आधारित गणनात्मक तंत्र है। ऐसे में इसे कानूनी व्यक्ति का दर्जा देना, कानून और न्याय दोनों के सिद्धांतों को अस्थिर कर सकता है।

परिवहन क्षेत्र में यह मुद्दा विशेष रूप से अहम है। एआई-संचालित ट्रैफिक सिस्टम, स्वचालित वाहनों और ड्रोन निगरानी के बढ़ते इस्तेमाल से दक्षता तो बढ़ी है, लेकिन यह सवाल भी तेज़ हुआ है — अंतिम निर्णय किसका होगा?

*** इंसान का या एल्गोरिथ्म का?**

* यदि मशीनें हमारी ओर से निर्णय लेने लगें, तो जवाबदेही किसके पास रहेगी? दुनिया के कई देश अब एआई गवर्नेंस के लिए कड़े नियम बना रहे हैं। भारत को भी इस बहस को केवल तकनीकी नहीं, बल्कि सामाजिक और नैतिक दृष्टि से देखना होगा। एआई को एक जिम्मेदार सहायक के रूप में विकसित करना ही मानवता के लिए सुरक्षित और रचनात्मक विकल्प है, न कि उसे कानूनी व्यक्ति का दर्जा देना।

2. "परिवहन नीति फोकस" स्वचालित वाहनों पर नीति बहस के मुख्य बिंदु

* दुर्घटना की जिम्मेदारीः स्वचालित वाहन के हादसे की स्थिति में दंडात्मक और सिविल जिम्मेदारी किस पर होगी — निर्माता, सॉफ़्टवेयर प्रदाता, मालिक या ऑपरेटर?

* सुरक्षा मानक और परीक्षणः किस स्तर के सड़क परीक्षण, सिमुलेशन और प्रमाणन के बाद किसी स्वचालित वाहन को सार्वजनिक सड़कों पर चलाने की अनुमति दी जानी चाहिए?

* डेटा और निगरानीः वाहन से जुटाए गए लोकेशन, ड्राइविंग पैटर्न और यात्री डेटा पर किस तरह के गोपनीयता और उपयोग नियम लागू होंगे?

* मानव नियंत्रण की सीमाः आपात स्थिति में मानव हस्तक्षेप की भूमिका क्या होगी, और क्या कानूनन "मैनुअल ओवर राइड" की सुविधा अनिवार्य होनी चाहिए?

* सार्वजनिक हित और रोजगारः स्वचालित वाहनों से परिवहन दक्षता बढ़ने के साथ-साथ चालकों और सहायक कर्मचारियों के रोजगार पर पड़ने वाले प्रभाव को नीति में कैसे संतुलित किया जाएगा?

"बुद्धिमत्ता का सच्चा उद्देश्य स्वतंत्र होना नहीं, उत्तर दायी होना है — और यही भेद मनुष्य को मशीन से अलग करता है।"

सोशल मीडिया की लड़ाई

लेखक:- विद्या भूषण भरद्वाज

आज के डिजिटल दौर में जहाँ सोशल मीडिया ने दुनिया को पास लाकर संवाद को आसान बना दिया है, वहीं कभी-कभी यह छोटी-सी गलतफहमी से बड़े रिश्ते भी कमजोर कर देता है। यही हुआ जगदीश और हरिराम के साथ, जो बचपन से एक-दूसरे के सुख-दुख के साथी थे। एक दिन जगदीश ने अपने मन की खिन्नता उतारने के लिए एक सामान्य सा स्टेटस डाल दिया, लेकिन हरिराम ने उसे गलत समझकर अपने ऊपर ले लिया और गुस्से में तीखी टिप्पणी कर दी। देखते ही देखते दोस्तों की प्रतिक्रियाएँ भी जुड़ती गईं और मामला सोशल मीडिया पर एक छोटी चिंगारी से धधकती आग बन गया।

कुछ ही घंटों में उनकी वर्षों की दोस्ती लोगों के लाइक्स और कमेंट्स के बीच खोती हुई दिखाई देने लगी। रात को दोनों बेचैन हो गए—जगदीश को महसूस हुआ कि स्क्रीन पर लिखा शब्द दिल पर गहरी चोट कर जाता है, और उधर हरिराम को पिता ने समझाया कि "बेटा, जिन रिश्तों को दिल से बनाया जाता है, उन्हें कीबोर्ड से नहीं तोड़ा जाता।" अगले दिन दोनों आमने-सामने मिले, आँखें नम थीं।

हरिराम ने कहा, "मैंने बिना सोचे समझे प्रतिक्रिया दे दी," और जगदीश बोला, "गलती मेरी भी थी, मुझे पहले तुझसे बात करनी चाहिए थी।" बस, इतना कहना था कि दोनों की दोस्ती फिर से पहले जैसी खिल उठी।

उन्होंने ठान लिया कि आगे से कोई भी मुद्दा सोशल मीडिया पर नहीं, बल्कि सीधे बैठकर बातचीत करके ही सुलझाएँगे।

शिक्षानीत

इस कहानी से हमें यह सीख मिलती है कि सोशल मीडिया पर शुरू हुई लड़ाई कभी समाधान नहीं देती। शब्द लिखने से पहले सोचें, प्रतिक्रिया देने से पहले रुकें और किसी भी गलतफहमी को बढ़ाने की बजाय संवाद का रास्ता अपनाएँ। असली जीत बहस में नहीं, बल्कि रिश्तों को बचाने में होती है।

पोस्टमार्टम के लिए कानपुर में लाशों का अंबार, मतलब आत्मा के जाने के बाद उसके घर शरीर की दुर्दशा !

सुनील बाजपेई

कानपुर। जन्म के बाद इस संसार में कुछ भी होने, बनने और करने का कारण आत्मा का शरीर धारण करना ही है। और जब इस शरीर की निष्क्रिय यानी मृत्यु के रूप में वह आत्मा शरीर को छोड़ देती है तो फिर उसकी शांति के लिए अनेक अनेक कर्मकांड भी किए जाते हैं लेकिन अगर सांसारिक व्यवस्थाओं और

कारणों को लेकर शव के पोस्टमार्टम जैसी अनिवार्यता होती है तो फिर ऐसा करने के अधिकारी और सक्षम शरीर धारी मतलब धरती के दूसरे भगवान कहे जाने वाले डॉक्टर की भी जरूरत होती है। और जब भी वे अपने कर्तव्य का पालन समय से नहीं करते तो फिर उस आत्म विहीन यानी निर्जीव शरीर को दुर्दशा होने जैसे हालातो से भी गुजरना पड़ता है।

यह कथन कानपुर के संदर्भ में भी सटीक बैठता है क्योंकि यहां आज शुक्रवार

को पोस्टमॉर्टम हाउस पर लाशों की लाइन लग गई। परिजन पोस्टमॉर्टम के इंतजाम में घंटों बैठे रहे। इधर-उधर दौड़ते रहे। लेकिन, डॉक्टर ही नहीं पहुंचे तो पोस्टमॉर्टम कैसे हो।

मिली जानकारीके मुताबिक शुक्रवार सुबह 10 बजे से तीन डॉक्टरों की ड्यूटी थी। मगर, सिर्फ एक डॉक्टर पहुंच सकीं। बाकी दो डॉक्टर दोपहर 2 बजे तक पोस्टमॉर्टम हाउस पहुंचे ही नहीं। पोस्टमॉर्टम हाउस में 16 शव पहुंच चुके थे।

कोई सुनवाई न होने पर परिजनों ने हंगामा करने के साथ ही सी एम ओ से फोन पर शिकायत की जिसके बाद सी एम ओ ने भी फोन पोस्टमॉर्टम हाउस के प्रभारी से वजह पूछी तो प्रभारी ने डॉक्टरों के नहीं आने की जानकारी दी।

अवगत कराते चलें कि आज शुक्रवार को भीषण ठंड में अलग-अलग स्थानों पर हुए सड़क हादसों और अन्य कारणों से हुई मौतों के बाद पोस्टमॉर्टम हाउस में सुबह से भीड़ जुटने लगी। दोपहर 2 बजे तक कोतवाली, साढ़, सजेती, छावनी, बाबूपुरवा, कर्नलगंज, चौबेपुर, महाराजपुर, स्वरूप नगर थाना क्षेत्रों से 16 शव पोस्टमॉर्टम हाउस पहुंचे। पीड़ित परिजन अपने-अपने शवों के इंतजार में घंटों ठंड में ठिठुरते रहे। कुल मिलाकर घंटों बाद शवों का पोस्टमार्टम शुरु किया गया। इस बीच सबसे बद नसीब लावारिश शव नजर आए, जिनके लिए कहने और आंसू बहाने वाला कोई था ही नहीं।

"चेहरे नहीं, चेतना उकेरते है : स्केच आर्टिस्ट भाई जी सोनी"

डॉ. शंभु पंवार

कला जब केवल दृश्य न रहकर अनुभूति बन जाए, जब रेखाएँ बोलने लगें और श्वेत काग़ज़ पर जीवन की धड़कन उतर आए—तब वह साधारण चित्रकला नहीं रहती, वह साधना बन जाती है। ऐसी ही साधना में लीन हैं पेंसिल स्केच आर्टिस्ट एल. के. सोनी, जिन्हें कला-जगत और समाज स्नेहपूर्वक 'भाई जी' के नाम से जानते है। भाई जी किसी औपचारिक कला विद्यालय की उपज नहीं हैं। उनकी कला किसी पाठ्यक्रम की सीमा में बँधी नहीं, बल्कि संस्कार, अनुभव और आत्मानुशासन से विकसित हुई है। यही कारण है कि उनकी पेंसिल में दिखावटी चमत्कार नहीं, बल्कि गहन संवेदना और संतुलित शिल्प दिखाई देता है। उनकी कला का मूल आधार- सूक्ष्म अवलोकन। वे चेहरे को नहीं देखते, वे व्यक्ति को पढ़ते हैं। शायद यही कारण है कि उनके स्केच देखने वाले को ऐसा प्रतीत होता है मानो चित्र काग़ज़ से बाहर आकर संवाद कर रहा हो। आज के डिजिटल और रंगीन माध्यमों के युग में पेंसिल स्केच को चुनना स्वयं में एक चुनौती है। भाई जी ने इस चुनौती को स्वीकार नहीं किया, उसे साधना में बदल दिया। उनकी रेखाएँ न तो अनावश्यक गाढ़ी होती हैं, न ही कमजोर। प्रकाश और छाया का संतुलन, चेहरे की संरचना, आंखों की गहराई और भावों की सूक्ष्मता सब कुछ एक अनुशासित संयम के साथ उभरता है। चेहरे नहीं, चेतना उकेरते हैं। भाई जी की कला की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वे केवल चेहरे की समानता तक सीमित नहीं रहते। वे आँखों में छिपे विचार, मौन में छिपी पीड़ा मुस्कान के पीछे का अनुभव और ललाट पर अंकित समय सब कुछ रेखाओं में उतार देते हैं। कला केवल रंगों या रेखाओं का संयोजन नहीं होती, वह साधना है—जो व्यक्ति के जीवन, संस्कार और संवेदनाओं से जन्म लेती है। ऐसी ही एक साधना के अनन्य साधक हैं भाई जी से बातचीत करने के लिए मै उनके हरीनगर निवास पर पहुंचा, प्रस्तुत है उनसे बातचीत के प्रमुख अंश -

जन्म और पारिवारिक पृष्ठभूमि-

एल के भाई जी का जन्म 14 फरवरी 1969 को राजस्थान के झुंझुनूं जिले के ऐतिहासिक कस्बे चिड़ावा में एक सामान्य स्वर्णकार परिवार में हुआ। भाई जी, बाबूलाल सोनी और सुमित्रा देवी के चार पुत्रों में सबसे छोटे पुत्र है।। बचपन से ही वे चंचल, जिज्ञासु और कुशाग्रबुद्धि के धनी रहे। बाल्यावस्था में ही उनके अंदर छिपे कलाकार ने स्वयं को अभिव्यक्त करना शुरू कर दिया था। उन्हें चित्रकारी का गहरा शौक था। उनके पिता श्री बाबू लाल सोनी ने पुत्र की इस रुचि को मात्र शौक न समझकर, एक संभावना के रूप में पहचाना और उसे पूरा प्रोत्साहन दिया। कक्षा 6 से 9 तक विद्यालय स्तर पर निरंतर चित्रकारी में प्रथम स्थान प्राप्त करना, उनके बढ़ते आत्मविश्वास और प्रतिभा का प्रमाण था। धीरे-धीरे वे मित्रो, परिवारजनों तथा देवी-देवताओं के पेंसिल स्केच बनाने लगे। कला के प्रति उनकी लगन और जुनून ने उनकी प्रतिभा को निरंतर निखार दिया। उन्होंने चिड़ावा कॉलेज से स्नातक की शिक्षा प्राप्त की।

दिल्ली प्रवास

1991 में उनका परिवार व्यवसायिक कारणों से चिड़ावा से दिल्ली आ गया। यहाँ उन्होंने पारिवारिक परंपरा के अनुरूप ज्वेलरी व्यवसाय को अपनाया, किंतु व्यावसायिक व्यस्तताओं के बावजूद उन्होंने अपने भीतर के कलाकार को कभी मरने नहीं दिया। पेंसिल और काग़ज़ आज भी उनके जीवन के अभिन्न अंग बने रहे।

व्यक्तित्व और 'भाई जी' की पहचान

उनका सरल, सौम्य और मधुर व्यवहार, कला के साथ-साथ सामाजिक, धार्मिक और आध्यात्मिक कार्यों में सक्रिय सहभागिता—इन सभी गुणों ने उन्हें समाज में एक नई पहचान दिलाई। यही कारण है कि वे केवल एल के सोनी नहीं, बल्कि स्नेह और सम्मान से 'भाई जी' के नाम से पहचाने जाने लगे। संवाद के एक क्षण में वे अत्यंत स्पष्ट शब्दों में कहते हैं कि उनके जीवन में कला और व्यवसाय की सीमाएँ कभी गड्डमड्ड नहीं रहीं। उनके लिए चित्रकारी साधन नहीं, साधना रही है। उन्होंने कला को कभी बाज़ार की माँग या लाभ के तराज़ू पर नहीं तौला। परिवार के संचालन, उत्तरदायित्व और सामाजिक दायित्वों के लिए उन्होंने व्यवसाय को माध्यम बनाया, जबकि कला को उसकी पवित्र स्वतंत्रता के साथ सुरक्षित रखा। वे मानते हैं कि जिस दिन कला लाभ की शर्तों में बँध जाती है, उसी दिन उसकी आत्मा सीमित हो जाती है।

दांपत्य जीवन और परिवार

28 जून 1993 को भाई जी का विवाह डिंपल सोनी से हुआ। पत्नी के सरल, सहयोगी और प्रेरणादायक स्वभाव ने उनके जीवन को और संतुलित किया। इस संतुलन के पीछे परिवार का मौन लेकिन सशक्त सहयोग रहा है। पत्नी डिंपल ने उनके भीतर के कलाकार को सदैव समझा और संबल दिया। उन्होंने कभी कला को समय की बर्बादी नहीं माना, बल्कि उसे जीवन का आवश्यक श्वास समझा। बच्चों ने भी अपने-अपने स्तर पर पिता की साधना को सम्मान दिया। उनकी चार संतानें हैं जिनमें बड़ा पुत्रः लवकांत रजवाड़ा ज्वेलरी व्यवसाय में संलग्न है, बड़ी पुत्रीः लवीना विष्णु विवाहित है। छोटी पुत्री लवन्या बैंक में प्रोबेशनरी ऑफिसर है तो छोटा पुत्र क्रश अध्ययनरत, साथ ही पिता की कला विरासत को आगे बढ़ाते हुए चित्रकारी में रुचि रखता है।

हिन्दू राष्ट्र का 'लोगो' है लखनऊ का प्रेरणा पार्क

(आलेख : बादल सरोज)

अंततः साल के आख़िरी दिनों में लखनऊ को एक और विराट पार्क – बाकी पार्कों से हर तरह से भिन्न पार्क – मिल ही गया। स्वयं प्रधानमंत्री इसके दरो-दीवार के बारे में बताने के लिए लखनऊ पहुंचे और संघ-जनसंघ-भाजपा के तीन शिखर पुरुषों पंडित श्यामाप्रसाद मुख़र्जी, पंडित दीनदयाल उपाध्याय और पंडित अटल बिहारी वाजपेई की 65-65 फीट ऊंची प्रतिमाओं वाले इस पार्क का उदघाटन किया। इस मौके पर अपने भाषण में अपनी आदत के अनुरुप मोदी ने चुनाव-चुनाव का खेल खेला और इन 'शिखर पुरुषों' से ज्यादा, सामयिक राजनीति के बीहड़ पर मुखर होकर बोला। कुल 230 करोड़ रुपए खर्च से, कोई 6300 वर्गमीटर में फैले इस पार्क – जिसे प्रेरणा पार्क का नाम दिया गया है – में एक लगभग 98000 वर्ग फीट क्षेत्र में फैला संग्रहालय भी है। इसे भाजपा के चुनाव चिन्ह कमल के आकार में डिजाइन किया गया है।

दावा किया गया है कि इसमें यहां उन्नत डिजिटल तकनीक से भारत की यात्रा और इन दूरदर्शी नेताओं के योगदान को प्रदर्शित किया गया है। बताया जाता है कि इस 'दूरदर्शी' नेताओं के 'योगदान' के काल खण्डों को जनसंघ काल, भाजपा काल में भी बांटा गया है। इसका उदघाटन करते हुए प्रधानमंत्री मोदी ने दावा किया कि "ये राष्ट्र प्रेरणा स्थल उस सोच का प्रतीक है, जिसने भारत को आत्मसम्मान, एकता और सेवा का मार्ग दिखाया है। डॉ.श्यामा प्रसाद मुखर्जी, पंडित दीन दयाल उपाध्याय और अटल बिहारी वाजपेयी की विशाल प्रतिमाएं जितनी ऊंची हैं, इनसे मिलनी वाली प्रेरणाएं उससे भी बुलंद हैं।" इस परिसर को "भारतीय राजनीतिक चिंतन, राष्ट्र निर्माण और सार्वजनिक जीवन में उनके ऐतिहासिक योगदान का प्रतीक" बताया गया। हिंदी व्याकरण की भाषा में जब तुलना और तुलना किये जाने वाले में – उपमेय और उपमान में -- कोई अंतर नहीं रह जाता, तो जो बनाता है उसे रूपक कहते हैं : यह पार्क और परिसर उसी तरह का रूपक, विडम्बना का रूपक है।

कुनबे के साथ असल समस्या यह है कि उसके पास न बताने के लिए कोई विरासत है, न दिखाने के लिए देशहित में किया गया कोई योगदान है, न गिनाने के लिए कोई सचमुच का महान है। इस कमी को छुपाने के लिए कुनबा उठाईगिरी करता रहता है : कभी सरदार पटेल और लालबहादुर शास्त्री को अपने पाले में लाने की, तो कभी अपनों के बीच से दो-चार का गुब्बारा फुलाने की असफल कोशिश की जाती रहती हैं। मगर कुंठा इतनी गहरी है कि जाती ही नहीं है। कुछ वक़्त पहले केंद्रीय मंत्री शिवराज सिंह चौहान द्वारा भाजपा कार्यकर्ताओं से प्रचार कर-कर के मोदी 'जी' को नेहरू जैसा साबित करने का आव्हान किया जाना इसी कुंठा का इजहार था। एक तरह से इस सच की स्वीकारोक्ति थी कि कुनबा लाख जतन प्रयत्न कर ले, कांसा सोना नहीं हो सकता।

पूरे सौ साल के हुए संघ और सत्ता पर कोई दो दशक के परोक्ष-अपरोक्ष वर्चस्व, मीडिया पर लगभग सम्पूर्ण प्रभुत्व के बावजूद किसी महान को खड़ा न कर पाना इस बात का प्रमाण है कि महानता एक ऐसी स्थिति है, जिसे खरीदा या उत्पादित नहीं किया जा सकता। यह पार्क इस कुनबे की इस मामले में अति-दरिद्रता का स्मारक भी है। अब यदि मोदी जी यह दावा करते हैं कि "ये तीनों विशाल प्रतिमाएं जितनी ऊंची हैं, इनसे मिलनी वाली प्रेरणाएं उससे भी बुलंद हैं", तो क्यों न लगे हाथ इस बात की जांच कर ही ली जाए कि इन प्रतिमाओं में जिनके नक्श उभारे गए हैं, उनके ऐसे प्रणम्य और असाधारण योगदान क्या-क्या हैं, जिनसे प्रेरणा ली जा सकती है।

शुरुआत शुरू से – उन डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी से -- ही करते हैं, जो इस कुनबे की राजनीतिक भुजा के पितृपुरुष भी हैं। गांधी हत्याकांड के बाद प्रतिबंधित, लांछित और बहिष्कृत होने के बाद जब आरएसएस ने अपनी राजनीतिक पार्टी – जनसंघ -- बनाने का फैसला लिया, तब उन्होंने पूर्ववर्ती राजनीतिक अवतार हिन्दू महासभा के नेता डॉ. मुखर्जी को अपना पहला अध्यक्ष बनाया। इनके 'योगदानों' से ग्रन्थ के ग्रन्थ भरे पड़े हैं। सुभाष चन्द्र बोस, आजाद हिन्द फ़ौज, स्वतन्त्रता संग्राम के प्रति इनका द्वेष और द्रोह कितना महान था, इसका जिक्र पिछले अंक में किया जा चुका है। उसे दोहराने की बजाय जिज्ञासा के लिए उनके कुछ ही कामों की याद दिलाकर कुनबाधीशों से यह पूछना प्रासंगिक होगा कि इनमें से किसको वे 'बुलंद प्रेरणादायी' मानते हैं।

सावरकर साहब की अध्यक्षता वाली हिन्दू महासभा के नेता मुखर्जी इन कथित हिन्दू वीरों द्वारा मुस्लिम लीग के साथ मिलकर चलाई गयी – सिंध, उत्तर-पश्चिम सीमा प्रांत और बंगाल की – तीन सरकारों में से एक बंगाल की फजलुल हक की अगुआई वाली सरकार में मंत्री बने और मंत्री के रूप में सुभाष बोस की आजाद हिन्द फ़ौज से निबटने और 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन को कुचलने की योजनाएँ बना-बनाकर वायसरॉय को सौंपते रहे। ध्यान रहे ये जनाब वही फजलुल हक थे, जिन्होंने 1940 में मुस्लिम लीग के अधिवेशन में पाकिस्तान निर्माण का प्रस्ताव पेश किया था। बाद में 1946 में इन्हीं डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी ने बंगाल विभाजन का समर्थन किया।

जिस कश्मीर और धारा 370 के मुद्दे पर जेल में हुई, उनकी मृत्यु को कुनबा शहादत और कुर्बानी बताता है, उस पर भी उनकी भूमिका वैसी नहीं थी, जैसी बताई जाती है। कश्मीर के ताजे इतिहास के दो विशेषज्ञों ने इसे तथ्यों के साथ सप्रमाण उजागर किया है। ए.जी. नूरानी आक्सफोर्ड युनिवर्सिटी प्रेस, द्वारा प्रकाशित अपनी महत्त्वपूर्ण किताब 'आर्टिकल 370 : ए कानस्टिट्यूशनल हिस्ट्री ऑफ जम्मू एण्ड कश्मीर' में पेज 480 पर दर्ज करते है कि डॉ. मुखर्जी ने शुरुआत में धारा 370 की अनिवार्यता को स्वीकारा था। उन्होंने इस बात से रजामंदी जताई थी कि कश्मीर को स्वायत्तता दी जानी चाहिए।

जनसंघ के पूर्व अध्यक्ष बलराज मधोक ने भी लिखा है कि "डॉ. मुखर्जी कश्मीर को स्वायत्तता देने के समर्थक थे, उन्होंने बाद में आरएसएस के दवाब में अपनी इस राय को बदला था।" कश्मीर के अग्रणी पत्रकार बलराज पुरी 'द ग्रेटर कश्मीर' के अपने आलेख में डॉ. मुखर्जी के 9 जनवरी 1953 को लिखे पत्र का हवाला देते है, जिसमें उन्होने लिखा था कि ''हम इस बात पर तुरंत सहमत होंगे कि घाटी में शेख अब्दुल्ला की अगुआई में सरकार को विशेष तरीके से (मतलब धारा 370 के अंतर्गत), तब तक, जब तक वह चाहते हों, चलने दिया जाए, अलबत्ता जम्मू और लद्दाख का भारत के साथ तुरंत एकीकरण करना चाहिए।'' अब यह तो कुनबा ही बता सकता है, इनमें से ऐसा कौन सा योगदान है, जिनसे वह खुद प्रेरणा लेता है?

रही बात उस पार्टी जनसंघ की, जिसके वे संस्थापक अध्यक्ष रहे, सो रिकॉर्ड गवाह है कि उसके साथ भी उनके रिश्ते कोई ख़ास नहीं बचे थे। उनके असामयिक निधन के बाद जनसंघ के दूसरे अध्यक्ष बने पंडित मौलिचन्द्र शर्मा अपनी किताब में कहते हैं कि "पदाधिकारियों के चयन से लेकर फैसले लेने तक पार्टी में कोई लोकतंत्र नहीं है। सारे हुकुमनामे और फतवे आरएसएस देता है। पार्टी नाम की कोई चीज ही नहीं है।" उन्होंने यह भी कहा कि "श्यामा प्रसाद मुखर्जी भी आरएसएस के इस दैनंदिन हस्तक्षेप से आजिज आ गए थे और अपने कश्मीर दौरे से लौटकर इस्तीफा देने का मन बना चुके थे।" इतना सब कुछ होने के बाद भी यह कुनबे की दरिद्रता है कि वह उन्ही डॉ. मुखर्जी का मुकुट धारण करने के लिए विवश है।

प्रेरणा पार्क में दूसरी मूर्ति पंडित अटल बिहारी वाजपेयी की है। वक्तृत्व कला में निपुण, कहीं न पहुंचाने और अक्सर कुनबे के अपराधों को ढांकने के लिए शब्दाडम्बर का माया जाल रचने में पारंगत ये वाजपेयी ही प्रधानमंत्री थे, जब आजादी के बाद का सबसे भयानक गुजरात नरसंहार हुआ था। राजनीतिक समीक्षकों ने उन्हें ठीक ही 'डेविल्स एडवोकेट' का संबोधन दिया था। गुजरात नरसंहार के बाद दिया गया वाजपेयी का 'राजधर्म निबाहने' जुमला बार-बार याद दिलाया जाता है, मगर जिस भाषण में उन्होंने यह कथित आप्तवचन बोला था, उसी में उन्होंने 'हर मुसलमान आतंकी नहीं है, मगर हर आतंकी मुसलमान है' का फतवा भी दिया था। यह अत्यंत आपत्तिजनक ही नहीं, पूरी तरह झूठा और निराधार भी था, क्योंकि भारत में तब तक : महात्मा गांधी हत्याकांड, इंदिरा गांधी और राजीव गाँधी की हत्याओं से लेकर बाबरी ध्वंस तक, जिन्हें आतंकी घटना कहा जा सकता है, उन घटनाओं में कोई मुस्लिम लिप्त नहीं पाया गया था।

डॉ. मुखर्जी की ही तरह स्वतन्त्रता संग्राम में अटल बिहारी वाजपेयी की भी भूमिका आजादी के आन्दोलनकारियों को सजा दिलवाने में अंग्रेजों का साथ देने की ही थी। भारत छोड़ो आन्दोलन के दौरान 27 अगस्त 1942 को बटेश्वर में हुई घटना को लेकर द्वितीय श्रेणी मजिस्ट्रेट एस हसन की अदालत में 1 सितम्बर 1942 दिया गया उनका इकबालिया बयान लीलाधर वाजपेयी सहित अन्य स्वतंत्रता सेनानियों की सजा का आधार बना था। इस बयान में उन्होंने कहा था कि "कुछ लोगों ने भाषण दिए और वन विभाग के कार्यालय को नुकसान पहुँचाया था। उन्होंने कहा कि वह केवल एक दर्शक के रूप में भीड़ का हिस्सा थे और उन्होंने किसी भी सरकारी इमारत को गिराने में मदद नहीं की।" बाद में वरिष्ठ पत्रकार मानिनी चटर्जी द्वारा इस मामले में तैयार की गयी, फरवरी 1988 के फ्रंटलाइन में छपी एक खोजी रिपोर्ट में जब अटल बिहारी वाजपेई से उनका पक्ष पूछा गया, तो उन्होंने बाकायदा लिखित में जवाब देकर यह माना था कि वह इकबालिया बयान और उस पर किये गए दस्तखत उन्हीं के थे। अब प्रेरणा पार्क में खडी उनकी 65 फीट की ऊंची मूर्ति किस तरह की बुलंद प्रेरणा देगी, यह सोचने की बात है।

तीसरी प्रेरणास्रोत मूर्ति पंडित दीनदयाल उपाध्याय की बताई गयी है। दीखने में सीधे सरल और निस्पृह दिखने वाले उपाध्याय जी को तबका जनसंघ और आज की भाजपा उस वैचारिक राजनीतिक दिशा का प्रणेता मानती है, जिसे 'एकात्म मानववाद' के नाम से जाना जाता है। इसमें कितना विचार, कितना आदर्श और कितना मार्ग है यह आज तक स्पष्ट नहीं हुआ है। स्पष्टता तो खुद, बकौल भाजपा, आज तक संदेहों से घिरी उनकी दुर्घटना मृत्यु के बारे में भी नहीं है। उनकी 'हत्या' की जांच करने की मांग उठाने वाला जनसंघ और उसके बाद भाजपा कई-कई बार उत्तरप्रदेश और केंद्र की सरकारों में रह चुकी, मगर जांच उसने भी नहीं कराई। अलबत्ता जनसंघ के पूर्व अध्यक्ष बलराज मधोक ने इसे लेकर बेहद गंभीर सवाल उठाये है।

भारतीय जनसंघ के संस्थापक मधोक ने अपनी आत्मकथा ₹ज़िंदगी का सफ़र₹ में दीनदयाल उपाध्याय की मृत्यु को एक दुर्घटना मानने से इंकार किया। उन्होंने आरोप लगाया कि यह एक साजिश के तहत की गई हत्या थी, जिसमें राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और जनसंघ के कुछ शीर्ष नेता शामिल थे। उन्होंने साफ़-साफ़ तत्कालीन जनसंघ के अध्यक्ष अटल बिहारी वाजपेयी और नानाजी देशमुख का नाम भी लिया था। उनके अनुसार, 'इन नेताओं का मकसद जनसंघ पर नियंत्रण हासिल करना था। उपाध्याय के अध्यक्ष बनने के बाद उन्होंने वाजपेयी और देशमुख को महत्वपूर्ण पदों से हटा दिया था, जिससे वे उपाध्याय को अपने में रास्ते का रोड़ा मानने लगे।' आत्मकथा में उन्होंने यह भी लिखा कि उपाध्याय कुछ नेताओं के अनैतिक आचरण और पार्टी में ₹चरित्रहीन₹ लोगों को बढ़ावा न देने के पक्षधर थे, जिसके कारण वे कुछ स्वार्थी तत्वों के निशाने पर आ गए। मधोक ने यह भी दावा किया कि वाजपेयी और अन्य नेताओं ने उन पर (मधोक पर) दबाव डाला था कि वे जनता के बीच उपाध्याय की मौत को एक दुर्घटना के रूप में पेश करें।

इस तरह यह साफ़ हो जाता है कि प्रेरणा पार्क का उद्देश्य प्रेरणा-व्रेरणा देने का नहीं, इससे आगे का है और कुछ और ही है। यह क्या है, इसे समझने के लिए इसी दिसम्बर में कोलकता में किये संघ सुप्रीमो मोहन भागवत के 'भारत हिन्दू राष्ट्र था, हिन्दू राष्ट्र है, हिन्दू राष्ट्र रहेगा' के घोष की निरंतरता में पढ़ना और हिन्दू राष्ट्र की उनकी वास्तविक धारणा से जोड़ कर देखना होगा। ज्यादा विस्तार में जाने की बजाय कुनबे के दो सच्चे प्रेरणा स्रोतों की हिन्दू राष्ट्र की प्रस्थापना को ही बांच लेते हैं।

इनके आदि पुरुष और हिंदुत्व के जनक सावरकर के अनुसार, "मनुस्मृति वह शास्त्र है, जो हमारे हिन्दू राष्ट्र के लिए वेदों के बाद सबसे अधिक पूजनीय है और जो प्राचीन काल से ही हमारी संस्कृति-रीति-रिवाज, विचार और व्यवहार का आधार बना हुआ है। सदियों से इस पुस्तक ने हमारे राष्ट्र के आध्यात्मिक और दैवीय पथ को संहिताबद्ध किया है। आज भी करोड़ों हिन्दू अपने जीवन और व्यवहार में जिन नियमों का पालन करते हैं, वे मनुस्मृति पर आधारित हैं। आज मनुस्मृति हिंदू कानून है। यह मौलिक है।"

इनके प.पू. गुरुजी गोलवलकर इसे और आगे बढाते हुए कहते हैं कि : ₹आज हम अज्ञानतावश वर्ण व्यवस्था को नीचे गिराने का प्रयास करते हैं। लेकिन यह इस प्रणाली के माध्यम से था कि स्वामित्व को नियंत्रित करने का एक बड़ा प्रयास किया जा सकता था ... समाज में कुछ लोग बुद्धिजीवी होते हैं, कुछ उत्पादन और धन की कमाई में विशेषज्ञ होते हैं और कुछ में श्रम करने की क्षमता है। हमारे पूर्वजों ने समाज में इन चार व्यापक विभाजनों को देखा। वर्ण व्यवस्था का अर्थ और कुछ नहीं है, बल्कि इन विभाजनों का एक उचित समन्वय है और व्यक्ति को एक वंशानुगत के माध्यम से कार्यों का विकास, जिसके लिए वह सबसे उपयुक्त है, अपनी क्षमता के अनुसार समाज की सेवा करने में सक्षम बनाता है। यदि यह प्रणाली जारी रहती है, तो प्रत्येक व्यक्ति के लिए उसके जन्म से ही आजीविका का एक साधन पहले से ही आरक्षित है।₹ (ऑर्गनाइज़र, 2 जनवरी, 1961, पृष्ठ 5 और 16 में प्रकाशित)

इस हिसाब से देखें तो लखनऊ के बाकी पार्कों में से यह एकदम अलग हैं : बाकियों में सुधारक हैं, जड़ता तोड़ने वाले हैं, समता है और इधर देखें, तो पंडित मुखर्जी हैं, पंडित वाजपेयी हैं, पंडित दीनदयाल उपाध्याय हैं : तीनो के तीनों सावरकर और गोलवलकर के हिदू राष्ट्र के शिरोमणि ब्राह्मण हैं। इस तरह यह पार्क नहीं है, नई वर्ष में जारी किया संघ – भाजपा के हिन्दू राष्ट्र का 'लोगो' – शुभंकर है। ऐसा शुभंकर, जो देश और उसके लोगो के लिए पूरी तरह अशुभंकर है।

और अंत में कुछ बातें संकेतों में भी बयान हो जाती हैं। जैसे पार्क के उदघाटन के समय मोदी द्वारा दी गयी सूचना कि "जिस जमीन पर यह प्रेरणा स्थल बना है, उसकी 30 एकड़ से भी ज्यादा जमीन पर पहले कूड़े का पहाड़ बना हुआ था।₹ इसे भावार्थ में समझना होगा। अब तक हिन्दू राष्ट्र की धुन पर मुंडी हिला रही भक्त भेड़ों के लिए यह खबर काम की हो सकती है कि इस कथित राष्ट्र प्रेरणा स्थल में फेंका हुआ खाना खाने से 170 भेड़ें ठौर मर गयीं, 200 की हालत नाजुक बनी हुई है।

(लेखक लोकजतन के संपादक और अखिल भारतीय किसान सभा के संयुक्त सचिव हैं।

कृत्रिम रोशनी की चकाचौंध के खतरे

डॉ. विजय गर्ग

हालिया वैज्ञानिक अध्ययन हमें जिस गंभीर खतरे से आगाह कर रहे हैं, न केवल चौंकाने वाला है, बल्कि हमारी पूरी आधुनिक जीवनशैली पर बड़ा प्रश्नचिह्न लगाता रात का यह अनावश्यक प्रकाश हमारे दिल की सेहत के लिए एक धीमा जहर बन गया है। हममें से अधिकांश लोग इस एक खतरे से पूरी तरह अनजान हैं। हम रोशनी को सुरक्षा और सकारात्मकता से जोड़ते हैं, जबकि जबकि अंधेरे को डर से, लेकिन जीव विज्ञान की दृष्टि से हकीकत इसके ठीक विपरीत ।

मानव सभ्यता के विकास की कहानी में आग के आविष्कार के बाद, बिजली के बल्ब का आविष्कार सबसे क्रांतिकारी माना गया। इसने मनुष्य को अंधेरे पर विजय दिलाई और रात को दिन में बदल कर हमारी कार्यक्षमता को कई गुना बढ़ा दिया। हमने शहरों को जगमग कर दिया, घरों को रोशन किया और अपनी रातों को भी दिन की तरह सक्रिय बना लिया। हम इसे विकास और आधुनिकता का नाम देते हैं, लेकिन आज यही विजय हमारी सबसे बड़ी जैविक पराजय का कारण बनती जा रही है। जिस कृत्रिम रोशनी को हमने अपनी सुविधा के लिए ईजाद किया था, वह अब एक ऐसे अदृश्य खतरे में तब्दील हो चुकी है, जो हमारे शरीर के सबसे महत्त्वपूर्ण अंगों खासकर हमारे दिल को अपना शिकार बना रही है।

हालिया वैज्ञानिक अध्ययन हमें जिस गंभीर खतरे से आगाह कर रहे हैं, न केवल चौंकाने वाला है, बल्कि हमारी पूरी आधुनिक जीवनशैली पर बड़ा प्रश्नचिह्न लगाता रात का यह अनावश्यक प्रकाश हमारे दिल की सेहत के लिए एक धीमा जहर बन गया है। हममें से अधिकांश लोग इस एक खतरे से पूरी तरह अनजान हैं। हम रोशनी को सुरक्षा और सकारात्मकता से जोड़ते हैं, जबकि जबकि अंधेरे को डर से, लेकिन जीव विज्ञान की दृष्टि से हकीकत इसके ठीक विपरीत। हाल ही में हुए व्यापक और गहन शोधों इस बात की पुष्टि की है कि रात के समय कृत्रिम प्रकाश के संपर्क में रहना केवल हमारी नींद खराब नहीं करता, बल्कि यह हृदय संबंधी जानलेवा बीमारियों का सीधा और प्रमुख कारण बन रहा है। ये अध्ययन उन करोड़ों लोगों के लिए एक चेतावनी है, जो मानते हैं कि रात में थोड़ी सी रोशनी, टीवी या फोन का इस्तेमाल नुकसानदेह नहीं है।

आंकड़ों की बात करें तो स्थिति बेहद भयावह नजर आती है। शोधकर्ताओं ने पाया है कि जो लोग रात में अधिक तेज या लगातार कृत्रिम रोशनी के संपर्क में रहते हैं, उनमें दिल काम न करने का खतरा 56 फीसद तक बढ़ जाता है। चिकित्सा विज्ञान इसे खतरनाक माना गया है। । इसी तरह, दिल के दौरे का खतरा 47 फीसद तक और स्ट्रोक या अन्य जानलेवा स्थितियों का जोखिम तीस फीसद से अधिक पाया गया है। ये केवल कागजी संख्या नहीं हैं, बल्कि यह उन लाखों जिंदगियों का संकेत हैं, जो अपनी अज्ञानता के कारण समय से पहले काल गाल में समा सकती हैं। इस शोध का सबसे अधिक चिंताजनक पहलू सामने आता है कि यह जोखिम उन लोगों में भी समान रूप से देखा गया, जो अपनी सेहत और शारीरिक गतिविधियों को लेकर बेहद सतर्क थे।

हम अक्सर सोचते हैं कि अगर अच्छा और संतुलित भोजन कर रहे हैं, नियमित रूप से व्यायाम कर रहे हैं, धूम्रपान नहीं करते और शराब से दूर रहते हैं, तो हमारा दिल पूरी तरह सुरक्षित है। मगर यह नया अध्ययन हमारी इस गलतफहमी को पूरी तरह ध्वस्त कर देता है। वैज्ञानिकों ने पाया कि कृत्रिम रोशनी का दुष्प्रभाव उन लोगों पर भी स्पष्ट रूप से देखा गया, जिनकी जीवनशैली आदर्श थी। इसका सीधा और स्पष्ट अर्थ यह है कि रात का प्रकाश भी एक बड़ा जोखिम है। आप दिन भर

कितना भी दौड़ लें या कितना भी पौष्टिक आहार ले लें, यदि आप रात के समय अंधेरे में नहीं सोते हैं, तो आपका दिल खतरे में है। यह तथ्य स्वास्थ्य जगत में एक नए प्रतिमान को स्थापित करता है, जहां अंधेरा अब विटामिन और व्यायाम की तरह ही अच्छे स्वास्थ्य का एक अनिवार्य स्तंभ बन गया है। इस खतरे को समझने के लिए हमें मानव शरीर के विकासवादी इतिहास और उसकी जैविक संरचना को समझना होगा।

लाख वर्षों से मानव शरीर पृथ्वी के घूमने और सूर्य के उगने ढलने के प्राकृतिक चक्र के साथ तालमेल बना कर विकसित हुआ है। हमारे पूर्वज दिन के उजाले में शिकार के अलावा अन्य काम करते थे और रात के अंधेरे में विश्राम करते थे। लाखों वर्षों की इस प्रक्रिया ने हमारे डीएनए में एक 'जैविक घड़ी' को स्थापित कर दिया है। यह घड़ी प्रकाश और अंधकार के संकेतों पर चलती अंधेरा छाता है, हमारी आंखो जस ही सूरज ढलता है और कु। के रेटिना के माध्यम से दिमाग को संदेश मिलता है कि अब काम बंद करने और आराम करने का समय है। इस संदेश के मिलते ही हमारा मस्तिष्क पीनियल ग्रंथि के जरिए 'मेलाटोनिन' बनाना शुरू कर देता है। मेलाटोनिन नामक एक बहुत को आम भाषा में अक्सर केवल 'नींद का हार्मोन' समझा जाता है, लेकिन वास्तव में यह उससे। कहीं अधिक अहम होता है।

जब रात में मेलाटोनिन का स्राव होता है, तो यह हमारे शरीर के तापमान को थोड़ा कम करता है, हमारे रक्तचाप को घटाता है और दिल की धड़कन को धीमा एवं स्थिर करता है। यह वह समय होता है, जब हमारा दिल जो दिन भर बिना रुके हजारों लीटर खून पंप करता है और हमारा मानसिक एवं शारीरिक तनाव झेलता है, वह थोड़ा सुस्ताता है और अपनी मरम्मत करता है। दिन की भाग-दौड़, चिंता और प्रदूषण से हमारी रक्त वाहिकाओं तथा हृदय की मांसपेशियों में जो सूक्ष्म टूट-फूट होती है, उसे ठीक करने का काम इसी अंधेरे के दौरान मेलाटोनिन की देखरेख में संभव हो पाता है। यह एक 'प्राकृतिक मरम्मत प्रणाली' है, जो हमारे शरीर को अगले दिन के लिए तरोताजा करती है।

शहरीकरण इस समस्या को और विकराल बना दिया है। हम ऐसे शहरों में रहते हैं, जो कभी नहीं सोते और जगमगाते रहते हैं। इसे प्रकाश प्रदूषण कहा जाता है। पहले प्रदूषण का मतलब केवल हवा या पानी का गंदा होना था, लेकिन अब प्रकाश ने भी प्रदूषण का रूप ले लिया है, जो हमारे स्वास्थ्य को प्रतिदिन नष्ट कर रहा है। वैज्ञानिक अब इस बात पर हैं कि रात का प्रकाश मधुमेह और मोटापे जैसी चयापचय संबंधी समस्याओं को भी जन्म देता है, जो आगे चल कर हृदय रोगों का कारण बनते हैं। मगर इस गंभीर खतरे को टालना पूरी तरह से हमारे अपने हाथों में है। सबसे । सबसे पहले हम अपने शयनकक्ष में अंधेरे को तवज्जो दें। सुनिश्चित करें कि कमरे में किसी भी स्रोत से कोई भी रोशनी न पाए। सोने से से कम एक घंटा पहले मोबाइल फोन, लैपटाप, टैबलेट और टीवी को बंद कर दें। इन उपकरणों से निकलने वाली नीली रोशनी मेलाटोनिन हार्मोन उत्पादन को रोकने में सबसे आगे होती है।

असल में रात का अंधेरा केवल प्राकृतिक घटना नहीं बल्कि हमारे शरीर और दिल के लिए एक अनिवार्य स्वास्थ्य आवश्यकता है। हमने आवश्यकता अपनी सुविधा के लिए इस अंधेरे पर जो रोशनी थोप दी है, वह हमारे जीवन को छोटा कर सकती है। हमें इस बात को गंभीरता से समझना होगा कि जैसे अच्छा भोजन और व्यायाम जरूरी है, वैसे ही गहरी और अंधेरी नींद भी हृदय के स्वास्थ्य की कुंजी है। अपने दिल को स्वस्थ रखने लिए हमें रातों को फिर से प्राकृतिक रूप में अपनाना होगा। यह छोटा सा बदलाव हमारे दिल को एक लंबा और स्वस्थ जीवन जीने का मौका दे सकता है। याद रखना चाहिए कि जब बाहर की बत्तियां बुझती हैं, तभी हमारे भीतर जीवन की लौ अपनी पूरी क्षमता से जल पाती है।

इंटरनेट का पढ़ाई पर प्रभाव

डॉ विजय गर्ग

आस्ट्रेलिया सरकार ने बच्चों द्वारा इंटरनेट मीडिया का उपयोग करने पर प्रतिबंध लगा दिया है। बच्चों के लिए इंटरनेट मीडिया पर प्रतिबंध लगाने का यह विश्व में अपनी तरह का पहला कदम है। इसका उद्देश्य 16 साल से कम आयु के बच्चों को लत लगाने वाले एल्गोरिदम, आनलाइन फ्राड और साइबरबुलिंग आदि से बचाना है। कोई भी देश अब तक इतने बड़े पैमाने पर ऐसा कानून नहीं ला सका है। ऐसे में दूसरे देशों के कानून बनाने वाले लोग भी आस्ट्रेलिया के इस कदम पर बारीकी से नजर रख रहे हैं।

शिक्षा से जुड़े विशेषज्ञों का एक मत यह भी है कि इंटरनेट मीडिया के प्रतिबंधित किए जाने से बच्चों को पढ़ाई-लिखाई के प्रति एकाग्र किया जा सकता है। वस्तुतः स्मार्टफोन और लैपटाप, टैबलेट आदि उत्पाद की सुलभता और इंटरनेट की आसान पहुंच के कारण भारत में बड़ी संख्या में बच्चे पढ़ाई के प्रति एकाग्रचित्त नहीं हो पा रहे हैं। रही-सही कसर कौरोना काल में सामने आई, जब सभी शिक्षण संस्थान बंद कर दिए गए और विकल्प के रूप में आनलाइन पढ़ाई की व्यवस्था की गई। हालांकि इस व्यवस्था से बच्चों को पढ़ाई के प्रति बांधकर रखा जरूर गया, लेकिन इसका एक दुष्परिणाम यह भी हुआ कि बड़ी संख्या में बच्चे डिजिटल विधा में अधिक समय बिताने लगे, जिससे उनकी पढ़ाई प्रभावित हुई।

यह सही है कि वर्तमान सदी को डिजिटल युग कहा जाता है। स्मार्टफोन, इंटरनेट, एआइ, आनलाइन प्लेटफार्म और डिजिटल उपकरणों ने जीवन के हर क्षेत्र को प्रभावित किया है। शिक्षा भी इससे अछूती नहीं रही। विशेष रूप

से बच्चों की पढ़ाई पर डिजिटल युग का प्रभाव गहरा और दूरगामी है। यह प्रभाव सकारात्मक भी है और नकारात्मक भी। ऐसे में दोनों पक्षों को समझते हुए संतुलन बनाने की जरूरत है।

सकारात्मक प्रभाव डिजिटल युग ने बच्चों के लिए ज्ञान के द्वार खोल दिए हैं। पहले जहाँ जानकारी सीमित पुस्तकों व शिक्षकों तक सीमित थी, वहीं इंटरनेट के माध्यम से विश्व का समस्त ज्ञान एक क्लिक पर उपलब्ध है। बच्चे विभिन्न विषयों पर वीडियो देखकर एनिमेशन के माध्यम से कठिन अवधारणाओं की आसानी से समझ सकते हैं। कई विषयों में डिजिटल टूल्स सहायक सिद्ध हुए हैं। चूंकि आज के बच्चे कल के डिजिटल नागरिक हैं, ऐसे में उनके लिए तकनीकी ज्ञान अनिवार्य है। डिजिटल माध्यमों से बच्चों में आत्मनिर्भरता, समस्या समाधान क्षमता और रचनात्मक सेच का विकास भी होता है।

नकारात्मक प्रभाव जहाँ डिजिटल युग ने अनेक सुविधाएं दी हैं, वहीं इसके दुष्प्रभाव भी गंभीर हैं। सबसे बड़ी समस्या है ध्यान भटकना स्मार्टफोन, इंटरनेट मीडिया, आनलाइन गेम्स और मनोरंजन एस बच्चों का ध्यान पढ़ाई से दूर कर देते हैं। आनलाइन पढ़ाई के दौरान भी बच्चे अन्य एप्स में उलझ जाते हैं, जिससे सूखने की गुणवत्ता प्रभावित होती है। अत्यधिक स्क्रीन टाइम बच्चें के शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव डालता है। आंखों में जलन, सिरदर्द, नींद की कमी और मोटापा जैसी समस्याएं बढ़ रही हैं। मानसिक रूप से बच्चे चिड़चिड़े, तनावग्रस्त और अकेलेपन का शिकार हो सकते हैं। वास्तविक समाजिक संपर्क की कमी से उनके सामाजिक कौशल भी कमजोर हो सकते हैं। डिजिटल युग में एक और गंभीर समस्या है सोचने एवं विश्लेषण करने की क्षमता में कमी।

इंटरनेट पर हर प्रश्न का उत्तर उपलब्ध होने से बच्चे स्वयं सेचने के बजाय सीधे समाधान खोज लेते हैं। इससे रचनात्मकता और तार्किक क्षमता का विकास बाधित होता है।

माता-पिता की भूमिका डिजिटल युग में बच्चों की पढ़ाई को सही दिशा देने मैं माता-पिता और शिक्षकों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। अभिभावकों का बच्चों के साथ संवाद बनाए रखना, उनकी समस्याओं को समझना और उन्हें आफलाइन गतिविधियों के लिए प्रेरित करना आवश्यक है। शिक्षकों को भी डिजिटल शिक्षा का संतुलित उपयोग करना चाहिए। तकनीक को शिक्षा का साधन बनाया जाए, न कि उद्देश्य बच्चों को डिजिटल साक्षरता के साथ- साथ नैतिक शिक्षा देना भी समय की आवश्यकता है।

कायम रहे संतुलन डिजिटल युग को न पूरी तरह अपनाना समाधान है और न ही पूरी तरह नकारना आवश्यकता संतुलन की है। बच्चों को यह सिखाया जाना चाहिए कि तकनीक का उपयोग कैसे किया जाए, न कि तकनीक उनका उपयोग करे। डिजिटल और पारंपरिक शिक्षा के संयोजन से ही बच्चों का सर्वांगीण विकास संभव है। खेल, कला, योग, पुस्तक पढ़ने की आदत और पारिवारिक संवाद बच्चों के जीवन में आवश्यक हैं। यह भी सही है कि यदि डिजिटल तकनीक का उपयोग विवेकपूर्ण नियंत्रित और उद्देश्यपूर्ण ढंग से किया जाए तो यह बच्चों के उज्वल भविष्य की नींव बन सकती है अन्यथा, इसका दुरुपयोग शिक्षा और बाल विकास के लिए एक गंभीर खतरा बन सकता है।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब

एआई के "उपयोग" से परे: सहयोगात्मक बुद्धिमत्ता की ओर बदलाव

डॉ विजय गर्ग

एआई बूम के शुरुआती दिनों में, उपयोगिता पर ध्यान केंद्रित किया गया था। हमने पूछा, ₹मैं ईमेल लिखने के लिए इस टूल का उपयोग कैसे कर सकता हूँ?₹ या ₹मैं इसे एक छवि उत्पन्न करने के लिए कैसे उपयोग कर सकता हूं?₹ लेकिन जैसे-जैसे हम 2025 के अंत में प्रवेश कर रहे हैं, बातचीत मौलिक रूप से बदल गई है। हम एआई के ₹उपयोग₹ के युग से आगे बढ़कर सहयोगात्मक बुद्धिमत्ता के युग में प्रवेश कर रहे हैं। यह परिवर्तन एआई को एक उच्च गति वाले कैलकुलेटर के रूप में मानने से लेकर इसे एक सोच भागीदार के रूप में देखने तक का बदलाव दर्शाता है। --- 1। टूल्स से लेकर टीम के साथियों तक ₹एआई के उपयोग से परे₹ में सबसे महत्वपूर्ण बदलाव एजेंटिक एआई का उदय है। पारंपरिक चैटबॉट्स के विपरीत, जिन्हें लगातार संकेत देने की आवश्यकता होती है, ये स्वायत्त एजेंट बहु-चरणीय कार्यप्रवाहों की योजना बना सकते हैं, तर्क दे सकते हैं और उन्हें निष्पादित कर सकते हैं। पुराना तरीकाः आप बैठक की प्रतिलिपि को संक्षेप में प्रस्तुत करने के लिए एक उपकरण का उपयोग करते हैं। नया तरीकाः एक एआई एजेंट बैठक में भाग लेता है, पहचानता है कि समय सीमा को आगे बढ़ाया गया था, परियोजना प्रबंधन बोर्ड को अपडेट करता है, और संबंधित टीम के सदस्यों को बिना बताए पिंग करता है। हम अब केवल किसी फ़ंक्शन का ₹उपयोग₹ नहीं कर रहे हैं; हम एक डिजिटल सहकर्मी को जिम्मेदारियां सौंप रहे हैं। 2। मल्टी-मोडल थिंकिंग पार्टनर सरल उपयोग से आगे बढ़ने का अर्थ है मानव विचार के रचनात्मक और रणनीतिक ₹अव्यवस्था₹ में एआई को एकीकृत करना। मिरो और नॉटियन जैसे प्लेटफॉर्म एक साझा कैनवास प्रदान करने के लिए विकसित हुए हैं, जहां एआई सिर्फ जवाब नहीं देता है - यह संदर्भ प्रदान करता है। दृश्य तर्कः एआई अब स्टिकी नोट्स के एक गंदे व्हाइटबोर्ड को ₹देख₹ सकता है और उन्हें एक रणनीतिक रोडमैप में पुनर्गठित कर सकता है। कारण समझः शोधकर्ता सरल वेक्टर गणित से तंत्रिका-प्रतीकात्मक एकीकरण की ओर बढ़ रहे हैं, जिससे एआई को वाक्य में अगले शब्द की भविष्यवाणी करने के बजाय ₹क्यों₹ चीजें होती हैं (कारण) समझने का अवसर मिलता है। 3। ट्रस्ट और एजेंसी का मनोविज्ञान उपयोग से परे जाने के लिए, हमें मानवीय तत्वः विश्वास को संबोधित करना होगा। सहयोग एक ₹गणित जोखिम₹ है चिकित्सा या उच्च-दांव वाले इंजीनियरिंग जैसे क्षेत्रों में, लक्ष्य अब पूर्ण स्वचालन (मानव की जगह) नहीं बल्कि मानव-इन-कमांड (एचआईसी) सहयोग है। नई नैतिकताः उपयोगिता से परे जब आप एआई के उपयोग से आगे बढ़ जाते हैं, तो आपको नैतिक एजेंसी के प्रश्नों का सामना करना पड़ता है। हम अब सिर्फ यह नहीं पूछ रहे हैं कि ₹क्या यह कुशल है?₹ बल्किः प्रामाणिकताः यदि कोई एआई आपके लिए एक हार्दिक पत्र लिखता है, तो क्या वह भावना अभी भी आपकी है? उत्तरदायित्वः यदि कोई स्वायत्त एजेंट किसी व्यावसायिक वार्ता में गलती करता है, तो कौन उत्तरदायी होगा? स्थिरताः उच्च-स्तरीय मॉडलों की भारी ऊर्जा और जल लागत को पहचानना, जिससे ₹ग्रीन एआई₹ आंदोलन का जन्म हुआ है, जहां कच्ची शक्ति के बजाय दक्षता को प्राथमिकता दी जाती है। 5। ₹ह्यूमन एज₹ की खेती करना विरोधाभासी रूप से, हम एआई को जितना अधिक एकीकृत करेंगे, अद्वितीय मानवीय गुण उतने ही मूल्यवान होंगे। भविष्य उन लोगों का है जो इसे दोगुना कर देते हैं: सहानुभूतिः एआई सहानुभूति का अनुकरण कर सकता है, लेकिन

अस्वीकृति के मायने

डॉ विजय गर्ग

आमतौर पर अस्वीकार किए जाने को कुछ लोग अपनी व्यक्तिगत विफलता के रूप में देखने लगते हैं। दरअसल, अस्वीकृति का एक स्वस्थ डर अधिकांश लोगों के अंदर रहता है, लेकिन कुछ को यह जकड़ लेता है। जबकि इसे कुछ अलग तरह से भी देखा - समझा जा सकता है । स्वीकारे जाने या सफलता के बजाय अस्वीकृति पर ध्यान केंद्रित होगा, तो काम करना बहुत आसान लगेगा। 'नहीं' वास्तव में किसी और चीज के लिए 'हां' है । हमको जितने 'हां' की जरूरत है, उतने पाने के लिए हमें बहुत सारे 'नहीं' कहने पड़ते हैं। अस्वीकृति को असफलता के बजाय अवसर के रूप में देखना सीखने से जीवन के कई पहलुओं में अधिक संतुष्टि मिल सकती है । काम और व्यक्तिगत लक्ष्यों से लेकर मजबूत संबंधों तक । जैसा कि एक कहावत है, 'आप हर उस क्षण को याद करते हैं, जो आपसे छूट जाता है या फिर आप उसे गंवा देते हैं।' लेकिन चूके गए अवसर भी किसी को बेहतर निशाना लगाने में मदद कर सकते हैं। संभव उससे बेहतर अवसर उसे मिल जाए । कायदा यह है कि अस्वीकृति से बचने के बजाय उससे निपटना सीखने की जरूरत है । अस्वीकृति के प्रति हमारा विरोध विकासवादी मनोविज्ञान में गहराई से निहित है । सामाजिक समूहों में खुद को सहज बना लेने से हमारा अस्तित्व सुनिश्चि होता है, इसलिए हमें सहज रूप से किसी भी ऐसे व्यवहार से बचना सीखना चाहिए, जो नकारात्मक सामाजिक प्रतिक्रिया का कारण बनता है । अस्वीकृति भावनाओं के साथ-साथ हमारी 'लड़ो या भागो' प्रवृत्ति को भी संसाधित करती है। अगर कोई हमको नहीं कहता है, तो दोष यह नहीं है कि उन्हें लगता है कि हम बेकार हैं या उन्हें लगता है कि हम एक बुरे व्यक्ति हैं या पर्याप्त अच्छे नहीं हैं। इसके अलावा, कोई दूसरा आशय भी हो सकता है। हमें अपनी भावनाओं को प्रबंधित करना सीखना होगा, ताकि हम खुद को फिर से सामने ला सकें। सभी अस्वीकृतियां व्यक्तिगत नहीं होतीं । अस्वीकृति को विफलता के बजाय फिर से निर्देशित किए जाने की आवश्यकता के रूप में देखना चाहिए ।

हम जितना अधिक अस्वीकृतियों से गुजरेंगे, यह उतना ही आसान होगा और आखिर हम उतना ही अधिक पाएंगे। जोखिम और यहां तक कि सीधे अस्वीकृति भी कई बार पुरस्कार प्राप्त करती है। कामयाब लोगों का इतिहास उठाकर देखा जा सकता है कि उनमें से अधिकतर को शुरुआती दौर में अस्वीकृति का सामना करना पड़ा है। लगभग हर प्रतिष्ठित लेखक को उनकी रचनाओं के आधार पर शुरुआती दौर में खारिज कर दिया गया था। इससे खुद को पीड़ित मानने या हार जाने पर तस्वीर कुछ और होती, लेकिन उन्होंने उस अस्वीकृति को ढाल बना लिया। लेखिका जेके रोलिंग की लिखी 'हैरी पाटर' को शुरुआती दौर में बारह प्रकाशकों ने सीधे-सीधे नकार दिया था। खिलाड़ी माइकल जार्डन को उनके हाई स्कूल की बास्केटबाल टीम से निकाल दिया गया था। पिछले साठ वर्षों में अधिकतर अमेरिकी राष्ट्रपति पहले किसी न किसी तरह से चुनाव हार चुके थे। मसलन, लिंडन बी जानसन, रिचर्ड निक्सन, जिमी कार्टर, बिल क्लिंटन, रोनाल्ड रीगन, जार्ज एच डब्ल्यू बुश, बराक ओबामा और डोनाल्ड ट्रंप । जाने-माने अभिनेता रहे सिल्वेस्टर स्टेलोन के मुताबिक, 'राकी' के लिए उनकी पटकथा और फिल्म का स्टार बनने की उनकी बोली को कई बार ठुकरा दिया गया था।

सच यह है कि अस्वीकृति हमारे लिए एक उपकार बन सकती है। यह हमें वस्तुनिष्ठ वास्तविकता का सामना करने के लिए मजबूर करती है। हमें पता चलता है कि शायद हमारी लंबे समय से चली आ रही उम्मीदों के विपरीत हमारे अपने दिमाग के बाहर एक पूरा ब्रह्मांड मौजूद है और दूसरों की राय भी हमारी

राय जितनी ही मायने रखती है । अस्वीकृति हमारे संकल्प को भी दृढ़ कर सकती है, क्योंकि जितनी बार हमें अस्वीकार किया जाता है, उतनी ही अधिक दृढ़ता से हम आगे बढ़ने का प्रयास करते हैं। अस्वीकृति लचीलेपन की कला, असफलता से उबरने की क्षमता, एक उद्यमी मानसिकता को बनाए रखने के लिए आवश्यक गुण की शिक्षा देती है। हालांकि अस्वीकृति को एक वांछित परिणाम या सफलता की सीढ़ी के रूप में नहीं लिया जाना चाहिए। लेकिन सबसे अच्छे हालात में अस्वीकृति हमें खुद के प्रति सच्चा रहने के लिए प्रेरित कर सकती है । इसलिए जितनी जल्दी हम 'न' के साथ तालमेल बिठाना सीख जाएंगे, उतनी ही जल्दी हमारे पास 'हां' कहने का मौका होगा।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट

धर्म का स्वरूप: सेवा या स्वार्थ?

- डॉ प्रियंका सौरभ

भारत को सदियों से धर्म, आस्था और आध्यात्म की भूमि माना जाता रहा है। यहाँ धर्म केवल पूजा-पाठ या कर्मकांड तक सीमित नहीं रहा, बल्कि जीवन के हर पक्ष को दिशा देने वाला तत्व रहा है। आस्था ने व्यक्ति को कठिन परिस्थितियों में संबल दिया, उसे नैतिकता और मानवता से जोड़े रखा। किंतु बदलते समय के साथ यह देखा जा रहा है कि आस्था का स्वरूप धीरे-धीरे विकृत होता जा रहा है। धर्म, जो आत्मिक शांति का माध्यम था, कई स्थानों पर भय, अंधविश्वास और व्यापार का साधन बनता जा रहा है।

आज का यथार्थ यह है कि धार्मिक परंपराओं का एक बड़ा हिस्सा अपने मूल उद्देश्य से भटक चुका है। जिन कर्मकांडों का उद्देश्य मनुष्य को आत्मिक संतुलन देना था, वे अब आर्थिक लेन-देन और दिखावे से जुड़ गए हैं। तीर्थस्थल, जो कभी तप, त्याग और साधना के केंद्र हुआ करते थे, आज कई बार बाजार का रूप धारण कर चुके हैं। श्रद्धालु की भावना से अधिक उसकी आर्थिक स्थिति को महत्व दिया जाने लगा है।

आस्था का मूल आधार विश्वास है—ईश्वर में, जीवन में और स्वयं में। यह विश्वास किसी डर या लालच से नहीं, बल्कि आंतरिक संतोष से उपजता है। जब आस्था भय पर आधारित हो जाती है, तब वह पाखंड में बदल जाती है। दुर्भाग्यवश, आज अनेक धार्मिक गतिविधियाँ इसी भय को केंद्र में रखकर संचालित की जा रही हैं। लोगों को यह विश्वास दिलाया जाता है कि यदि उन्होंने किसी विशेष परंपरा का पालन नहीं किया या तय राशि का दान नहीं दिया, तो अनिष्ट हो जाएगा। इस प्रकार धर्म, जो आश्वासन देने वाला था, भय पैदा करने वाला बनता जा रहा है।

परंपराएँ किसी भी समाज की पहचान होती हैं। वे पीढ़ी-दर-पीढ़ी अनुभव और ज्ञान के माध्यम से विकसित होती हैं। लेकिन परंपराएँ तब तक ही उपयोगी हैं, जब तक वे समय, विवेक और मानवता के अनुरूप हों। परंपराओं को पत्थर की लकीर मान लेना समाज के विकास में बाधा बनता है। आज आवश्यकता इस बात की है कि हम परंपराओं की समीक्षा करें—यह समझें कि उनका उद्देश्य क्या है और वे वर्तमान समय में कितनी प्रासंगिक हैं।

धर्म का एक महत्वपूर्ण पक्ष सेवा रहा है। सेवा का अर्थ है—निस्वार्थ भाव से दूसरों की सहायता करना। किंतु जब सेवा के बदले मूल्य तय कर दिया जाए, तब उसका स्वरूप बदल जाता है। दान तभी दान कहलाता है जब वह स्वेच्छा से दिया जाए। जब दान दबाव, भय या सामाजिक प्रतिष्ठा के कारण दिया जाता है, तब वह अपनी पवित्रता खो देता है। दुर्भाग्य से, आज दान भी कई जगह अनिवार्य शुल्क की तरह वसूला जाने लगा है।

इस स्थिति का सबसे अधिक प्रभाव साधारण और भावनात्मक लोगों पर पड़ता है। दुख, शोक या संकट की घड़ी में व्यक्ति मानसिक रूप से कमजोर होता है। ऐसे समय में यदि उसकी आस्था का शोषण किया जाए, तो यह न केवल अनैतिक है, बल्कि अमानवीय भी है। धर्म का उद्देश्य मनुष्य को टूटने से बचाना है, न कि उसे और अधिक बोझिल बनाना।

पाखंड का सबसे बड़ा खतरा यह है कि वह धीरे-धीरे धर्म के प्रति अविश्वास को जन्म देता है। जब लोग बार-बार ठगे जाते हैं, उनकी भावनाओं का दोहन होता है, तो वे या तो धर्म से दूर हो जाते हैं या फिर हर परंपरा को संदेह की दृष्टि से देखने लगते हैं। यह स्थिति समाज के लिए घातक है, क्योंकि धर्म का स्वस्थ स्वरूप सामाजिक संतुलन बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

आज के शिक्षित और जागरूक समाज में यह अपेक्षा की जाती है कि व्यक्ति हर बात को तर्क और विवेक की कसौटी पर परखे। आस्था और विवेक एक-दूसरे के विरोधी नहीं हैं। सच्ची आस्था वही है जो विवेक के साथ चल सके। यदि कोई परंपरा मानवता, नैतिकता और करुणा के विरुद्ध जाती है, तो उसे बदलना ही धर्मसम्मत कदम माना जाना चाहिए।

धार्मिक संस्थानों और धर्म से जुड़े लोगों की भूमिका भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। उन्हें यह समझना होगा कि उनकी जिम्मेदारी केवल कर्मकांड करवाना नहीं, बल्कि समाज को सही दिशा देना भी है। यदि धार्मिक नेतृत्व स्वयं लालच और स्वार्थ से प्रेरित होगा, तो आमजन से नैतिकता की अपेक्षा करना व्यर्थ है। धर्म को व्यवसाय नहीं, बल्कि सेवा का माध्यम बनाना समय की माँग है।

इसके साथ ही समाज की जिम्मेदारी भी कम नहीं है। जब तक लोग स्वयं जागरूक नहीं होंगे, तब तक पाखंड समाप्त नहीं होगा। प्रश्न करना अधर्म नहीं है। हर परंपरा का उद्देश्य समझना और उस पर विचार करना बौद्धिक परिपक्वता का संकेत है। आँख मूँदकर हर बात मान लेना न तो आस्था है और न ही धर्म।

मीडिया और शिक्षा संस्थानों की भूमिका भी इस संदर्भ में अहम है। यदि धार्मिक मुद्दों पर संतुलित, तार्किक और संवेदनशील चर्चा होगी, तो समाज में जागरूकता बढ़ेगी। शिक्षा का उद्देश्य केवल रोजगार नहीं, बल्कि विवेकशील नागरिक तैयार करना भी है—ऐसे नागरिक जो आस्था और अंधविश्वास में अंतर समझ सकें।

आज आवश्यकता इस बात की है कि हम धर्म को उसके मूल स्वरूप में लौटाने का प्रयास करें। ऐसा धर्म, जो भय नहीं, बल्कि शांति दे; जो शोषण नहीं, बल्कि संरक्षण करे; और जो विभाजन नहीं, बल्कि एकता का संदेश दे। आस्था को आत्मा की शक्ति बनाना होगा, न कि किसी के स्वार्थ का साधन।

अंततः यह स्पष्ट है कि धर्म का भविष्य परंपराओं से अधिक हमारी सोच पर निर्भर करता है। यदि हम विवेक, करुणा और आत्मसम्मान को आस्था का आधार बनाएँ, तो पाखंड अपने आप समाप्त होने लगेगा। सच्चा धर्म वही है जो मनुष्य को बेहतर इंसान बनाए। आज के समय में यही सबसे बड़ी आवश्यकता और सबसे बड़ा धर्म है।

बड़ी चुनौती - देशभर की निचली अदालतों, हाई कोर्ट और सुप्रीम कोर्ट में कुल मिलाकर 5 करोड़ 41 लाख केस पेंडिंग

- निचली अदालतों में इनकी संख्या 4.76 करोड़ है जिसमे 3.65 करोड़ केस क्रिमिनल के हैं और बाकी सिविल मैटर

- देशभर में 5.41 करोड़ केस पेडिंग, इनका निपटारा कोर्ट के लिए बड़ी चुनौती - अदालतों में लंबित मामलों से संवैधानिक संकट का खतरा

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। देश में न्यायपालिका के सामने अभी भी सबसे बड़ी चुनौती करोड़ों केस की पेंडेंसी को कम करना है। देशभर की निचली अदालतों, हाई कोर्ट और सुप्रीम कोर्ट में भारी पेंडेंसी है। नेशनल जुडिशल डेटा ग्रिड में 28 दिसंबर 2025 के आंकड़ों के मुताबिक देश भर की निचली अदालतों, हाई कोर्ट और सुप्रीम कोर्ट में कुल मिलाकर 5 करोड़ 41 लाख केस पेंडिंग है। निचली अदालतों में इनकी संख्या 4.76 करोड़ है जिसमे 3.65 करोड़ केस क्रिमिनल के हैं और बाकी सिविल मैटर है।

जस्टिस सूर्यकांत ने नवंबर में शपथ से ठीक पहले कहा था कि उनकी प्राथमिकता होगी कि पेंडेंसी पर काबू पाया जा सके। उन्होंने कहा था, हम सबसे पहले यह देखेंगे कि पेंडेंसी को कैसे कम किया जाए और इसके लिए जो संसाधन है, उसका इस्तेमाल बेहतर तरीके से किया जाएगा। पिछले साल 11 जुलाई को लॉ मिनिस्ट्री ने केंद्र सरकार के विभिन्न मंत्रालयों और विभागों को दिशा निर्देश जारी किए थे ताकि वैसे मामले जहां सरकार पक्षकार है, उनका जल्द निपटारा सुनिश्चित हो सके।

न्याय की सार्थक पहुंच पर असर

रिटायर डिस्ट्रिक्ट जज और कानूनी जानकार बताते है कि भारत में न्यायिक मामलों का लबित बोझ अब केवल आंकड़ों की समस्या नहीं रह गया है, बल्कि यह एक संवैधानिक संकट का रूप ले चुका है जो न्याय तक सार्थक पहुंच को प्रभावित करता है,जल्द से जल्द न्यायालयों में सुधार की आवशयकता हैं। इस संदर्भमें, सुप्रीम कोर्ट की जोनल बेंच की स्थापना पर विचार किया जा सकता है। हालांकि, शीर्ष अदालत के सामने पेंडिंग मामलों का एक बड़ा हिस्सा विशेष अनुमति याचिकाओं का है, जो सेवा, जमीन विवादों और सामान्य दीवानी व आपराधिक अपीलो से संबंधित है, जिन्हें हाई कोर्ट स्तर 15.85 लाख पर ही अंतिम रूप ले लेना चाहिए। उत्तर, दक्षिण, पूर्व और पश्चिम में चार स्थायी जोनल बेच की स्थापना, और नई दिल्ली में स्थायी रूप से बैठने वाली एक संविधान पीठ के साथ, न्याय तक पहुंच का विकेंद्रीकरण होगा तो वादियों के सामने आने वाली भौगोलिक और आर्थिक बढ़ाएं कम होंगी।

सावित्रीबाई फुले, भारत की पहली महिला शिक्षिका

डॉ.मुश्ताक़ अहमद शाह

जयंती विशेष (3 जनवरी) तीन जनवरी को सावित्रीबाई फुले की जयंती मनाते हैं वे 1831 में महाराष्ट्र के नायगांव में किसान परिवार में पैदा हुईं नौ साल की उम्र में ज्योतिराव फुले से शादी हुई ज्योतिराव ने उन्हें पढ़ना सिखाया 1848 में पुणे के भिडे वाडा में पहला लड़कियों का स्कूल खोला सावित्रीबाई पहली टीचर बनीं रास्ते में पत्थर मारे जाते गंदगी फेंकी जाती लेकिन वे रोज स्कूल जातीं उन्होंने 18 स्कूल खोले विधवाओं और दलित बच्चों को पढ़ाया 1852 में विधवाओं का आश्रम खोला बालहत्या रोकने के लिए प्रयास किए, उनकी कविताएँ दिल छू लेतीं हैं, "अज्ञान की अंधेरी रात में जागो ऐ नारी तालीम लो ग़ुलामी की जंजीर तोड़ो विधवा होकर भी जियो स्वावलंबी बनो शेरनी बन जाओ ज्योतिराव की मौत के बाद सत्यशोधक समाज संभाला सती प्रथा बाल विवाह छुआछूत के खिलाफ लड़ीं 1896 में प्लेग में बच्चों को बचाते हुए शहीद हो गईं डॉ आंबेडकर ने कहा था ,वे मेरी प्रेरणा हैं आज आयुष योग लाड़ली बहना जैसी योजनाएँ उनकी सीख देतीं हैं,पढ़ाई से जागृति योग से ताक़त मिलती है,साहित्यकारों अपनी नज़्म ग़ज़ल शेर में नारी जागृति लिखो, विचारों का मेल क्रांति लाएगा सावित्रीबाई अमर हैं शिक्षा की शमा नारी सशक्तिकरण की जंगबाज हस्ताक्षर को नमन,जय हो !

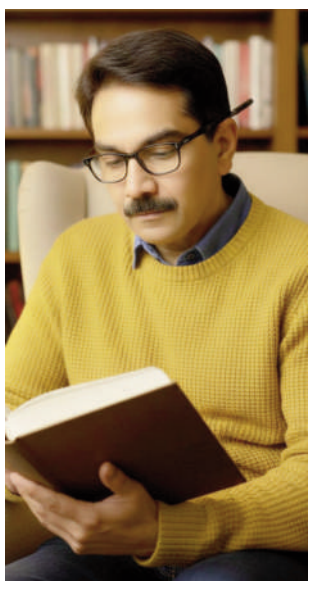

जिंदगी कहती है

ये जिंदगी तो करती है बस अपनी मनमानी,
हर इंसान की अपनी है एक अलग कहानी,
कर्मों का हिसाब-किताब निरंतर चलता है,
कहीं है कारी बदरी तो कहीं धूप आसमानी ।

जो रूठ जाता है जिंदगी की समस्याओं से,
दूर हो जाता है वो तो सफ़ल संभावनाओं से,
वो जिंदगी को अपनी बोझिल बना लेता है,
टूट जाता है वो दर्दनाक भारी विपदाओं से ।

सीखों बाधाओं को नज़रिया बदल दूर करना ,
अपने ₹आनंद₹ आत्मविश्वास को प्रबल रखना,
वर्तमान परिस्थितियों को बदला जा सकता है,
जिंदगी कहती हैं चाहते हो तुम यूँ प्यार करना ।

बड़े ही टेढ़े-मेढ़े दांव-पेंच है अलबेली जिंदगी के,
सुख-दु:ख के मोल भाव प्रेम संतुष्टि सादगी के,
खोटे सिक्के को एक प्रभु तू ही सोना है बनाता,
कारण बहुत सारे है दीनानाथ तेरी बंदगी के ।

- मोनिका डागा 'आनंद', चेन्नई, तमिलनाडु

आपके स्नेह और प्यार का धन्यवाद !
रचना (स्वरचित व सर्वाधिकार सुरक्षित)

नारी जागरण नहीं, नारी आगमन का समय है, आत्मनिर्भर नारी से आत्मनिर्भर भारत तक

कृति आरके जैन

जब इतिहास अपने पन्ने पलटता है, तो कुछ वर्ष केवल तारीख नहीं रहते, वे चेतना बन जाते हैं। वर्ष 2026 ऐसा ही एक कालखंड है, जहां भारतीय नारी की पहचान "अबला" की परिधि तोड़कर "सबला, सक्षम और निर्णायक शक्ति" के रूप में स्थापित हो रही है। अब प्रश्न यह नहीं कि स्त्री क्या कर सकती है, प्रश्न यह है कि बिना स्त्री के क्या संभव है? यह परिवर्तन अचानक नहीं, बल्कि सदियों की चुप्पी, संघर्ष और आत्मचेतना से उपजा हुआ है। आज महिला दया या सहानुभूति की नहीं, अधिकार, अवसर और नेतृत्व की भाषा बोल रही है। वह केवल बदलाव का हिस्सा नहीं, बल्कि बदलाव की धुरी बन चुकी है। यही युगांतकारी बदलाव 2026 को नारी चेतना का स्वर्णिम अध्याय बनाता है।

भारतीय समाज में लंबे समय तक स्त्री को त्याग, सहनशीलता और मौन की प्रतिमूर्ति माना गया। परंतु समय के साथ उसने प्रश्न पूछना सीखा, निर्णय लेना सीखा और अपनी पहचान स्वयं गढ़ी। शिक्षा के विस्तार, सामाजिक आंदोलनों और नीतिगत प्रयासों ने उसे नई दृष्टि दी। अब वह परिवार की सीमाओं तक सीमित नहीं, बल्कि समाज की दिशा तय करने वाली शक्ति है। 2026 तक आते-आते महिला आत्मनिर्भरता केवल आर्थिक नहीं, वैचारिक भी बन चुकी है। वह परंपरा और आधुनिकता के बीच संतुलन साधते हुए अपने लिए नए रास्ते बना रही है। यही संतुलन उसे विशिष्ट, प्रभावशाली और प्रेरणादायी बनाता है।

पिछले वर्षों में महिलाओं की श्रम भागीदारी और निर्णयात्मक भूमिकाओं में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। यह परिवर्तन आंकड़ों से अधिक मानसिकता का द्योतक है। आज महिलाएं नौकरी खोजने वाली नहीं, रोजगार देने वाली बन रही हैं। वे नेतृत्व, प्रबंधन और नवाचार के क्षेत्र में नई मिसालें गढ़ रही हैं। आत्मनिर्भरता ने उन्हें आत्मविश्वास दिया है, और आत्मविश्वास ने समाज में उनकी स्वीकार्यता बढ़ाई है। 2026 की महिला आर्थिक इकाई नहीं, बल्कि आर्थिक दिशा निर्धारित करने वाली शक्ति है। वह घर की अर्थव्यवस्था से लेकर राष्ट्र की विकास नीति तक अपनी स्पष्ट छाप छोड़ रही है।

खेल जगत में भारतीय महिलाओं ने जिस प्रकार सीमाओं को ध्वस्त किया है, वह नई पीढ़ी के लिए प्रेरणा का स्रोत बन गया है। अंतरराष्ट्रीय मंचों पर विजयों ने यह सिद्ध कर दिया कि प्रतिभा लिंग नहीं देखती। साहस, अनुशासन और समर्पण के बल पर महिला खिलाड़ी असंभव को संभव कर रही हैं। उनकी सफलता केवल पदकों तक सीमित नहीं, बल्कि सामाजिक सोच में परिवर्तन का माध्यम है। खेल ने उन्हें आत्मविश्वास, नेतृत्व और मानसिक दृढ़ता दी है। आज खेल केवल प्रतिस्पर्धा नहीं, बल्कि सशक्तिकरण का विद्यालय बन चुका है, जहां से आत्मबल से भरी पीढ़ियां निकल रही हैं।

उद्यमिता के क्षेत्र में महिलाओं की बढ़ती भागीदारी भारत की आर्थिक संरचना को नया आकार दे रही है। छोटे गांवों से लेकर महानगरों तक महिलाएं स्टार्टअप, स्वसहाय समूह और नवाचार आधारित व्यवसाय खड़े कर रही हैं। डिजिटल प्लेटफॉर्म, वित्तीय समावेशन और प्रशिक्षण ने उन्हें नई उड़ान दी है। वे केवल लाभ नहीं, बल्कि सामाजिक उत्तरदायित्व को भी प्राथमिकता दे रही हैं। महिला उद्यमी रोजगार सृजन के साथ संवेदनशील नेतृत्व प्रस्तुत कर रही हैं। यह बदलाव दर्शाता है कि जब स्त्री आर्थिक रूप से सशक्त होती है, तो पूरा परिवार और समाज स्थिरता तथा प्रगति की दिशा में आगे बढ़ता है।

राजनीति में महिलाओं की बढ़ती भागीदारी लोकतंत्र को अधिक मानवीय और संतुलित बना रही है। पंचायत से संसद तक उनकी उपस्थिति ने यह प्रमाणित किया है कि नेतृत्व केवल शक्ति का नहीं, समझ का विषय है। नीति निर्माण में महिलाओं की सहभागिता से शिक्षा, स्वास्थ्य और सामाजिक न्याय जैसे विषयों को प्राथमिकता मिली है। आरक्षण और प्रतिनिधित्व ने नई पीढ़ी को राजनीति से जुड़ने का साहस दिया है। 2026 का भारत उस दौर में प्रवेश कर रहा है, जहां सत्ता का स्वर अधिक संवेदनशील, समावेशी और उत्तरदायी होता जा रहा है। यह परिवर्तन लोकतंत्र की आत्मा को सुदृढ़ करता है।

शिक्षा और स्वास्थ्य के क्षेत्र में महिलाओं की प्रगति समाज के भविष्य को दिशा दे रही है। विज्ञान, तकनीक और अनुसंधान में बढ़ती भागीदारी यह दर्शाती है कि बौद्धिक क्षमताएं किसी लिंग की मोहताज नहीं। स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता, स्वच्छता अभियान और मानसिक स्वास्थ्य पर खुला संवाद महिलाओं को अधिक सशक्त बना रहा है। शिक्षित और स्वस्थ महिला ही सशक्त पीढ़ी की निर्माता होती है। वह बच्चों में मूल्य, समाज में संवेदना और राष्ट्र में विवेक भरती है। यही कारण है कि महिला सशक्तिकरण को विकास की रीढ़ माना जाने लगा है।

यद्यपि प्रगति के पथ पर कई उपलब्धियां हैं, फिर भी चुनौतियां शेष हैं। घरेलू हिंसा, असमान वेतन, साइबर अपराध और सामाजिक भेदभाव जैसी समस्याएं अब भी मौजूद हैं। किंतु अब महिलाएं चुप नहीं रहतीं, वे संगठित होकर आवाज उठाती हैं। कानून, जागरूकता और सामुदायिक सहयोग उनके संघर्ष को शक्ति दे रहे हैं। आत्मरक्षा, डिजिटल साक्षरता और अधिकारों की समझ ने उन्हें अधिक सजग बनाया है। यह संघर्ष पराजय का नहीं, परिवर्तन का संकेत है, जो समाज को अधिक न्यायपूर्ण और सुरक्षित बनाने की दिशा में अग्रसर है।

2026 की महिला केवल अपनी उन्नति तक सीमित नहीं, वह राष्ट्र निर्माण की सहभागी है। नारी शक्ति वंदन जैसे प्रयास इस बदलाव को संस्थागत आधार देते हैं। आज महिला नेतृत्व केवल प्रतीक नहीं, प्रेरणा है। वह नीति, नवाचार और नैतिकता का संतुलन स्थापित कर रही है। जब महिलाएं आगे बढ़ती हैं, तो विकास की परिभाषा विस्तृत होती है। यह समय है जब समाज स्त्री को सहयोग नहीं, साझेदारी दे। क्योंकि सशक्त महिला ही सशक्त राष्ट्र की नींव रखती है, और यही आधुनिक भारत की पहचान बन रही है।

3 जनवरी जन्म दिवस: स्त्रियों के स्वाभिमान की प्रेरणा पुंज - सावित्रीबाई फुले

डा. वीरेन्द्र भाटी मंगल

समाज में व्याप्त कुरीतियों के विरुद्ध संघर्ष करने वाले व्यक्तित्वों की परंपरा में कुछ नाम ऐसे होते हैं जिनका प्रभाव अपने समय से आगे तक जाता है। उनके विचार और कार्य आने वाली पीढ़ियों के लिए दीपस्तंभ बन जाते हैं। ऐसी ही महान समाज-सुधारक सावित्रीबाई फुले की 3 जनवरी को जयंती मनाई जाती है। वे न केवल भारत की प्रथम प्रशिक्षित महिला शिक्षिका थीं, बल्कि स्त्री शिक्षा, दलित उत्थान और सामाजिक न्याय के आंदोलन की सशक्त अग्रदूत भी थीं। उनके जीवन का प्रत्येक चरण संघर्ष, साहस और करुणा का उदाहरण है, जो आज भी उतना ही प्रासंगिक है।

सावित्रीबाई फुले का जन्म 3 जनवरी 1831 को महाराष्ट्र के नायगांव में खन्दोजी नेवसे और माता लक्ष्मी के घर हुआ। उस दौर में बालिकाओं की शिक्षा की कल्पना भी अस्वीकार्य मानी जाती थी। 1840 में मात्र नौ वर्ष की आयु में उनका विवाह समाज-सुधारक ज्योतिबा फुले से हुआ। विवाह के समय वे निरक्षर थीं, किंतु उनके मन में शिक्षा की तीव्र जिज्ञासा थी। यह वह समय था जब जातिगत भेदभाव, अस्पृश्यता और स्त्री-विरोधी रूढ़ियां समाज में गहरे पैठी हुई थीं।

एक प्रसंग के अनुसार, एक दिन सावित्रीबाई किसी अंग्रेजी पुस्तक के पन्ने उलट रही थीं। यह देखकर उनके पिता ने पुस्तक छीनकर घर से बाहर फेंक दी क्योंकि उस समय शिक्षा को केवल उच्च जाति के पुरुषों का अधिकार माना जाता था। स्त्रियों और दलितों के लिए पढ़ना पाप समझा जाता था। इसी घटना ने सावित्रीबाई के भीतर शिक्षा प्राप्त करने का दृढ़ संकल्प जगा दिया। उन्होंने निश्चय किया कि चाहे कितनी भी बाधाएँ आएं, वे पढ़ना अवश्य सीखेंगी।

उनके जीवन में ज्योतिराव फुले केवल पति ही नहीं बल्कि शिक्षक और मार्गदर्शक बनकर आए। 1841 में उन्होंने सावित्रीबाई को पढ़ना-लिखना सिखाना आरंभ किया। आगे चलकर पूना में अंग्रेज अधिकारी रे जेम्स मिचेल की पत्नी के सहयोग से सावित्रीबाई को नॉर्मल स्कूल में विधिवत शिक्षक प्रशिक्षण मिला। अंग्रेजी भाषा में दक्ष होने के बाद उन्होंने टॉमसन क्लार्कसन की जीवनी पढ़ी जिन्होंने अश्वेतों पर हो रहे अत्याचारों के विरुद्ध संघर्ष किया था। इससे

सावित्रीबाई को भारत में अछूतों और स्त्रियों की दयनीय स्थिति के प्रति और अधिक चेतना मिली।

जनवरी 1848 से मार्च 1852 के बीच सावित्रीबाई और ज्योतिराव फुले ने बिना किसी सरकारी सहायता के बालिकाओं के लिए 18 विद्यालय स्थापित किए। यह कार्य उस समय एक सामाजिक क्रांति के समान था किंतु इस साहसिक पहल का उन्हें भारी विरोध भी झेलना पड़ा। जब सावित्रीबाई विद्यालय पढ़ाने जातीं तो कट्टरपंथी लोग उन पर पत्थर और गोबर फेंकते थे। प्रतिदिन होने वाली इस अपमानजनक प्रताड़ना के बावजूद वे विचलित नहीं हुईं। वे अपने साथ अतिरिक्त साड़ी लेकर जातीं और विद्यालय पहुंचकर वस्त्र बदल लेतीं। यह उनके अदम्य साहस और कर्तव्यनिष्ठा का अनुपम उदाहरण है।

सावित्रीबाई फुले को भारत की प्रथम प्रशिक्षित महिला शिक्षिका होने का गौरव प्राप्त है। उन्होंने ऐसे समय में शिक्षा का दीप जलाया, जब स्त्रियों को घर की चारदीवारी में सीमित कर दिया गया था। स्त्री का जीवन केवल चूल्हा-चैका, संतानोत्पत्ति और पति-सेवा तक सीमित माना जाता था। विशेषकर दलित और पिछड़ी महिलाओं की स्थिति अत्यंत दयनीय थी। सावित्रीबाई ने इस अन्यायपूर्ण व्यवस्था को चुनौती दी और शिक्षा को मुक्ति का माध्यम बनाया। वे केवल शिक्षिका ही नहीं, बल्कि कुशल समाज सेविका और चिंतनशील कवयित्री भी थीं। उन्होंने स्त्री शिक्षा, विधवा पुनर्विवाह, बाल-विवाह विरोध और सामाजिक समानता के लिए निरंतर संघर्ष किया। 1853 में उन्होंने 'बालहत्या प्रतिबंधक गृह' की स्थापना की, जहाँ विधवाएं सुरक्षित रूप से बच्चों को जन्म दे सकती थीं। यह कदम उस समय समाज के लिए अत्यंत क्रांतिकारी था।

24 सितंबर 1873 को सावित्रीबाई और ज्योतिराव फुले ने 'सत्यशोधक समाज' की स्थापना की। इसके माध्यम से उन्होंने विधवा विवाह को प्रोत्साहित किया और सामाजिक रूढ़ियों को तोड़ने का साहसिक प्रयास किया। उन्होंने मजदूरों के लिए रात्रिकालीन विद्यालय खोले और दलितों के लिए अपने घर का कुआं खोल दिया, जो उस समय सामाजिक समानता का ऐतिहासिक उदाहरण बना।

1897 में पुणे में प्लेग महामारी फैली। 66 वर्ष की आयु में भी सावित्रीबाई अपने दत्तक पुत्र डॉ. यशवंत के साथ रोगियों की सेवा में जुट गईं। सेवा करते-करते वे स्वयं प्लेग की शिकार हो गईं और 10 मार्च 1897 को इस महान आत्मा का निधन हो गया। उनका जीवन सेवा, त्याग और मानवता का प्रतीक बन गया। वर्तमान दौर में केंद्र और राज्य सरकारें उनके योगदान को सम्मान पूर्वक स्मरण कर रही हैं। उनके नाम पर विद्यालय, महाविद्यालय, विश्वविद्यालय और योजनाएं संचालित हो रही हैं। सावित्रीबाई फुले नारी शिक्षा और सामाजिक स्वाभिमान की शाश्वत प्रेरणा हैं। उनके विचार आज भी हमें समानता, न्याय और मानव गरिमा के मार्ग पर आगे बढ़ने का संदेश देते हैं। ऐसी युगप्रवर्तक विभूति को शत-शत नमन।

प्रियंका गांधी गांधी ओडिशा आएंगी; राज्य में महिलाओं की एक बड़ी सभा को संबोधित करेंगी

मनोरंजन शासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भूबनेश्वर : प्रियंका गांधी ओडिशा आएंगी। प्रियंका गांधी राज्य में एक बड़ी महिला रैली को संबोधित करेंगी। PCC प्रेसिडेंट भक्त दास ने इसकी जानकारी दी है। कांग्रेस 10 जिलों में बड़ी रैलियां करेगी। इसके अलावा, राहुल को एक और रैली के लिए ओडिशा लाने की योजना बन रही है। PCC प्रेसिडेंट भक्त दास ने कहा कि कांग्रेस को सरकार के साथ तीन गुना संघर्ष का सामना करना पड़ेगा।इस बीच, 2026 में राज्य की राजनीति में कई समीकरण देखने को मिलेंगे। तीनों बड़ी पार्टियों BJP, BJD और कांग्रेस के लिए चुनौतियां होंगी। क्योंकि नए साल की शुरुआत से ही राज्य में राज्यसभा चुनावों में कई हॉट स्पॉट देखने को मिलेंगे। साल 2025 खत्म हो गया है। लेकिन राजनीतिक नजरिए से यह साल काफी घटनाओं वाला और रोमांचक रहा। ओडिशा की राजनीति में कई उतार-चढ़ाव और प्लेटफॉर्म में बदलाव देखने को मिले। कई बड़ी पार्टियां हार गईं। राजनीतिक पार्टियों ने राजनीतिक गुटों और बाहर से आए नेताओं को लाकर ताकत हासिल की। लेकिन नया साल 2026 BJP, BJD और कांग्रेस के लिए अहम होगा। क्योंकि इस साल में अभी बहुत कुछ होना बाकी है।

PUCC के लिए ग्रीन स्टिकर 10 जनवरी से उपलब्ध होंगे

मनोरंजन शासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भुबनेश्वर: ओडिशा ट्रांसपोर्ट डिपार्टमेंट ने 10 जनवरी से पूरे राज्य में 'ग्रीन स्टिकर' सिस्टम लागू करने की घोषणा की है।10 जनवरी से पहले PUCC पाने वाले वाहनों के लिए क्षेत्रीय परिवहन कार्यालय (RTO) में विशेष काउंटरों के साथ एक SOP तैयार किया गया है। परिवहन आयुक्त अमिताभ ठाकुर के अनुसार, 10 जनवरी या उसके बाद आने वाले वाहनों के लिए स्टिकर अधिकृत PUC परीक्षण केंद्रों द्वारा सीधे जारी किए जाएंगे।उन्होंने साफ़ किया कि गाड़ी मालिकों से हरे स्टिकर के लिए कोई फ़ीस नहीं ली जाएगी। 'हरा स्टिकर ऑप्शनल है और सिर्फ़ एक सुविधा है। जिन गाड़ी मालिकों के पास स्टिकर नहीं है, वे इंस्पेक्शन के समय अपना वैलिड PUCC दिखा सकते हैं। दूसरी तरफ़, स्टिकर जारी करने से पहले पॉल्यूशन सर्टिफ़िकेट चेक किया जाएगा। RC और गाड़ी का डेटाबेस चेक किया जाएगा। यह साफ़ किया गया है कि ओरिजिनल PUCC, RC कॉपी दिखानी होगी। गाड़ी मालिक के लिए पहचान पत्र दिखाना ज़रूरी है, लेकिन अगर कोई और स्टिकर लेने आता है, तो मालिक का ऑथराइज़ेशन लेटर दिखाना होगा।

शमशाबाद स्थित श्री आईमाता मंदिर मे काग परिवार द्वारा आयोजित स्नेह मिलन कार्यक्रम मे उपस्थित आयोजक अखिल भारतीय सीरवी महासभा तेलंगाना प्रांतीय अध्यक्ष हरजीराम काग, गणपत काग , श्री कृष्ण गोपाल पंवार,दिनेश पंवार, सीरवी महासभा तेलंगाना प्रदेश कोषाध्यक्ष प्रभुराम हाम्बड़,शमशाबाद शिक्षा समिति सचिव भीखाराम काग , कोषाध्यक्ष राजूराम परिहार, उपाध्यक्ष चेलाराम काग ,बाबूलाल पंवार सलाहकार भूराराम परिहार, वरिष्ठ सदस्य मलाराम पंवार, सीरवी समाज कोरेमुला अध्यक्ष कालुराम काग, सह सचिव राजाराम गेहलोत, कोषाध्यक्ष पोकरराम पंवार , सीरवी समाज वडेर संगा रेड्डी अध्यक्ष रुघाराम परिहारिया , लिकमाराम , मोहनलाल, चंद्राराम,सीरवी समाज बडेर मनिकोंण्डा अध्यक्ष बाबूलाल भायल, सीरवी समाज बडेर शादनगर अध्यक्ष कैलाश बफा, भंवरलाल सैणचा,सीरवी समाज युवा संगठन से केसाराम सोलंकी, पुनाराम पंवार, मोहनलाल एवं समस्त सीरवी समाज बन्धु।

'अधूरा ख्वाब'

एक अधूरा ख्वाब रह गया,
मुझे साथ तेरा चाहिए था !
उसे भी कोई और ले गया।
मैं उन भावनाओं में बहके,
अकेले सब कुछ सह गया।
मेरी ही जिंदगी के यादगार,
लम्हों को वो छिन ले गया।
अब सीने में 'तस्वीर' है तेरी,
वो शरीर कोई और ले गया।
यूं बहते रहेंगे यादों के मंजर,
ये ख्याल कोई ओर ले गया।
सुकून से जी लो यह जिंदगी,
मेरे कानों में कोई कह गया।
बस, तेरा हाथ-साथ पाने का,
एक 'अधूरा ख्वाब' रह गया।

संजय एम तराणेकर
(कवि, लेखक व समीक्षक)
इन्दौर-452011 (मध्य प्रदेश)

क्या पश्चिम बंगाल में राजनीतिक से बढ़कर संस्कृति को बचाने की लड़ाई है!

रामस्वरूप रावतसरे

बंगाल से लगातार हो रहे घुसपैठ और उसकी वजह से हो रहा डेमोग्राफी बदलाव देश के लिए खतरनाक है। बंगाल की संस्कृति और उसकी पहचान को इससे खतरा पैदा हो गया है। राजनीतिक संरक्षण में हो रहा ये घुसपैठ बंगाल चुनाव के लिए ही आरम्भ नहीं है, बल्कि इससे देश की सुरक्षा, संप्रभुता जुड़ी हुई है। इसलिए भाजपा नेता बीएल संतोष ने देश को बचाने के लिए बंगाल चुनाव को जीतने पर बल दिया है।

भाजपा नेता बीएल संतोष के अनुसार हमारे लिए बंगाल सिर्फ सत्ता की लड़ाई नहीं बल्कि एक सभ्यता को बचाने की लड़ाई है। उनका मानना है कि भारत को बचाने के लिए बंगाल को बचाना जरूरी है। उन्होंने आगे कहा कि बंगाल में डेमोग्राफी बदलावों को रोकना और हर हाल में सरकार बनाना उनका लक्ष्य है, जिसे वे भारत के भविष्य के लिए महत्वपूर्ण मानते हैं।

बीएल संतोष बंगाल चुनाव को सियासी लड़ाई से बढ़कर बंगाल की संस्कृति और पहचान को बचाने की लड़ाई से जोड़कर देखते हैं। बंगाल में लगातार हिन्दुओं का पलायन हो रहा है। यहाँ कट्टरपंथियों द्वारा हिन्दु त्यौहारों का कई बार विरोध किया गया। कई बार दुर्गापूजा विसर्जन और मुहर्रम के जुलूस एक दिन होने पर विसर्जन की तारीख बदल दी गई।

प्रशासन ने दुर्गापूजा उत्सव को कैंसिल कर दिया। यही हाल राम नवमी जुलूस पर भी रहा। कई जगहों पर हिंसा और झड़पें हुई। होली- दिवाली जैसे पर्व मनाने के दौरान भी कई बार विवाद हुए। मार्च 2025 में बसंत उत्सव के दौरान शांतिनिकेतन के सोनाझुरी हाट में पर्यावरण संरक्षण का हवाला देते हुए होली समारोह पर प्रतिबंध लगा दिया गया था। इस पर काफी बवाल भी हुआ।

बंगाल में 2011 की जनगणना के मुताबिक, पूरे देश में हिन्दू आबादी घटी है। ये करीब 0.7 फीसदी कम हुई है जबकि पश्चिम बंगाल में हिन्दू आबादी 1.94 फीसदी घटी है। यहाँ मुस्लिम आबादी में 0.8 फीसदी की बढ़ोतरी दर्ज की गई। ये तो 2011 के आंकड़ें हैं। इससे पता चलता है कि राज्य में मुस्लिम की तुलना में हिन्दुओं की संख्या तेजी से घट रही है। इस बीच लगातार घुसपैठ बढ़ी है। ये घुसपैठिए बंगाल के गाँव में घुस कर अपनी पैठ जमा लेते हैं। धीरे धीरे टीएमसी के संरक्षण में पहचान पत्र प्राप्त कर लेते हैं और भारत का नागरिक बन जाते हैं। यही वजह है कि बंगाल में 2001 में मुस्लिम आबादी 25 फीसदी थी, जो 2011 में बढ़कर 27 फीसदी के पार जा चुकी थी। बंगाल की 9.5 करोड़ की आबादी में करीब 2.5 करोड़ मुस्लिम हैं। ये दर्शाता है कि घुसपैठ कितना बड़ा सिरदर्द है।

दरअसल पश्चिम बंगाल में एक घुसपैठिए एक वोटर की तरह है। बांग्ला भाषी होने की वजह से गाँव गाँव में फैले होते हैं। ये लोग पूरे बंगाल में मौजूद हैं लेकिन बांग्लादेश से सटे मालदा, मुर्शिदाबाद, उत्तर दिनाजपुर जैसे इलाकों में इनकी संख्या 50 फीसदी तक पहुँच चुकी है। इसके अलावा उत्तर 24 परगना और दक्षिण 24 परगना क्षेत्र में इसकी संख्या और ज्यादा है। मुर्शिदाबाद में बाबरी मस्जिद का शिलान्यास कर चुके पूर्व टीएमसी विधायक हुमायूँ कबीर के मुताबिक मुर्शिदाबाद में 70 फीसदी मुस्लिम आबादी है। इससे अंदाज़ लगाया जा सकता है कि बंगाल में डेमोग्राफी में कितना बदलाव आया है।

अलिम्को के सहयोग से दिव्यांगजनों को 5 जनवरी को करमपुरा और 6 जनवरी को मानांवाला में वितरित होंगे सहायक उपकरण – एस.डी.एम.

अमृतसर, 2 जनवरी (साहिल बेरी)

अलिम्को द्वारा जिला प्रशासन के सहयोग से दिव्यांगजनों और वरिष्ठ नागरिकों के कल्याण हेतु पिछले वर्ष जिले के विभिन्न स्थानों पर मेडिकल असेसमेंट कैंप लगाए गए थे। इन कैंपों के दौरान जिन दिव्यांगजनों का मेडिकल मूल्यांकन किया गया था, उन्हें अब सहायक उपकरण वितरित किए जाएंगे। इस संबंध में अधिकारियों के साथ वर्चुअल मीटिंग करते हुए एस.डी.एम. श्री अमनप्रीत सिंह ने जानकारी दी कि 5 जनवरी को सरकारी प्राथमिक स्कूल रिसोर्स सेंटर करमपुरा तथा 6 जनवरी को सरकारी सीनियर सेकेंडरी स्कूल मानांवाला में असेसमेंट कैंप धारकों को सहायक उपकरण वितरित किए जाएंगे। एस.डी.एम. ने दिव्यांगजनों से अपील की कि वे निर्धारित तिथियों पर संबंधित स्थानों पर अवश्य पहुंचें और अपने सहायक उपकरण प्राप्त करें। उन्होंने बताया कि इस कार्य के लिए विभिन्न विभागों के अधिकारियों की ड्यूटियां लगा दी गई हैं, ताकि दिव्यांगजनों को किसी प्रकार की असुविधा का सामना न करना पड़े।

दो सप्ताह का डेयरी प्रशिक्षण कोर्स, काउंसलिंग 5 जनवरी से शुरू – डिप्टी डायरेक्टर

अमृतसर, 2 जनवरी (साहिल बेरी)

कैबिनेट मंत्री, कृषि एवं पशुपालन, मत्स्य पालन और डेयरी विकास विभाग, पंजाब श्री गुरमीत सिंह खुंडियां तथा निदेशक, डेयरी विकास विभाग, पंजाब श्री कुलदीप सिंह जस्सोवाल के दिशा-निर्देशों के अनुसार श्री वरियाम सिंह, डिप्टी डायरेक्टर डेयरी विकास-कम-इंचार्ज डेयरी प्रशिक्षण एवं विस्तार केंद्र, वेरका के मार्गदर्शन में दो सप्ताह का डेयरी प्रशिक्षण कोर्स 05/01/2026 से 16/01/2026 तक डेयरी प्रशिक्षण एवं विस्तार केंद्र, वेरका में आयोजित किया जा रहा है। उन्होंने बताया कि इस प्रशिक्षण कोर्स से संबंधित काउंसलिंग 5 जनवरी 2026 को डेयरी प्रशिक्षण एवं विस्तार केंद्र, वेरका में रखी गई है। इस प्रशिक्षण के दौरान दूध से दुग्ध उत्पाद बनाने, डेयरी फार्म प्रबंधन, दुधारू पशुओं की नस्ल सुधार, संतुलित पशु आहार तथा आधुनिक तकनीकों के माध्यम से प्रशिक्षण प्रदान किया जाएगा। उन्होंने बताया कि जिला अमृतसर के इच्छुक डेयरी फार्मर इस प्रशिक्षण का लाभ उठा सकते हैं। लाभार्थियों को 2 सप्ताह (10 कार्यदिवस) का प्रशिक्षण दिया जाएगा, जिसके लिए निम्नलिखित शर्तों का पालन करना अनिवार्य है। प्रशिक्षणार्थी पंजाब का निवासी होना चाहिए। आधार कार्ड की फोटो कॉपी, एक पासपोर्ट साइज फोटो, कम से कम पांचवीं कक्षा उत्तीर्ण होने के प्रमाण पत्र की फोटो कॉपी, आयु 18 से 55 वर्ष के बीच होनी चाहिए तथा अनुसूचित जाति प्रमाण पत्र (डिजिटल) होना आवश्यक है।

पनग्रेन द्वारा जिले में अनाज भंडारण क्षमता में किया गया बड़ा इजाफा – डिप्टी कमिश्नर

1 लाख 80 हजार मीट्रिक टन अनाज भंडारण क्षमता और बढ़ाई गई

अमृतसर, 2 जनवरी (साहिल बेरी)

मुख्यमंत्री पंजाब सरदार भगवंत सिंह मान के नेतृत्व वाली पंजाब सरकार किसानों की फसलों के सुरक्षित भंडारण को सुनिश्चित करने के लिए लगातार प्रयासरत है। इसी कड़ी में पनग्रेन द्वारा जिले में अनाज भंडारण क्षमता में बड़ा इजाफा किया जा रहा है, ताकि आने वाले सीजन के दौरान किसानों को अनाज भंडारण से संबंधित किसी भी प्रकार की समस्या का सामना न करना पड़े। इस संबंध में विस्तृत जानकारी देते हुए डिप्टी कमिश्नर सरदार दलविंदरजीत सिंह ने बताया कि पनग्रेन द्वारा जिले की 7 मंडियों से संबंधित क्षेत्रों में अनाज भंडारण क्षमता बढ़ाई जा रही है। इनमें भगतांवाला मंडी में 40 हजार मीट्रिक टन, जंडियाला गुरु में 55 हजार मीट्रिक टन, छेहरटा मंडी में 35 हजार मीट्रिक टन, अजनाला मंडी में 15 हजार मीट्रिक टन, रईया मंडी में 5 हजार मीट्रिक टन, मजीठा मंडी में 10 हजार मीट्रिक टन तथा वल्ला मंडी में 20 हजार मीट्रिक टन अनाज भंडारण क्षमता का निर्माण कार्य जारी है। उन्होंने बताया कि इस प्रकार पनग्रेन द्वारा इस सीजन तक कुल 1 लाख 80 हजार मीट्रिक टन अतिरिक्त अनाज भंडारण क्षमता उपलब्ध हो जाएगी। इस अवसर पर अतिरिक्त डिप्टी कमिश्नर श्री रोहित गुप्ता ने पनग्रेन अधिकारियों को निर्देश दिए कि वे इस कार्य को शीघ्र पूरा करें, ताकि आने वाले सीजन में किसानों को किसी भी प्रकार की असुविधा न हो।

पंजाब राज्य खाद्य आयोग नववर्ष पर शुभकामनाएँ, खाद्य सुरक्षा अधिनियम के प्रभावी क्रियान्वयन हेतु निर्देश जारी

अमृतसर 2 जनवरी (साहिल बेरी)

नववर्ष के अवसर पर पंजाब राज्य खाद्य आयोग के सदस्य विजय दत्त ने जिला प्रशासन को नववर्ष की शुभकामनाएँ प्रेषित कीं तथा राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम के प्रभावी एवं ज़मीनी स्तर पर क्रियान्वयन को लेकर आवश्यक निर्देश जारी किए। विजय दत्त ने कहा कि राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम गरीब, वंचित एवं कमजोर वर्गों के लिए एक वैधानिक अधिकार है, जिसे पूरी निष्ठा के साथ लागू किया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि नववर्ष में यह सुनिश्चित करना अत्यंत आवश्यक है कि खाद्य सुरक्षा से जुड़ी योजनाओं का लाभ प्रत्येक पात्र लाभार्थी तक समयबद्ध, पारदर्शी एवं बिना किसी भेदभाव के पहुँचे।

उन्होंने स्पष्ट किया कि जिला स्तर पर ADC (Development) न केवल प्रशासनिक रूप से महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, बल्कि राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम के अंतर्गत जिला शिकायत निवारण अधिकारी (DGRO) के रूप में भी उनकी जिम्मेदारी अत्यंत अहम है। इस नाते खाद्य सुरक्षा से संबंधित शिकायतों का समय पर, निष्पक्ष एवं प्रभावी निपटारा सुनिश्चित किया जाना चाहिए। विजय दत्त ने निर्देश दिए कि: राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम के प्रावधानों का अक्षरशः एवं भावना के अनुरूप क्रियान्वयन किया जाए। पात्र लाभार्थियों की सही पहचान सुनिश्चित हो और कोई भी योग्य परिवार वंचित न रहे। DGRO के रूप में प्राप्त शिकायतों का समयबद्ध निस्तारण किया जाए। निगरानी, निरीक्षण एवं शिकायत निवारण तंत्र को और अधिक सुदृढ़ किया जाए। फील्ड स्तर पर पाई जाने वाली कमियों एवं बाधाओं का त्वरित समाधान किया जाए तथा इसकी नियमित रिपोर्टिंग आयोग को की जाए।

उन्होंने कहा कि आयोग यह अपेक्षा करता है कि जिला प्रशासन नववर्ष में सकारात्मक, परिणामोन्मुख और जनहितकारी दृष्टिकोण के साथ कार्य करेगा, जिससे समाज के गरीब एवं जरूरतमंद वर्ग को वास्तविक लाभ मिल सके। अंत में उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि आयोग और जिला प्रशासन के समन्वित प्रयासों से खाद्य एवं पोषण सुरक्षा के उद्देश्यों को और अधिक मजबूती मिलेगी तथा जनविश्वास सुदृढ़ होगा।

लांजीबेरना–कुतरा में आदिवासी किसानों के साथ अन्याय के खिलाफ उग्र जनआंदोलन, सरकार को आईना दिखाने उतरे डॉ. राजकुमार यादव

परिवहन विशेष न्यूज

सुंदरगढ़ (ओडिशा): कुतरा प्रखंड के लांजीबेरना क्षेत्र में आदिवासी समाज के किसानों के साथ हुए कथित अन्यायपूर्ण भू-अतिक्रमण, पर्यावरण विनाश और भ्रष्ट तरीकों से जमीन की खरीद के खिलाफ एक मजबूत जनआंदोलन खड़ा हो गया है। इस आंदोलन में राष्ट्रीय संयुक्त मोर्चा – ट्रक ट्रांसपोर्ट सारथी के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. राजकुमार यादव, स्थानीय आदिवासी नेता राजेश केरकेट्टा सहित बड़ी संख्या में किसान, सामाजिक कार्यकर्ता और ग्रामीण शामिल हुए। आंदोलन के दौरान सरकार और प्रशासन पर गंभीर आरोप लगाते हुए कहा गया कि आदिवासी अधिकारों, वन कानूनों और संवैधानिक प्रावधानों को दरकिनार कर सुनियोजित तरीके से जमीनें छीनी जा रही हैं। डॉ. राजकुमार यादव ने मौके पर उपस्थित किसानों को संबोधित करते हुए कहा कि यह केवल जमीन का सवाल नहीं है, बल्कि आदिवासी अस्मिता, आजीविका, संस्कृति और भविष्य का प्रश्न है। उन्होंने आरोप लगाया कि विकास के नाम पर पेड़ों की अंधाधुंध कटाई, शमशान घाटों का विनाश, फसलों की तबाही और भ्रष्टाचार की आड़ में अवैध भूमि खरीद जैसे कृत्य किए जा रहे हैं, जो सीधे-सीधे संविधान और कानून का उल्लंघन हैं।

पेड़ों की कटाई और शमशान घाटों के विनाश पर आक्रोश

आंदोलनकारियों ने बताया कि लांजीबेरना क्षेत्र में बड़े पैमाने पर हरे-भरे पेड़ों को काट दिया गया, जिससे न केवल पर्यावरणीय संतुलन बिगड़ा है, बल्कि ग्रामीणों की रोजी-रोटी पर भी गहरा असर पड़ा है। इसके साथ ही आदिवासी समाज के पारंपरिक शमशान घाटों को नष्ट किए जाने का आरोप लगाया गया, जिसे समुदाय ने अपनी धार्मिक-सांस्कृतिक आस्था पर सीधा हमला बताया।

डॉ. यादव ने कहा, "जो समाज प्रकृति को मां मानकर उसकी पूजा करता है, उसी समाज से उसकी जमीन, जंगल और जल छीना जा रहा है। यह केवल प्रशासनिक लापरवाही नहीं, बल्कि एक सुनियोजित साजिश है।"

फसलों की तबाही और अवैध जमीन खरीद के आरोप

ग्रामीण किसानों ने आरोप लगाया कि जबरन भूमि कब्जाने की प्रक्रिया में खड़ी फसलों को नष्ट किया गया, जिससे कई परिवार आर्थिक संकट में आ गए हैं। आंदोलनकारियों के अनुसार, कुछ दलालों और प्रभावशाली लोगों द्वारा भ्रष्टाचार के सहारे गलत दस्तावेजों और दबाव की राजनीति से जमीनें खरीदी जा रही हैं। कई मामलों में किसानों को सही जानकारी दिए बिना या भय दिखाकर दस्तखत कराए गए।

राजेश केरकेट्टा ने कहा कि आदिवासी समाज को न तो कानूनी सलाह दी गई और न ही ग्राम सभा की सहमति ली गई, जो कि वन अधिकार अधिनियम और पंचायती राज कानून का खुला उल्लंघन है।

सरकार को आईना दिखाते डॉ. राजकुमार यादव

डॉ. राजकुमार यादव ने सरकार को सीधे तौर पर आईना दिखाते हुए कहा कि यदि सरकार वास्तव में आदिवासी हितैषी है तो उसे तत्काल इस पूरे प्रकरण की उच्चस्तरीय, निष्पक्ष जांच करानी चाहिए। उन्होंने मांग की कि जब तक जांच पूरी न हो जाए, तब तक सभी प्रकार की भूमि खरीद और विकास गतिविधियों पर तत्काल रोक लगाई जाए।

उन्होंने चेतावनी देते हुए कहा, "यदि सरकार ने आदिवासी किसानों की आवाज नहीं सुनी, तो यह आंदोलन जिला, राज्य और फिर राष्ट्रीय स्तर तक ले जाया जाएगा। राष्ट्रीय संयुक्त मोर्चा ट्रक ट्रांसपोर्ट सारथी केवल परिवहन से जुड़ा संगठन नहीं है, बल्कि यह किसान, मजदूर और वंचित समाज की आवाज है।"

राष्ट्रीय नेताओं से संपर्क और व्यापक आंदोलन की अपील

इस विरोध प्रदर्शन के दौरान किसानों ने राष्ट्रीय स्तर के किसान और आदिवासी नेताओं से संपर्क स्थापित करने और इस जनआंदोलन में शामिल होने की अपील की। आंदोलनकारियों का कहना है कि यह लड़ाई किसी एक गांव या क्षेत्र की नहीं, बल्कि पूरे देश में आदिवासियों के साथ हो रहे अन्याय के खिलाफ है।

डॉ. यादव ने कहा कि वे इस मुद्दे को केंद्र सरकार, संबंधित मंत्रालयों और मानवाधिकार आयोग तक ले जाएंगे। उन्होंने सभी सामाजिक संगठनों, बुद्धिजीवियों और मीडिया से अपील की कि वे इस मुद्दे को गंभीरता से उठाएं और आदिवासी किसानों को न्याय दिलाने में भूमिका निभाएं।

एकजुटता और संघर्ष का संकल्प

कार्यक्रम के अंत में सभी उपस्थित किसानों और समर्थकों ने एकजुट होकर संघर्ष जारी रखने का संकल्प लिया। यह स्पष्ट संदेश दिया गया कि जब तक आदिवासी समाज को उनका हक, जमीन और सम्मान वापस नहीं मिलेगा, तब तक आंदोलन शांत नहीं होगा।

लांजीबेरना–कुतरा का यह आंदोलन अब केवल स्थानीय विरोध नहीं रह गया है, बल्कि यह न्याय, अधिकार और अस्तित्व की लड़ाई के रूप में उभर रहा है, जिसमें डॉ. राजकुमार यादव के नेतृत्व ने इसे नई दिशा और राष्ट्रीय पहचान दी है।

करमजीत सिंह रिंटू ने ग्राम पंचायत एक रूप एवेन्यू के सरपंच और सभी पंचायत सदस्यों को "आप" में करवाया शामिल

रिंटू ने ग्राम पंचायत एक रूप एवेन्यू में विकास कार्यों के कार्यवाए उद्घाटन

अमृतसर,2 जनवरी (साहिल बेरी)

इंप्रूवमेंट ट्रस्ट अमृतसर के चेयरमैन एवं उत्तरी विधानसभा क्षेत्र से आम आदमी पार्टी के इंचार्ज कर्मजीत सिंह रिंटू ने उत्तरी विधानसभा क्षेत्र में पड़ती ग्राम पंचायत एक रूप एवेन्यू के सरपंच रमणीक सिंह और सभी पंचायत सदस्य पंचायत की तरक्की के लिए आम आदमी पार्टी में शामिल हुए।करमजीत सिंह रिंटू ने आम आदमी पार्टी में शामिल होने पर सभी का स्वागत किया। उन्होंने कहा कि पंजाब सरकार की जनहितैषी नीतियों के कारण आम आदमी पार्टी के परिवार में लगातार विस्तार हो रहा है। उन्होंने कहा कि ग्राम पंचायत एक रूप एवेन्यू में रहते सभी विकास कार्यों का रिव्यू किया गया। उन्होंने पंचायत सदस्यों को हर काम को प्राथमिकता के आधार पर करने का भरोसा दिया।

करमजीत सिंह रिंटू ने ग्राम पंचायत एक रूप एवेन्यू में विकास कार्यों के उद्घाटन किए। रिंटू ने पंचायत के क्षेत्र दशमेश एवेन्यू में पार्क का नवीनीकरण करवाने का शुभारंभ किया। रिंटू ने कहा कि विकास शुरू करवा कर ग्राम पंचायत के सदस्यों को नव वर्ष का तोहफा दिया है। उन्होंने कहा कि पंचायत द्वारा जो भी विकास कार्य करवाने के लिए मांग रखी गई है, उसे हर हालत में आने वाले दिनों में पूरा करवाया जाएगा।

इस अवसर पर सरपंच रमणीक सिंह, पंच हरजीत सिंह, पंचायत सदस्य मनप्रीत सिंह, गुरदेव सिंह सुखजिंदर कौर, बलविंदर सिंह, गगन संधू ने कहा कि करमजीत सिंह रिंटू की कार्यशैली को लेकर पूरी पंचायत आम आदमी पार्टी में शामिल हुई है ।इस मौके पर बलविंदर सिंह बल्ली , नवदीप सिंह , विशाखा सिंह मौजूद थे।

स्लाइट में अमर शहीद संत हरचंद सिंह लोंगोवाल जी का जन्म दिवस पुरी श्रद्धा और उत्साह के साथ मनाया

लोंगोवाल, 2 जनवरी (जगसीर सिंह) – भारत सरकार के प्रमुख तकनीकी संस्थान स्लाइट में अमर शहीद संत हरचंद सिंह लोंगोवाल जी का 102वां जन्म दिवस पुरी श्रद्धा और उत्साह के साथ मनाया गया इस अवसर पर स्लाइट के परिसर में विशेष समारोह का आयोजन किया गया, जिसमें संस्थान के सभी कर्मचारी, स्टाफ और छात्रों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। कार्यक्रम की शुरुआत स्लाइट के निर्देशक श्री मणिकांत पासवान के मनभावन संबोधन से हुई। उन्होंने संत लोंगोवाल जी के जीवन आदर्शों, शिक्षा के प्रति समर्पण और समाज सेवा के योगदान

को याद करते हुए कहा कि उनके सिद्धांत आज भी हमें प्रेरित करते हैं। श्री पासवान ने युवाओं से अपील की कि वे संत जी के दिखाए मार्ग पर चलकर राष्ट्र निर्माण में योगदान दें।

इस समारोह में संस्थान के सभी कर्मचारी, स्टाफ सदस्यों और छात्रों ने अपने विचार व्यक्त किए। विभिन्न विभागों से प्रतिनिधियों ने कविताएं सुनाईं, भजन गाए और संत जी के जीवन पर आधारित भाषण दिए, परिसर को फूलों और रंगोली से सजाया गया था,और लंगर भी लगाया गया। पूरा वातावरण भक्ति और उत्साह से गूंज उठा। यह जन्म दिवस समारोह न केवल संत हरचंद सिंह लोंगोवाल जी को श्रद्धांजलि अर्पित करने का माध्यम बना, बल्कि स्लाइट परिवार को एकजुट करने का अवसर भी प्रदान किया। संस्थान प्रबंधन ने कहा कि यह परंपरा हर वर्ष जारी रहेगी।

महेश चंद्र सोनक होगें झारखंड के अगले चीफ जस्टिस

सुप्रीम कोर्ट कोलेजियम ने दी स्वीकृति

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड - झारखंड

रांची, बांबे हाई कोर्ट के जस्टिस महेश शरदचंद्र सोनक झारखंड हाई कोर्ट के नए चीफ जस्टिस होंगे। सुप्रीम कोर्ट कोलेजियम ने गुरुवार को उनके नाम की अनुशंसा केंद्र सरकार को भेजी है। झारखंड हाई कोर्ट के चीफ जस्टिस तरलोक सिंह चौहान आठ जनवरी को सेवानिवृत्त हो रहे हैं। उनकी सेवानिवृत्ति के बाद जस्टिस एमएस सोनक चीफ जस्टिस बनाए जाएंगे। वह बांबे हाई कोर्ट के दूसरे वरीयतम जज है।

जस्टिस सोनक को अक्तूबर 1988 में उन्हें महाराष्ट्र एवं गोवा बार काउंसिल में अधिवक्ता के रूप में नामांकित किया गया। इसके बाद उन्होंने बांबे हाई कोर्ट की पणजी पीठ में सिविल एवं संवैधानिक कानून, श्रम एवं सेवा कानून, पर्यावरण कानून, वाणिज्यिक एवं कर कानून, कंपनी कानून तथा जनहित याचिकाओं के क्षेत्र में व्यापक प्रैक्टिस की।

नववर्ष 2026 : पंजाब के लिए चेतावनी भी, अवसर भी - ओडिशा से सीखने का समय

नववर्ष केवल तिथि परिवर्तन नहीं होता, बल्कि आत्ममंथन और नई दिशा तय करने का अवसर होता है। वर्ष २०२६ की दहलीज पर खड़ा पंजाब आज ऐसे ही एक निर्णायक मोड़ पर है। कृषि और उद्यमशीलता के लिए पहचाना जाने वाला यह समृद्ध राज्य आज नशाखोरी, अपराध, युवाओं की बेरोज़गारी और विदेश पलायन जैसी गंभीर समस्याओं से जूझ रहा है। प्रश्न यह नहीं है कि समस्या कितनी बड़ी है, बल्कि यह है कि समाधान की दिशा क्या हो।

आर्थिक दृष्टि से पंजाब अभी भी एक महत्वपूर्ण राज्य है। वर्ष २०२४-२५ में पंजाब का सकल राज्य घरेलू उत्पाद (जी एस डी पी) लगभग 8 लाख करोड़ रहा। राज्य की प्रति व्यक्ति आय २.२५ लाख के आसपास है, जो राष्ट्रीय औसत से अधिक है। इसके बावजूद, आर्थिक वृद्धि की रफ्तार अपेक्षाकृत धीमी है। सबसे चिंताजनक तथ्य यह है कि राज्य में युवा बेरोज़गारी दर लगभग 18 प्रतिशत है, जो राष्ट्रीय औसत से कहीं अधिक है। यही वह वर्ग है जो आज सबसे अधिक नशे, अपराध और अवैध विदेश पलायन के जाल में फँस रहा है।

पंजाब की कुल जनसंख्या का बड़ा हिस्सा युवा वर्ग से संबंधित है, किंतु पर्याप्त रोजगार और उद्यम अवसरों के अभाव में यह जनसांख्यिकीय लाभ, धीरे-धीरे जनसांख्यिकीय बोझ में बदलता जा रहा है। तालिया आंकड़े बताते हैं कि देश में जब्त की गई कुल हेरोइन का लगभग 44 प्रतिशत हिस्सा पंजाब से संबंधित है, जबकि राज्य की आबादी देश की कुल आबादी का मात्र २.३ प्रतिशत है। यह स्थिति केवल कानून-व्यवस्था की नहीं, बल्कि सामाजिक-आर्थिक विफलता की ओर भी संकेत करती है।

ऐसे समय में ओडिशा का अनुभव पंजाब के लिए एक महत्वपूर्ण सीख प्रस्तुत करता है। कभी पिछड़े राज्यों में गिना जाने वाला ओडिशा आज सुनियोजित औद्योगिक नीति, निवेश-अनुकूल वातावरण और उद्यमिता-केंद्रित दृष्टिकोण के कारण नई पहचान बना रहा है। वर्ष २०२४-२५ में ओडिशा का जी एस डी पी

लगभग 9.5 लाख करोड़ तक पहुँच गया है और राज्य की विकास दर राष्ट्रीय औसत से बेहतर रही है। प्रति व्यक्ति आय भी बढ़कर लगभग 1.8 लाख हो चुकी है। ओडिशा की सफलता के पीछे सबसे बड़ा कारण युवाओं को उद्यमिता से जोड़ने की ठोस रणनीति है। जनवरी २०२५ तक राज्य में लगभग 18.7 लाख एमएसएमई पंजीकृत हो चुके हैं। इसके अतिरिक्त, 4,500 से अधिक स्टार्टअप्स और 40 इनक्यूबेशन केंद्र सक्रिय हैं, जो युवाओं को नौकरी खोजने वाला नहीं, बल्कि नौकरी देने वाला बनने के लिए प्रेरित कर रहे हैं। उत्कर्ष ओडिशा – मेक इन ओडिशा कॉन्क्लेव के दौरान 16.73 लाख करोड़ से अधिक के निवेश प्रस्तावों ने यह सिद्ध कर दिया कि स्पष्ट नीति और मजबूत प्रशासन से बड़े पैमाने पर रोजगार सृजन संभव है। पंजाब के लिए संदेश स्पष्ट है। कृषि आधारित समृद्धि को उद्योग, एमएसएमई, स्टार्टअप, खाद्य प्रसंस्करण, लॉजिस्टिक्स, खेल उद्योग और सेवा क्षेत्र से जोड़ना समय की आवश्यकता है। युवाओं को उद्यमिता की ओर मोड़ना केवल आर्थिक नीति नहीं, बल्कि सामाजिक सुधार की प्रक्रिया है। जब युवा आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनता है, तो वह नशे और अपराध से स्वतः दूर होता है। इस प्रक्रिया में सशक्त और निष्पक्ष पुलिसिंग की भूमिका भी उतनी ही महत्वपूर्ण है। मजबूत कानून-व्यवस्था न केवल अपराध को नियंत्रित करती है, बल्कि निवेशकों और नए उद्यमियों में विश्वास भी पैदा करती है। जहां सुरक्षा और स्थिरता होती है, वहीं उद्योग और रोजगार पनपते हैं। नववर्ष २०२६ पर पंजाब को यह संकल्प लेना होगा कि वह अपने युवाओं को विदेश जाने के लिए मजबूर नहीं करेगा, बल्कि अपने ही राज्य में सपने साकार करने का अवसर देगा। शिक्षा में उद्यमिता, स्थानीय इनक्यूबेशन केंद्र, आसान ऋण व्यवस्था, मेंटरशिप और उद्योग-शैक्षणिक सहयोग—ये सभी कदम मिलकर पंजाब को पुनः प्रगति के पथ पर ला सकते हैं। ओडिशा ने यह सिद्ध कर दिया है कि सही दिशा, ठोस नीति और राजनीतिक इच्छाशक्ति से आर्थिक ही नहीं, सामाजिक परिवर्तन भी संभव है। यदि पंजाब इस अनुभव से सीख लेता है, तो आने वाला दशक नशा, अपराध और पलायन का नहीं, बल्कि उद्यमिता, रोजगार और नवपुनर्जागरण का दशक बन सकता है।

डॉ .तपन कुमार साहु
प्रिंसिपल, एस डी कॉलेज ऑफ़ एजुकेशन

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023